सफ़रराजस्थान



जिसमें राजपूताने के हालकी और पिछली तवारीख़की और इन्तज़ामीहालत बहुत सफ़ाईकेसाथ दिखाईगईहै

और

उस केइन्तज़ामों कीदुरुस्तीकी बाबत रायें और तजवीजेंबताई गईहैं

विद्याभूषणप्रेस

मुरादाबादमें

छपी

सम्वत १९४९

1892

मुंशी देवीप्रसाद कायस्थ, जोधपुर

जन्तरी सन १८९२	मारवाड़का नकशा

१ जंत्री व पंचांग सन १८९२ई.
२ ग्रहपत्रा
३ जन्मपत्री देखनेका कायदा
४ सिविल लिस्ट मारवाड
५ जोधपुर रेलवेका टाइमटेबिल मय किराया व वक्त
६ मियाद समाअत मुकद्दमात दीवानी राज मारवाड़.
७ नकशा रसूम दीवानी व इस्टाम्प राज मारवाड.
८ नकसा इस्टाम्प बराय तमसुकात व रहननामे लोगला दाव लिखत इजारा व हिबानामा यानी बखशिशनामा
९ नकशा नम्बर २ इस्टाम्प फुटकर दस्तावेजोंका
१० नकशा नम्बर ४ इस्टाम्प आबकारी
११ नकशा तातीलात राज मारवाड.
१२ मारवाड़की ख्यात यानी तवारीख चूंडाजीसे सातलजी तक
१३ मरदुमशुमारी राज मारवाड़के नकशे
१४ मारवाड़के सायरका महसूल लेनेकी फहरिस्त

मारवाड़का नकशा

जो कि अबतक मारवाड़का नकशा नहीं छपा था और लोगोंको उसकी बड़ी जरूरत थी इसलिये यह नकशा तैयार करके उम्दा कागज पर छापा गया है की० ।)

मारवाड़का भूगोल.

जिनको घर बैठे मारवाड़की सैर करनी हो वे जरूर भूगोलको मंगवाकर देखें और टाइपके हरफोंमें छापी गई है कीमत इसकी ।) है और जो नकशेके साथ लेंगे तो सिर्फ ।) में दोनों मिल सकेगा -

इन्साफ संग्रह

इसमें राजों और बादशाहोंके अच्छे २ इन्साफ तवारीखकी किताबोंमेंसे ढूंढकर लिखे गये हैं कीमत जिल्द बंधी हुई किताबकी ।=) और डाकव्यय ⌐)

विद्यार्थी विनोद

इसमें विद्यार्थियोंके इल्म और अकल बढानेके वास्ते अनोखी २ बातें चोज और सभा चातुरीकी लिखी गई हैं कीमत ।=) और डाकव्यय ⌐)॥ है -

मारवाड़के कानून

फौजदारी ।) दीवानी ।) थानेदारी ।) अख्तियारात जागीरदारान ।) जेलखाना ।=) फोतेदारोंका ।) ठगी डकैतीके बंदोबस्तका ।) फौजका ।) खजानेके बंदोबस्तका ।)

मारवाड़की रपोटें

१ रपोट सालतमाम सन् १८८३
व ८४ जिसमे मारवाड़ का सारा
हाल दरज है और जिसको देख
कर मालूम होता कि फ़ आदमी बहुत
जल्दी मारवाड़ का काम क
रने के लायक होजाता है की
मत ५) डाक व्यय ॥)

२ सन १८८४-८५ की रपोट
कीमत १) डाकव्यय ≡)

प्रसिद्ध चित्रावली

यह पुस्तक महीने के महीने
३२ पेज छपता है इसमें मशाहूर
२ राजों और बादशाहों के इ
तिहास तसवीरों समेत छापे
जाते हैं और हर एक के पन्नों का
अंक अलग २ रहता है कि जि
ससे न्यारी २ किताब होके मुल
क के राजों और बादशाहों की
बन सके अबतक इसमें इतना
हाल छप चुका है -

१ बाबर हुमायूं और अकबर का
२ दिल्ली के बादशाह शेरशा
ह सूर का हाल और तसवीर
३ ईरान के बादशाह तुहमास्प
का हाल और तसवीर।
४ महाराणा संग्रामसिंघ रत
नसिंघ, विक्रमाजीत बनबीर
उदयसिंघ -
५ जयपुर के राजा पृथ्वीराज
पूरणमल भीम रतनसिंघ आ
सकरण राजसिंघ भारमल भ
गवंतदास सूरसिंघ
६ बीकानेर के राव बीकाजी
नराजी लूणकरणजी जैतसी
कल्याणमल का हाल, तसवीर
७ राजा बीरबल का हाल और
तसवीर।
८ नवाब खानखाना
कीमत इस किताब की ३)
और ३) भी हैं और अबतक १६
किताबें छप चुकी हैं -

मिल्ली जंतरीयां जिनमें जंत

री सन ९२ के मुआफ़िक उमदा
उमदा बातें हैं

१ जंतरी सन १८८८-८९
२ " " " ९०
३ " " " ९१
कीमत हरेक की ।)

यह अजीब व गरीब ख़्वाब यानी सपने का मज़मून जो सो
ये हुये दिलवालों के जगाने के लिये एक चलता हुआ चुट
कला है एक दिन हमारे एक खुश तक़रीर दोस्त ने ता
बीर (फल) पूछने के वास्ते एक ऐसे जलसे में कि जहां हरेक
इल्म और हरेक हुनर के जानने वाले आदमी मौजूद थे ब
यान किया था उन लोगों ने उस को तो यह कहकर कि इस
सपने से तुमको फायदा पहुंचने के सिवाय उस मुल्क का
भी भला होगा कि जिस पर इसका असर पड़ता है रुख
सत कर दिया और मुझसे फरमाया कि तू इस सपने को
लिखकर एक किताब बनाले कि इस से लोगों के बड़े २
मतलब निकलेंगे और यह तवारीख और मुल्की बंदोब
स्त के बाब में एक उमदा हिदायत होजावेगी मुझको अ
गरचे इतनी लयाक़त न थी कि मैं ऐसे बारीक मजमून
और नाज़ुक मानजे पर किताब लिखता मगर परमेश्वर की
मदद और उन बुज़ुर्गों की मेहरबानी से यह तमाम दिल पसंद
किस्सा जैसा कि कहने वाले की जबान से सुना था अपनी ज
बान में लिख लिया पर यह बात ज़ाहिर है कि जो तासीर औ
र ताक़त किसी एक शीरीं जबान रौशन बयान शख़्स की
तकरीर में होती है वह तहरीर में नहीं आ सकती तो भी ख़याल
कहो सकता उस जोश और ज़ोर को कि जो तकरीर के वक्त
कहने वाले के बयान में था और जिसने तमाम मजलिस
को दंग कर दिया था हाथ से न जाने दिया चुनांचे तैयार होजा
ने के पीछे जब फिर उसी मजलिस में कहने वाले ने सुना

सो पसंद किया और सबने शाबाशी दी फ़कत मैं पढ़नेवालों से मु-
तल्लुक़ के धन्यवाद देने और समझदारों से इस किस्से पर राय औ
र विसु लिखने का उम्मेदवार हूं फ़कत: ता॰ १२ जोलाई सं॰ १९०७

अफ़साने के लिखने वाला इस तरह कहता है:-

थोड़ा अरसा हुआ कि मैं एक रात बहुत फ़राग़त और आराम से बैठा हुआ तवारीख की किताबों को देख रहा था और दिल में यह कहता था कि जब यह पंद्रा हो जावेगा तो मामूल के मुआफ़िक निस्फ़ शब तक हुनर यानी त-ज़ुर्बा लिखी किताब को देखूंगा और कई तारीख़ बातें लाइब्रेरी जो आजकल नई तालीम में आई हैं वे उसके हा-शिये में लिखूंगा और फिर जब उससे फ़ुरसत पाऊंगा और दूसरा घंटा बजेगा तो अखबार को खोलूंगा और घंटे भर तक उसको पढ़कर अगले घंटे में थकावट दूर करने और दिल बहलाने के वास्ते अपनी बनाई हुई किताब "खुश-रंग कहानी" की सैर करूंगा जिसमें हंसी दिल्लगी की बातें चुहल और मज़ाक की चीज़ें शायरों के फ़िलबदीहे (१) ज़रीफ़ों के लतीफ़े हकीमों के कौल आलिमों के कलाम ज़ाहिलों के सवाल अकलमंदों के जवाब बुज़ुर्गों के तजरुबे पंडितों के बचन और बिहारी लाल सतसई के उमदः दोहे कालिदास के अनोखे श्लोक तुलसीदास के भजन सूरदास के बिष्णुपद अकबर और बीरबल के चटकले चुटकुले बहादरों के साके अमीरों की सरदारी और

(१) फ़िलबदीहा तुरत शेर कह देने को कहते हैं - यानी [illegible]

तवारीख़ों के ज़िक्र बादशाहों के अदल और इन्साफ़ की नक़
लें दुनिया की अजीब ग़रीब चीजें और उनके सिवाय बेस
दबातें कि जो आदमी की अक़ल और समझ को जिया
दा करती हैं बहुत सी किताबों से चुनकर लिखी हैं इसलिये जब
११ बज जायेंगे तो कुरसी से उठकर सोने के कमरे में चला
जाऊंगा और कुछ देर अपने दिल में अच्छे बुरे कामों का हिसा
ब करके सो रहूंगा मगर अभी तवारीख़ का घंटा पूरा न हुआ
था कि आदमी ने बाहर से आकर कहा कि आज के आये हुये
ताज़े अख़बार जो मैं मेज़ पर रख गया था और वहां से ज़ना
ने में मंगवा लिये गये थे अब हाज़िर हैं हुक्म हो तो अभी पेश क
रूं या फ़जर को हवाख़ोरी के वक़्त लाऊं मैंने और शौक़ से
वे अख़बार उसी वक़्त ले लिये उस वक़्त वह घंटा उनके
पढ़ने का न था तो भी बेसबरी से पढ़ने लगा और यहां
तक पढ़ लिया कि वह मनसूबा जो दिल में बांधा था और वे
काम कि जिनके वक़्त ठहर चुके थे सबको भूल गया और ११ ब
ज गये उस वक़्त नींद का ऐसा झोंका आया कि वहीं मेज़ के पा
स जो शतरंज खेलने की मसहरी बिछी थी उस पर लेट गया
लेटते ही आंख लग गई और नींद ने मेरे और दुनिया के बीच
में एक बड़ा भारी परदा डाल दिया जिसको ग़फ़लत का पर
दा कहना चाहिये इतने में क्या देखता हूं कि न वह बाग़ है और
न वह मकान है एक डरावने जंगल में पड़ा हूं तले ज़मीन ऊ
पर आसमान है नज़र जिधर जाती है कोसों तक मैदान है चारों
तरफ़ अंधेरे का काला काला परदा पड़ा हुआ है हैरान हूं कि

अकल ने यह बातें सुन कर कहा कि जो होना था वह तो हो गया तुम ईश्वर का नाम लो और जिधर तुम्हारा मन चले उधर चलो कि इस सुनसान जंगल से निकल कर किसी आबादी में तो पहुंचें मैंने कहा चलूं तो किधर चलूं अंधेरी रात है रस्ता मालूम नहीं उस से कभी अंधेरे उजाले में बाहर नहीं निकला था बगैर मशाल और रोशनी के चांदनी पर भी कदम नहीं रखा था यहां जंगल बयाबान है कोसों तक वैराना है और वैराने में सौ तरह की आफतें होती हैं शेर और चीते ऐसे ही कामों में रहते हैं भूत और प्रेत का वासा इसी किस्म के जंगलों में होता है काली बलायें जो मुसाफिरों को बद हवास किया करती हैं इन्हीं बयाबानों में फिरा करती हैं —

अकल ने जवाब दिया कि बे मौत तो कोई नहीं मरता शेर और चीते भी जब ही मारते हैं कि जब परमात्मा का हुक्म होता है नहीं तो किसी का मकदूर नहीं कि किसी को सतावे और भूत प्रेत वगैरः खयाली खलकत का खौफ करना निरी नादानी और बेवकूफी है —

अभी ये बातें हो रही थी कि दूर से हवा के झोंके में आग की सी एक चमक दिखलाई दी अकल ने कहा कि जहां यह आग चमकती है वहां चलो कुछ न कुछ आबादी होगी मैंने कहा कि इस जंगल बयाबान में आबादी कहां से आई कहीं कोई कौतुक भूत प्रेतों का न हो —

अकल ने झुंझला कर कहा कि तुमने फिर खयाली खलकत का नाम लिया और औरतों की तरह हिम्मत हारने लगे

औ सेमदे हैं कि फर्ज़ी बला ओं से डरते हैं। जिनका ज़ाहिर में कुछ भी वज्जूद नहीं है और न आज तक उनको किसी ने आंखों से देखा है —

ग़रज़ कि मैं इस कलके कहने से पतंगे की तरह रोशनी की तरफ रवाने हुआ अगरचे अंधेरे की दहशत ने जो काले नाग की तरह एक काली बला बनकर डराता था होश के चिराग गुल है गये थे और खयाली ख़लकत के खौफ की ऐसी कुछ हवा बंध गई थी कि बदन का साया भी उस अंधेरी रात में आंखों से छुप गया था मगर मैं अक़्ल के धमकाने से लाचार और उम्मेद के दिल बढ़ाने से होशियार होकर उस जंगल में कि जो समंदर सा कोसों तक फैला हुआ था हात पांव मारता था और बार बार यह शेर पढ़ता था —

अंधेरी रात है लहरों का डर है — और एक बड़ा भंवर तीरों में पड़ा है —
भला हैं क्या हमारा हाल देखे लोग क्या — कि जो दरया से उतर कर किनारे पर पहुंच गये हैं —

उस वक्त रोशनी की हालत ने अकल मेरी अगवाई और आवाज़ जो दिल के धड़कने से पैदा होती थी वही गोया मेरे पांव की आहट थी। रोशनी का चिलका नज़र तो बहुत ही दूरी पर आता था मगर मैं इस तेज़ी से लपका हुआ उस तक जा पहुंचा कि गोया ज़मीन और आसमान के मालिक ने मेरी बेबसी और थकावट पर रहम करके ज़मीन की डोरी खेंच दी या मेरी चाल में बिजली और हवा की तेज़ी रखदी खैर कुछ ही हो जब मैं पास पहुंचा तो रोशनी की यह कसरत देखी कि चांद और सूरज को शरमाती थी ज़मीन पर दूर तक ऐसा छिड़काव लगा हुआ था कि उस कज़ल

जंगल में कलकत्ते की बंडी सड़क का मज़ा आता था डेरे तंबू दूर तक बराबर खड़े थे उनमें मखमली फरश बिछे थे और बानाती परदे पड़े थे हवा में इतनी खुशबू बसी हुई थी कि मानो खुशबू की हवा बंधी हुई थी मैंने हर तरफ़ झांक ताक कर देखा मगर आदमी का निशान नाम को भी न पाया उस वक्त तो दिल को बड़ा ही खटका हुआ कि यह क्या तिलिस्मात है कहीं वही तो नहीं है कि जिस को मुसलमान शाह दौला की मजलिस कहते हैं हिन्दु जुझारों का दरबार मानते हैं या परयों की हाज़िरात है या पीरों की करामात है या किसीने मसान जगाया है या कोई जिन्नात का बादशाह यहां आया है या जंगली भूतों की कारस्तानी है या छलावों की महमानी है गरज़ कुछ ही हो और अगर इनमें कुछ भी नहीं तो न सही मगर यह तमाशा फिर भी इल्लत से खाली नहीं है मैं तो पहिले ही कहता था कि ऐसे उजाड़ में आबादी कहां से आई मगर अकल ने न माना और खह अगरचे अंधेरे में से निकाल कर उजाले में लाई लेकिन ऐसे डरा[illegible]ने वाले उजाले से तो वही अंधेरा अच्छा था कि जिसमें ऐसे कौतुक तो नज़र नहीं आते थे –

अकल ने कहा कि फिर तू बेहूदा बातें बकने लगा और फिर ख्याली खलकत का जिक्र लाया इतना नहीं जानता कि जो चीज़ खुद ही वजूद नहीं रखती वह डेरे और खेमे कहां से पैदा कर सक्ती है तदबीर सा खड़ा क्या है हवा की तरह इधर उधर चल फिर के देख शायद किसी –

शख्स के मिलजाने से तेरी यह है रानी दूर हो जावेगी मैंने यह सुनकर दिल मजबूत किया और एक बड़े डेरे की तरफ चलाक नीब पहुंच कर एक शख्स को देखा जो बड़े घेर का जामा पहने और सुन्हरी चोब हाथमें लिये हुये खड़ा था मैंने उस को देखकर शुकर किया कि आदमी की सूरत तो नज़र आई अब इससे सब हाल खुल जावेगा यह सोच कर मैं खुश खुश उसकी तरफ चलाहुआ मगर उसने तो मुझको अपनी तरफ आते हुये देखकर कुत्ते की सी हंपाली और कहा क्या कुदे नालरा श्रहे जो बे इजे ताके चला आता है मैं यह कड़े बोल सुनकर वहीं ठहर गया और १ शेर पढ़ा जिसका मतलब यह है कि

। जो कुत्ता होता है वह चोब यानी लकड़ी से डरता है
। मगर वह सख्स कुत्ते नहीं डरते जो कि खुद चोब रखते हैं -

इसपर वह फिर कड़क कर बोला कि चोबदार २ क्या करता है चोबदार तो हमको खुदा ने बनाया है मैंने बड़ी नरमी से जवाब दिया कि साहिब मैं तो यह कहता हूं कि चोबदार लोग बड़े बेलाग होते हैं जो अमीर और गरीब को एक ही लकड़ी से हंकते हैं इस बात से वह कुछ नरम हुआ और कहा कि तुम जहां से आये हो उलटे पैरों फिर जाओ नहीं तो कैद किये जाओगे और तुमको पहरे वालों ने नहीं पकड़ा जो इस कोठ के गिरदावे में ३६० बैठे हुये हैं -

मैंने कहा जनाब मैंने क्या कसूर किया है कि मुझको पहरेवाले पकड़ लेते या अब तुम कैद किया चाहते हो उसने कहा तुमने कसूर तो कुछ नहीं किया मगर हमको राजाओं का

हुक्म है कि किसी आदमी को यहां मत आने दो और इसी एह-तियात से उन्होंने एक खास मसलहत के लिये इस वक़्त में जमा होने का बंदोबस्त किया है।

मैंने कहा तुम किसी के कहने से मत रहना मैं सरकार अं-गरेज़ की अमलदारी का रहने वाला हूं किसी राजा का य-ह मक़दूर नहीं है कि मेरी तरफ़ तेज़ नज़र से देख सके यह सुनते ही एक राजपूत तलवार लिये हुए बाहर निकल आ-या पहिले इसके कि वह कोई हरफ़ ज़बान से निकाले मैंने बहुत अदब से झुक कर सलाम किया और मिज़ाज पुर्सी के बाद पूछा कि आप कौन से राजपूत हैं उसने गुस्से से क-हा कि हाड़ा हूं मैंने कहा क्या खूब हाड़ों से तो बहादुरी कौ-न हार गई है और हाड़े अबतक कहीं लड़ाई में नहीं हारे हैं मुसलमानों के ज़माने में तुमही लोग मज़हब के पक्के और तलवार के सच्चे रहे हो और चौहानों का नाम तुम्हारी ही तलवार से रोशन हुआ है।

यह फ़िक़रा सुनकर वह इतना खुश हुआ कि जामे में फू-ला न समाया और मुझसे पूछने लगा कि तुमने यह हाल क-हां से मालूम किया मैंने कहा मैं तुम्हारे खानदान की तवारी-ख खूब जानता हूं अगर मंज़ूर हो तो एक दिन पसंद खुला-सा उसका आपको सुनाऊं हाड़ा राजपूत ने कहा कि मुझ-को पुराने तवारीखी हालात सुनने का बहुत ही शौक़ है मग-र अफ़सोस है कि इस वक़्त फ़ुरसत नहीं एक बड़ा काम दर-पेश हो रहा है ये डेरे खेमे जो दूर तक क़तार दर क़तार देखते

हो राजपूतानेके राजा ओंके हैं और वे थोड़ी देरके बाद एक
खास कामके सलाह करनेके वास्ते इस मैदानमें जमा
होंगे जो कि भेदका छुपाना हर एक आदमीको ज़रूर है औ
र खास करके राजाओंको इस लिये उन्होंने इस वेराने
जंगलको ऐसी ज़रूरी बातचीत करनेके लिये पसंद किया है
कि कोई गैर आदमी उससे वाकिफ़ न होवे और हम लोगों
को हुकम है कि दूर २ तक पहरे और चौकियां बैठादो कि गैर
लोग आने न पावें हुक्मके बमूजिब किया कि इतने पहरेवाले
चौकीदारोंसे ख़ाक डालकर ठेट तक चले आये और मैंर दि
लको अपनी नेक मिज़ाजी और मीठी बातोंके जालमें फं
सालिया अब मैं इस फ़िकरमें हूं कि तुमको कहां छुपा ऊं
सिपाह पहरेदार दौरा करते हैं कि कहीं कोई पहरेवाला गफलत करे
मैंने कहा मैं जानता हूं तौ राजपूतोंकी मोहब्बत और इख़
लासकी तारीफ़ें मुद्दतसे सुना करता था मगर आंखोंसे
देखनेका काम आजही पड़ा है अब तुम मेरे हकमें अपनी
मरजाद और कायदेके माफ़िक जो कुछ मुनासिब समझो वह क
रो और ख़ातिर जमा रक्खो कि मैं भी कौमसे अशरफ़ हूं
और ऐसा आदमी नहीं कि कोई फ़िसाद पैदा करूं अगर तुम
मुझको अपने राजाओंके दरबारमें भी लेचलोगे तो बहुत खुरसं
द होओगे क्योंकि मैं उनके मिज़ाज और ख़यालातके मा
फ़िक हर एक मुकद्दमेमें अच्छी तरहसे बातचीत कर सकता
हूं और बड़ेसे बड़े मामलेमें उनके फ़ायदेकी राय और स
लाह दे सकता हूं किस लिये कि मैंने बरसों तक राजपूतोंके

हरएक खानदान की तवारीख़ देखकर उनके चालचलन रस्म रिवाज आदत और मिज़ाज से एक उम्दा वाक़फ़ी ही नहीं हासिल की है बल्कि उनकी रियासतों और मुल्कों के इन्त-ज़ाम करने की पूरी लियाक़त पैदा करली है ॥

राजकुमार ने कहा कि बड़ी मुश्किल है कि वहां तो यह हुक्म लगा हुआ है कि कोई इस भेद से ख़बरदार न होवे और यहां यह सूरत है कि मुल्क मुल्क के आदमी आवेंगे मुख़ालिफ़ तबीयतों के लोग जमा होंगे मैं किसी रियासत का मुसाहिब नहीं कामदार नहीं कामदार का भाई भतीजा नहीं कि दस बीस आदमी मेरा कहना मानें और जो बात ख़िलाफ़ ठहराव के कर बैठूं उस से बरी होने तक मेरा साथ देवें और आपकी बातों में ख़ुदा जाने क्या जादू है क्या तासीर है कि मेरे दिल को छीन लिया है जो जी चाहता है कि अगर जान भी जाती रहे तो बला से मगर आपको तो जहां तक मुमकिन है गैरों की आंख से छुपा कर रक्खूं अब यह मेरा सिर आपके लिये हाज़िर है आप मेरे पीछे २ चले आइये लो आओ आपको किसी बचाव की जगह में बैठा आऊं मगर आप यह इक़रार करलीजिये कि जब तक मैं न कहूं वहां से इधर उधर न जाना मैंने क़बूल किया और उसके पीछे २ चलने लगा उसने आगा पीछा सोच कर मुझको बड़े डेरे के पीछे एक ऐसे कोने में खड़ा कर दिया कि जहां आने जाने का रास्ता नहीं था और यह भी समझा दिया कि जो कोई आदमी यहां आ निकले और तुम से पूछे कि को

नहे तो कह देना कि मैं हाडा राजपूत का फराशहूं मैंने क
हा कि कहीं ऐसा न हो कि फराशी कबूल करके मेरवचूरवा
ऊं और चोवसे बांधा जाऊं क्यों कि मुझको तो रस्सा रवें-
चना भी याद नहीं है—

राजपूतने कहा यह खातिर जमा रक्खो कि हमारी र
यासतों में बड़े २ इल्मवालों का भी इमतहान नहीं लिया
जाता है फराशी की बातें पूछने कोन बैठेगा यह कह कर व
हतो चला गया और मैं फराशबन कर डेरे के पीछे मिस्ल
चोबके चुपरवड़ा हो रहा कुछ देर बाद एक बड़ा शोर हुआ-
और सेकड़ों आदमी इधर उधरसे दोड़ते हुवे नज़र आये-
और नकीबों चोबदारों की आवाज जो रवमा २ पुकारते थे ह
रतरफ़ से सुन्नेमें आई मैंने जाना कि अब राजों का आना
शुरु हुआ और वे इसी बड़े डेरे में जो सब तरह की सजावटों से
सजाहुआ है जमा होंगे मुझको मेरे दोस्त ने खड़ा तो अच्छी
जगह किया और न होगा तो उनकी बातें तो सुनूंगा कि दे
रवें क्या क्या तजवीजें करते हैं और कोनसी खास २ बातें पेश
होती हैं उस वक्त कभी कभी यह रवयाल भी दिलमें गुज़र
ता था कि अगर आज को मैं किसी रयासत में कुछ भी त
अल्लुक रखता होता तो जरूर अपने रईस को राजी करके उस
के साथ इस खास इजलास में दाखिल हो जाता और जो जो
तकरीरें और सलाहैं कि इस आली शान और काबिल अद
बजलसे के मुफ़ीद मतलब समझता सब राजों के हजूर में
खैरख्वाही के तौर पर बयान करता और उनकी साबूती में-

ऐसी रस्में आफ़ती और नफ़रती दलीलें जो वाला दिल जरीन
में से और भी उनको तोड़ नहीं सकता मगर जब ऐसे में कैफ़
रस्म किया जावे कि सिर्फ़ जान ही किसी तजवीज़ से ब
चजावे तो बहुत गनीमत है मैं दिल में यह बातें कर रहा
था कि मेरा दोस्त राजपूत जिसके ज़िम्मे उस डेरे की सं
भालनथी रोज़ हुआ आया और कहने लगा खबरदार अ
पनी जगह होशयारी से खड़ा रहना मैं राणाजी की खब
र लेने को जाता हूं क्यों कि जयपुर, जोधपुर, कोटा, बूंदी,
और टोंक वगैर के रईस तो आकर अपने २ डेरों में दा
खिल होगये और उनकी तरफ़ से अभी तक कोई चोब
दार भी खबर लेने को नहीं आया है मैंने पूछा क्यों साहिब
राणाजी के सिवाय और भी कोई राजा और रईस आनेवा
ले हैं उसने कहा कि हां किशनगढ, अलवर, बीकानेर, सिरो
ही, करोली, जेसलमेर, शाहपुरा, देवलिया, प्रतापगढ़, ता
लवाड़ा, डूंगरपुर वगैरह और राजा भी आवेंगे मगर इनस
बसे राणाजी का आना मुख्य है क्यों कि वे हिन्दूपति बाद
शाह और सब राजों के सिरताज हैं मैंने कहा कि ठाकुर
साहब जिन राजों का तुमने नाम लिया इनमें बाज़े तो ऐ
से हैं कि उनके पीढ़ियों से दुशमनी चली आती है और य
ह हिसाब किताब है कि उनके बुज़ुर्गों ने हमारे इतने बुज़ु
र्गों को मारा है जिसमें इतनों का तो बदला आगया और इ
तना और लेना बाकी है वे लोग क्योंकर इस डेरे में जमा हों
गे जैसे राणाजी कहते हैं कि राणा अरसीजी का खून बूंदी

वालों के लेते हैं और जयपुर के महाराजा को हर रोज़ याद दिलाई जाती है कि भटवाड़े की लड़ाई याद रहे जिसमें कोटे वालों ने जयपुर की फ़ौज को एक बहुत बड़ी शिकस्त दी थी॥

उसने जवाब दिया कि राजपूतों को ऐसे ही खयालात ने तो तरक्की से रोक रक्खा है नहीं तो इस ज़माने में हर एक कौम मिल के अपने २ तौर पर तरक्की और दुरुस्ती पैदा करती है यह नहीं करते मगर अब बड़ी खुशी की बात है कि कुछ दिनों से अच्छी तरह से मिलाप हो गया है और जो जो पिछले और झगड़े आपस के थे उनके छोड़ देने पर यह आमादह हुआ है और इस बात की सलाह के लिये इतनी बड़ी कोशिश हो रही है यह सब की भलाई और बहतरी की बात है॥

मैंने कहा भला साहब आपने जो मुझ गरीब मुसाफ़िर के ऊपर इतनी इनायत और मेहरबानी की है कि जिसका शुक्रिया उम्र भर मुझसे अदा न होगा तो अब जरा यह भी फरमाइये कि ऐसी क्या खास और जरूरी मोहम दरपेश हुई है कि जिसके लिये हर एक रईस ने खुद आने की तकलीफ़ गवारा फ़रमाई है उसने कहा कि आजकल रयासतों की अब्तरी और बेबंदोबस्ती इतनी बढ़ गई है कि अंगरेजी सरकार को उसकी दुरुस्ती और रईसों की फ़ेमायश में दिक्कत उठानी पड़ती है इसलिये रईसों ने रयासतों के बंदोबस्त की सलाह मशवरे के वास्ते एक आम जलसे में शरीक होना मंजूर किया है सो आज जमा होंगे और बाकी अहवाल फिर कहूंगा॥

यह कहकर वह तो चला गया और मैं फिर दिल में उधेड़बुन करने लगा कि ऐसी क्या तजवीज़ है कि जिसके ज़रिये से मैं भी इस बड़े जलसे में पहुंच कर लियाक़त ज़ाहिर करूं दरबार से पहिले मेरा दोस्त हाड़ा राजपूत जो फिर यहां आवेगा तो ज़रूर इस मुकद्दमे में उससे कहना करूंगा

इतने में फिर एक शोर उठा और लोग पुकारने लगे कि वह हिन्दुओं का सूरज आया वह हिन्दूपति बादशाह आया - वह राजपूतों के सिर का सेहरा आया हरकारे इधर उधर ख़बर देने को दौड़ने लगे नकीब ढलैत और कड़केतों के शोर से कान पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं देती थी रोशनी का यह आलम था कि बूंटी २ उस जंगल की जगमगा रही थी हवा के झोंकों में तरह तरह की खुशबूएं चली आती थीं नक्कारों की धीमी आवाज़ और शहनाई की सुहानी सुरावट और पिछली रात की ठंडी हवा दिल को ऐसी खुशी बख्शती थी कि कहने में नहीं आती वे सब राजे जो हमारे दोस्त राजपूत के जाने के पहिले और पीछे आचुके थे घोड़ों पर सवार होकर राणाजी की पेशवाई को गये और उनके साथ उसी आलीशान डेरे में आये कि जिसके पीछे साए की तरह मैं खड़ा था राणाजी के बैठते ही सब रईस अपनी २ जगह बैठ गये उनमें महाराज साहब जयपुर राणाजी के दहने बाजू बैठे थे और महाराजा साहिब जोधपुर बांई बाजू महाराज साहब जयपुर के पास बूंदी के महाराव राजा और महाराजा साहिब जोधपुर के करीब महारावजी कोटे के बैठे थे रईसों के नौकर चाकर

मुसाहिबसेलेकर चोबदारतक सब बाहर खडे थे किसीको अंदर आने और वहांकी बात चीत में दखल देने का हुक्म नहीं था मगर मेरा दोस्त राजपूत जिसके जिम्मे उस डेरे के सामानोंकी संभाल और रोशनी के झाड़ फानूसोंकी देखभाल का काम था एक कोनेमें चुप खड़ा था –

बैठनेके बाद सब रईस कुछ देर तक चुपचाप बैठे रहे जिससे देखनेवालेको यह अचंभा होता था कि ये आदमी बैठे हैं या तसवीरें रखी हुई हैं आखिर राणा साहिबने ही खामोशीकी मोहर को अपने मुखसे दूर करके नीचे लिखे माफिक तकरीर फरमाई –

कि ऐ मेरे प्यारे दोस्तो और मेरे राजपूत भाईयो आज मैं तुम सबको एक ऐसे जलसे में कि जो महाराज पृथ्वीराज चौहान शहनशाह दिल्लीके बादसे आजतक कभी नहीं हुआ था खुशदिली और बेतकल्लुफीके साथ बैठा हुआ देखकर राजी और खुश ही नहीं हुआ हूं बल्कि यह यकीन करता हूं कि अब राजपूतानेकी किसमत खुली राजपूतोंके दिन अच्छे आये खराबी और बदबख्ती की काली घटायें जो हमारी तुम्हारी नाइत्तिफाकी और फूटसे सब जगह छाई हुई थीं थोड़े ही दिनोंमें आपसके एका और इखलासकी तेज हवासे बिखरकर फट जावेंगी और कौमी तरक्की और आपसके मेल मिलापका सूरज आफत और तकलीफकी घटा और गहनसे निकलकर राजपूतों की शान शौकत और अदल इनसाफको तमाम दुनियामें रोशन करदेगा और ज

बसे आपसाहिबों ने क़ौमी भलाई और एक दूसरे की ख़ैरख़्वाही से मेरी इस एक तदबीर को मंज़ूर फ़रमाके इस इख़्लास और इत्तिफ़ाक़ के जलसे को अपने क़दमों से रौनक़ बख़्शी है अगर इसी तरह और भी बहतरी और ख़ैरख़्वाही की तदबीरों को मानोगे या ख़ुद अपनी अक़ल से फ़ायदा और नेकनामी हासिल करने की तजवीजें सोचोगे और अपनी २ अमलदारियों में रैय्यत की भलाई बहतरी इन्साफ़ और इन्तज़ाम के काम और कारख़ाने जारी और क़ायम करने से सरकार अंगरेज़ी को जो रज़इताने की हद से ज़ियादा क़दरदान और महरबान है राज़ी और ख़ुश करोगे तो थोड़े ही दिनों में तुम्हारी रयासतें भी आबाद हो जावेंगी और तुम ख़ुद भी हिन्दुस्तान में अच्छे इन्तिज़ाम करने वाले और रैय्यत पालनेवाले मशहूर हो जाओगे =

मैंने जो कई महीने की मेहनत और वकीलों के इधर उधर भेजने और आपसाहिबों की मशवरत और मिलाप की मालूम करने से आज आपसाहिबों को इस अज़ीम जलसे में जो हमेशा के लिये यादगार रहेगा आने की तकलीफ़ दी है उसका सबब क़ौमी ख़ैरख़्वाही और घरू फ़ायदे मुल्की फ़ायदे और राजक़ायदे की सलाह और पंचायत करने के सिवाय और कुछ नहीं है आप ख़ूब जानते हो कि मेरा ख़ानदान क़दीम से अपनी क़ौम के राजों की इज़्ज़त आबरू और आज़ादी के क़ायम रखने में और एक २ राजपूत की ग़ौर व कमाल और भलाई करने में मशहूर रहा है और मेरे बुज़ुर्गों ने

हमेशह इन कामोंको पूरा करनेके वास्ते बाहर केग़नीमोंका
मुक़ाबिला करके नेकनामी और नामवरी पाई है जैसा कि
मेरे मोरिसआला या मूलपुरुष बापा रावल और उनके
आठवें जानशीन खुमान रावल और उनके बाद रावल स
मरसिंह राणा लक्ष्मणसिंह राणा मोकलसिंह राणा कुम्भक
रण राणा संग्रामसिंह अपने बेटों पोतों और भाई भतीजों
समेत भारत राजपूतोंकी भलाई और खैरख़्वाही से मुस
लमानोंके साथ हमेशह लड़ते रहे और बाज़े बाज़ने लोग
स किस्मकी लड़ाइयोंमें ऐसे लिखे जुगते कि जिनका ध्या
न करनेसे हमारे रूंगटे खड़े हो जाते हैं मगर उनकी परवा
न की और अपने इरादे को हाथसे न जाने दिया लबकि तै
मूरकी औलादने हिन्दुस्तानकी बादशाही ली और उन बा
दशाहोंके बुजुर्गोंने हमारे बुजुर्गोंके बरखिलाफ़ दु-
नियादारी और ज़मानेसाज़ीकी राहसे उनकी बंदगी
मंजूर की और हमारे बुजुर्गोंको अकेला छोड़ दिया तो भी
उन्होंने अपना काम न छोड़ा और सैकड़ों तरहकी आफ़
तें उनके सिर पर गुजरीं तो भी अपने दावे पर क़ायम र
हे उनमेंसे जो कुछ बहादुरीके काम हमारे तेईसवें-
दादा महाराणा प्रतापसिंहजीसे राजपूतोंके नाम औ
र वंशको रोशन करनेके जहूरमें आये हैं वे ऐसे नहीं हैं कि
कोई उनको सरसरी नज़रसे देखकर नतीजा निकाले बि
ना चुप हो रहे वे कहते थे और यही कहते थे कि जो सब रा-
जपूत भाई मेरा साथ देते तो मैं राजपूतानेको हरगिज़ मु

गलों के हाथ में न जाने देता उनके बाद महाराणा राज सिंह
ने जब कि औरंगजेब मारवाड़ का राज दबाया चाहता था
जैसी कुछ हमदरदी और मदद की वह मशहूर ही है उस
वक्त उन्हों ने बहुत चाहा कि सब राजपूत मेवाड़ के सुनह
री झंडे के नीचे जमा हो जावें और एक साथ कोशिश करके
मुगलों के ज़ुल्म और अदावत का तदारुक करें और औरंगज़ेब के
हिरस की आग को तलवार के पानी से बुझावें मगर किसी
ने न माना सिर्फ राठोड़ उनकी तदबीरों के ऊपर चले थे सो
देखो अपने मुल्क को महाराज के नाबालिग यानी बाल
क होने पर भी शेर की डाढ़ से निकाल कर अब तक राज क
रते हैं इस हरी वेपरवाई पर भी जब उन्हों ने देखा कि औरंग
ज़ेब राजपूतों को भी जज़ीये के लिये सताने लगा है और
उसका रैय्यत को तकलीफ देना और धर्म के कामों में हत
क करना दिन २ बढ़ता जाता है तो एक ऐसा अख्लान
सीहत का खत उसको लिखा कि जिसके मज़मून को
हर कौम और हर मज़हब और हर मुल्क के सियाने आद
मी दिलो जान से पसंद करते हैं और उसका तरजुमा हिं
दुस्तान के बाहर के मुल्कों में भी दूर २ पहुंचा है जिससे ह-
मारे दादा राणा राज सिंह की आमवराई और तमाम दु
निया के भले चाहने की तारीफ होती है जिन्हों ने उसमें
और फायदेमंद बातों के सिवाय यह एक उमदा फ़िक़
रा भी लिखा था; कि
मैं हिन्दुस्तान के शाहों अमीरों मिरज़ाओं राव और

राजाओं की खैरख्वाही में तन मन धन से तैय्यार हूं ईरान तूरान रूम शाम के सरदारों और सातों विलायतों के रहने वालों और दरया और खुश्की में सफ़र करने वालों का मैं भला चाहने वाला हूं मेरा यह बयान सूरज से जियादा रोशन है ।

और वे इस दफ़ा को लिख कर ही चुप नहीं हो गये थे बल्कि उन्होंने यह ठान ली थी कि जो बादशाह हमारी नसीहत न मानेगा और सब राजपूत जो जज़िये के अदा करने से नफ़रत रखते हैं साथ देंगे अपनी और उनकी आज़ादी के लिये एक मैदान की लड़ाई लड़ेंगे मगर उनकी उमर ने वफ़ा नहीं की और वे जवाब पहुंचने से पहिले बैकुंठ वासी हो गये फिर जब कि औरंगजेब के बेटों और पोतों के आपस में लड़ने मरने से मुगलों की सल्तनत कमज़ोर हो गई थी तब भी कोई हमारे बुजुर्गों का मददगार न हुआ नहीं तो वे कभी लालची मरहटों का दबाव राजस्थान पर नहीं होने देते ।

ये सब काम जो इस तरह बिगड़ते गये और ऐसे अच्छे अच्छे मौक़े जो हाथ से निकलते रहे उसकी वजह आपस की नाइत्तिफाकी और फूट थी जो हिन्दुस्तान का जनमदागे वा है और जिससे फुलकर अंगरेज़ों र सेंधिया ने मनचाहा फल पाया ।

अब जब से अंगरेज़ी अमलदारी हुई है लूटमार और लड़ाई भीड़ाई का बीज ऐसा मारा गया है कि शायद फिर कभी बहुत अरसे तक न उगे और जो हमारे तुम्हारे दुश्मन थे

वे बहादुर अंगरेज़ोंकी तोप बंदूक और संगीनके डरसे ऐ
से खोये गये कि कोई उनका पता तक न पावे यह अंगरेज़ों
का राज जिसमें उन्होंने इतना अमनचैन कर दिया है कि
रईससे लेकर भंगीतक हरएक अपने घरमें पांव फैलाकर
सोता है और अपनी नींद पूरी करके उठता है इसलायक
[illegible] खुशी वक्त और नुकसानोंसे भरे
हुये पिछले ज़मानेकी व निसबत इसको हज़ार दरजे ब
हतर और ग़नीमत समझकर अपने २ मुल्क माल फ़ौज
लशकर और रैय्यतके बंदोबस्तमें मशगूल होकर इन-
कामोंमें ऐसी तरक्की और नामवरी पैदा करते जो इस मुबा
रक वक्तके लायक होती मगर अफ़सोस हममें से किसी
ने भी इस तरफ़ बिलकुल ध्यान न किया और न कोई उ
म्दा नतीजा सरकार अंगरेज़ी के पसंदके लायक निका
ला बल्कि बहुतसा हिनतो ऐसे भी हैं कि उन्होंने कभी
इस ज़मानेको पिछले ज़मानेकी हालतसे मुक़ाबिला
करके उसका मज़ा भी न उठाया होगा और यह बात कु
छ मुशकिल नहीं है कि कोई अपनी या अपने बुजुर्गोंकी पि
छली हालतोंको हालकी हालतसे मुताबिक़ करके नती
जा पैदा न कर सके क्योंकि इसके सामान और वसीले हर
एक रयासतमें इरे २ मौजूद हैं जब कोई साहिब इस तरफ़
ध्यान करेंगे तो उनको इस उमदा अमलदारी के उमदा हो
नेका शकल रहेगा जिसके अच्छेपनकी तफ़सीलके लिये
कुछ थोड़ासा बयान पिछले और पुराने ज़मानोंकी हालत

का करतेहैं यह बात आप सबसाहिबभी खूब जानतेहोंगे
कि मुसल्मानोंके आनेसे हमारे मुल्क मजहब रसम और
रिवाज में बड़ी २ फेर फार होकेहुए हैं और राजपूतोंकी लिया
कतें उसी वक्तसे कम होती गई हैं जिनदिनों में तुरकोंका
राज था तो वे हमलोगोंसे उतनी ही जान पहिचान रखतेथे
कि जितनी हम जादूगरों नजूमियों और मिरासियों से रखते
हैं और उनकी फौजों ने हमारे आपस का एका तोड़नेके
वास्ते हमारे मुल्कोंको ऐसा घेर रक्खा था कि शादी ब्या
हके ऊपर भी किसीको अपने इलाकेसे बाहर निकल
नेकी हिम्मत नहीं पड़ती थी और इसी सबबसे राजपूत-
लोग उनके मुकाबिलेके वास्ते बहुत कम जमा होसक्ते
थे जब उनमें कमजोरी आती थी तो उनके दबाव और ज़ो
र ज़ुल्मसे अलबत्ता कुछ फुरसत मिलती थी जो छोटे २ बा
दशाहोंकी चढाइयोंके जमाने में अकारथ जाती थी गरज व
ह जमाना इसतरहकी मुसीबतोंमें गुजरा फिर तैमूर की
औलाद तख्तपर चढी उसने खातिर और रिस्तेदारीसे
राजपूतोंको तोड़ फोड़कर अपना फायदा उठाया यह मा
ना कि उस वक्तके राजों को बादशाही लड़ाइयों और-
फतहों में शरीक रहनेसे बड़े २ फायदे पहुंचतेथे कि जिन
से मुल्क और मालकी तरक्की होती थी मगर उसमें महनत
और तकलीफ और बेआरामी भी बहुत थी जैसा कि उ
मर भर वतनसे दूर और बाल बच्चोंसे अलग रहना पड़ता
था मुल्क और मालकी हकूमत खजाने और जनानेकी

हिफ़ाज़त दूसरों के ज़ोरों से पर छोड़नी पड़ती थी हमेशह सफ़र दर पेश रहा करता था लड़ाई सिर पर खड़ी रहती थी गैरों के काम में अपना और अपने प्यारे भाई बंदों और सगे सम्बन्धियों का खून बहाया जाता था और उनकी ख़ातिर से कट्टी भी रिश्तेदारों और मददगारों से आ लड़ना पड़ जाती थी दूर २ के मुल्कों में धर्म कर्म का निबाह नहीं हो सकता था अटक के पार उतरने और म्लेच्छ देस में रहने पर मजबूर होना पड़ता था जैसा कि राजा मान सिंघ कछवाहा और जसवंत सिंघ राठोड़ को काबुल में और मुकुंद सिंघ हाड़ा और जगत सिंघ पठानिया (१) को बलख में जाना और रहना पड़ा और थोड़े से कुसूर पर बड़ी बड़ी तकलीफ़ें उठानी पड़ती थी चुनान्चे राव अमर सिंघ राठोड़ जैसा सूरमा राजपूत जंग के झगड़े में मारा गया और रतन हाड़ा और सूर सिंह राठोड़ और मान सिंघ कछवाहा उमर भर घर बार और वतन से बाहर रहे और अपने बुज़ुर्गों के महलों में रहने और अपने मुल्क के रमनों में शिकार खेलने और अपने देस के मेलों और तमाशों की सैर देखने और अपने जोरू बच्चों के साथ हंसने बोलने और अपने भाई सगों और प्यारे दोस्तों वगैरः के मिलने जुलने का कुछ भी मज़ा न उठा सके औरंगज़ेब जैसे दुश्मन के बेटों की खैरख्वाही में कोटे के

(१) यह जगत सिंघ पठानिया नूरपुर कांगड़े का राजा था शाहजहां बादशाह के ज़माने में तूरान के उज़बकों से ख़ूब लड़ा है—

हाड़ा राव की तीन चार पुश्तें गारत हुईं बराबर के चार भाई जो इस रयासत के चार थंभ थे हफ़्त में मारे गये शाहजहां के बखेड़ों में राजा जी की तीन चार पुश्तें काम आईं बूंदी किशनगढ़ और बीकानेर के लायक रईस बादशाहगर्दियों में नाहक जान से जाते रहे =

इस तरह की जानफ़िशानियों से न तो कोई नतीजा मज़हब के वास्ते ही अच्छा निकलता था और न मुल्क और क़ौम के वास्ते कुछ फ़ायदा होता था अगर कहो कि बादशाह क़दरदानी करता था तो ख़ाक ऐसी क़दरदानी पर कि महाराजा मान सिंह और मिरज़ा राजा जय सिंह उमर भर बादशाही लड़ाइयों में जान मारते रहे जिसका अंजाम यह हुआ कि मान सिंह को उमदा ख़िदमतों के इनाम देने के लिये तो अकबर ने ज़हर की गोलियां बनवाईं और मिरज़ा राजा को औरंगज़ेब ने ज़हर दिलवा कर मार ही डाला और अगर यह कहो कि नहीं ख़िलअत मिलते थे ख़िताब-मिलते थे जागीरें मिलती थीं जैसा कि अकसर रियासतें पहिले बहुत छोटी थीं और फिर बादशाहों की महरबानी से बहुत बड़ी हो गईं तो इसमें भी उन हज़रतों की चालाकी और खुदग़र्ज़ी थी यानी वे लालच देकर राजपूतों के गले कटवाते थे और अगर कोई बाहर का दुश्मन नहीं मिलता था तो आपस में ही उनको लड़वाते थे और ख़ाली नहीं छोड़ते थे चुनांचे उनके लड़वाने से जयपुर वाले हमारे बुज़ुर्गों से और बीकानेर वाले अपने बड़ों ही जोधपुर वालों से

लड़ते रहे हैं और फिर यह मज़ा देखो कि हिन्दू तो मुसलमानों
की खैरख्वाही में अपने भाई हिन्दुओं से लड़ते थे और मु-
सलमान जैसे उनके मारे जाने से खुश होते थे वैसे ही इन
के मारे जाने से भी बग़लें बजाते थे जैसा कि उनके एक
शायर ने कहा है =

ज़ हर तरफ़ कि शवद कुश्ता सूद इस्लाम अस्त·

यानी जिधर से मारे जायें मुसलमानों का ही फ़ायदा है
पस निहायत अफ़सोस है उन राजों और रजपूतों की हा
लत पर कि जो इस तरह मुसलमानों की खैरख्वाही में जान
खोकर दुनिया में बदनाम और आक़बत में रूसवा हुये अ
गर यह सब अपने २ ज़माने के किसी अपने क़ौमवाले स
रदार राजा से मिलकर दुश्मनों से लड़ते तो जो फ़तेह पाते
तो आज़ादी के साथ हुकूमत करते और जो हार जाते तो
कोई उनको बुरा नहीं कहता फिर जब एक अर
से बाद ज़माने ने करवट ली और मुग़लों की सलतनत में
खलल पड़ा तो उसके साथ ही हम लोगों में भी कि जब आ
पस में मेल मिलाप हो जाने की उम्मेद थी फूट और सुस्ती दा-
खिल हुई और जो इखलास और इकरार हमारे बड़े दादा रा
णा अमरसिंहजी से जयपुर जोधपुर के महाराजाओं ने
किया था वह बहुत जल्द टूट गया अगर ये तीनों रईस भी
उस ग़दर के ज़माने में एक रहते तो मरहठे कुछ भी न दीक
र सकते थे क्योंकि मरहठों ने रजपूताने में जो ज़ोर पकड़ा
वह अपनी ही फूट से पकड़ा और फिर तो उनका ऐसा दबाव

हुआ कि एक २ को अलग २ दबाकर निचोड़ा और किसी में भी कुछ जान बाकी न छोड़ी थी (१) अगर अंगरेज बहादुर अपनी संवत १८७४ की तरह में उनको ऐसा सख्त बेबस न कर देते कि जैसे दूसरे ही बरस किसी ने चम्बल के इस पार और अरबली पहाड़ के उस तरफ मरहेठों की सूरत न देखी तो महाराज हमारी तुम्हारी बरबादी और बदनसीबी की नौबत अखीर दरजे तक पहुंचकर नाम और निशान मिटा देने के पीछे पड़ जाती ॥

मुसलमानों से पहिले जिस जमाने में कि कुल हिन्दुस्तान राजपूत राजाओं के कब्ज़े में था उस वक्त भी हम लोगों की आपस की दुश्मनी और नाइत्तिफ़ाकियों से यही मुसीबतें आगे खड़ी रहती थीं और कोई बरस अमन चैन में नहीं गुजरता था देखो जब दिल्ली का तख्त तुंवरों के कब्ज़े में था और अजमेर में चौहान राज करते थे राठौड़ कन्नौज में सोलंखी गुजरात में पंवार मालवे में और पड़िहार मारवाड़ में तो उस वक्त अजब २ झगड़े बखेड़े रहते थे जिसका नतीजा दोनों सूरतों यानी हार और जीत में आम राजपूतों की नसल और खानदान के वास्ते निहायत ही बुरा होता था जैसे कि गेहूं के साथ घुन पिस जाता है वैसे ही छोटे छोटे राजे अपने से बड़े राजाओं की आपस की लड़ाइयों में तबाह और बरबाद हो जाते थे खास करके हमारे बुजुर्ग जो बहुत

(१) मरहठों ने सब से जियादा मेवाड़ के राज को बरबाद किया और वहां से कई क्रोड़ रुपया लिया

ही कभी किसी की बंदगी करते थे चुनान्चे जब अजमेर के रा
जा बीसलदेव चोहान ने गुजरात के राजा पर चढ़ाई की तो
हमारे बुजुर्ग रावल तेजपाल को सिपेसालार करने के
बहाने से बुलाया और अगर चे उस लड़ाई में फते हुई
और हमारे बुजुर्ग नेकनाम हुये मगर अजमेर वाले हक
नाहक हमारी रयासत को अपने मातहत समझने लगे
जिससे बहुत अरसे तक आपस में लड़ाई होती रही फि
र जब बीसलदेव के पड़पोते महाराजा पृथ्वीराज ने अ
पने नाना अनंगपाल के गोद नशीन होकर दिल्ली का
तखत पाया और राजपूताने के सब राजे और राव उन
के दरबार में रहने लगे और हमारे दादा रावल समरसिंघ
ने यह बात इख्तियार की तो महाराजा ने उनको अप
नी बहन देकर रिश्तेदारी के फंदे से अपने जाल में फंसा
या और फिर अपने कुल राज काज का बोझ भार उनके
कंधे पर डाल दिया कि जिसको संभालने के वास्ते उनको भी
दिल्ली में रहना पड़ा और आखिर वे अपने साले के साथ तुर
कों से लड़ कर मैदान जंग में काम आये उस दिन से राजपू
तों की किसमत लोट गई इकबाल ने जवाब दे दिया लिया
कत जाती रही कंगाली ने घर घेर लिया तुरक बादशाह
बन बैठे जो बादशाह हुआ उसी ने राजपूतों पर हाथ सा
फ किया यहां तक कि एक जमाने में सब जमीन राजपूतों
से निकल गई शहरों और किलों को तुरकों ने पसंद किया
वे अगर जंगल झाड़ी और पहाड़ों में जान न बचाते तो आ

नके दिन हम तुम इस जन्जाल से में कभी इकट्ठे न होते
ऐ भाईयो इन सब पेच दर पेच मुसीबतों को जो १००० बर
स से लगातार चली आती थी अंगरेजों ने हमारे सिर से इ
स तरह पर दूर कर दिया कि जैसे कोई दूध में से मक्खियां
निकाल कर फेंक देता है और उनकी जगह यह अमन और
आराम कायम किया कि हम तुम फरागत से अब अपने बुजु
र्गों की राजधानियों में बैठे हुये राज कर रहे हैं कोई हमसे न
हीं कहता कि तुम दिल्ली में नौकरी करने को चलो और न को
ई यह कहता है कि जजिया दो नहीं तो हिन्दु नहीं रहने पाओ
गे और न कोई यह ताकीद करता है कि नौरोज का दिन बहु
त करीब आगया है रानियों को जशन नौरोजी में भेजने
के लिये तैय्यार करो न कोई घोड़ों के दाग लगाने को तका
जा करके जी जलाता है न कोई अहदी डोले के लिये धौंस
लेकर आता है न कोई मंजावल हजरत की मोहरम के लि-
ये सवारों को लेने आता है और न कोई जशन नौरोजी के वा
स्ते लाखों रुपे की पेशकश मांगता है न अब यह हुक्म है कि
अटक पार जाकर काबुल को लेलो और अफगानिस्ता
न का बंदोबस्त करो अगर इसमें उजर करोगे तो मन्सब
छिन जावेगा और न कोई बदमाश यह धमकी देसकता है
कि मामला दो नहीं तो तुम्हारे भजनीक मंदिरों को लूट लेंगे
और न कोई यह डर दिलाने वाला रहा है कि अगर नालबंदी
न दोगे तो तुम्हारी जमीन को घोड़ों की टापों से ऐसी खो
दडाई जावेगी कि उसका आसमान तक पता न मिलेगा

यह सलतनत करीब ९० बरस पेश्तर तक मौजूद थी और उनके देखने वाले लोग हमारी तुम्हारी रयासतों में बहुत मौजूद हैं और रयाजन करने से हम भी जान सक्ते हैं कि हमारी जिंदगी हमारे बुजुर्गों की ब निसबत बड़े आराम और आज़ादी के साथ बसर होती है अगर हम उन सब उमदा बातों के पलटे में जो हमको सरकार अंगरेजी की बदौलत हासिल हुई है उसकी शुकरगुजारी न करें और उसके हाकिमों को खुश न रक्खें तो हमारी पूरी नालायकी और नाशुकरी है ये हाकिम खुशामद करने और जहांपनाह २ कहने से खुश नहीं होते हैं सौ-सौ रुपै तोले का अतर लगाने और बहराम खां इमरतसेन बेगम और चन्द्रभागा के मुजरे और नाच दिखाने से बरसरे इनायत नहीं आते हैं बल्कि रयासतों के उमदा इन्तजाम और तरक्की की हालत में देखने और रैयत को अमन चैन और आराम के साथ पाने और शहरों को उमदा २ मदरसों शफाखानों और बाणिज्य व्योपार की तरक्की के असबाबों से सजा हुआ देखने से ऐसे राजी और खुश होते हैं कि हाकिम होकर शुकरया अदा-करते हैं और महारानी साहब को तारीफें लिखते हैं जिससे हमको निहायत बड़ी और पक्की नेकनामी हासिल होती है =

हमने इन कामों में बेशक गफ़लत की है और हम अपनी वतन में बकेराजी रखने से बहुत पीछे रह गये हैं हमारी गफ़लतों से मुल्क और मामलों में जो अबतरी वाके हो रही है उसने हमको बदनाम कर रक्खा है हमारे हाकिम हमसे

दिल में खुश नहीं अगरचे वे हमारी खातिर करते हैं और
कोई शिकायत मुंह के ऊपर नहीं लाते मगर कहां तक
आखिर एक न एक दिन सब ख्यालतों का वही हाल
होने वाला है जैसा कि अकबर का हुआ और आज क
ल कोठि का हो रहा है इस सूरत में हम सब को पहिले ही से
इसकी फ़िक्र करना चाहिये कि फिर यों मिंदा होना न पड़े-
और कोई नालायक़ न कहै परमेश्वर ने हम को भी तो वही
जरये और वसीले दिये हैं कि जिनसे मुल्कों का इन्तजा
म बखूबी हो सकता है अंगरेज़ भी तो आखिर आदमी
हैं और वही डील डौल व शकल सूरत अकल और होश ह
वास रखते हैं अगर हम में और उनमें कुछ तफ़ावत है
तो यह है कि वे मेहनती इल्मी होशयार और खुश कि-
ल कामों में पड़ने वाले होते हैं कि जिससे उन्होंने अपनी
इतनी बड़ी अमलदारी का ऐसा इन्तजाम कर रक्खा है
कि सब काम दुरुस्ती से वक्त पर हुये चले जाते हैं जिनसे
उनको इस कदर बेफिकरी और फुरसत रहती है कि दूस
रों के घर का बंदोबस्त करने को तैयार हैं और हम बर खि
लाफ़ उनके ऐश आराम आलस और गफलत से ऐसे
सुस्त हो रहे हैं कि अपने घर का ही बंदोबस्त नहीं कर स-
क्ते और अपनी आमदनी और खरच की तादाद और फा
जिल बाकी के सबब अच्छी तरह नहीं जान सक्ते जैसा का
रदार कह देता है और जिस तौर पर खजानची समझा दे
ता है उसको मंजूर कर लेते हैं आराम तलबी का यह हाल है

कि हम मेंसे किसी ने भी कभी अपनी रयासत में इस सिरे
से उस सिरे तक दौरा न किया होगा वैसे सैर और शिका
र के लिये तो गरमियों के दिनों में जरूर किसी न किसी झंडा छोड़
ती दैं जंगलों में बहुत दफ़े दौड़ते फिरे होंगे मगर यह कभी
न हुआ होगा कि किसी दरख़्त की छांव में बैठ कर ज़मींदा
रों से पूछा हो कि तुम्हारे गांव की क्या हालत है हमारे अ
हलकार और हाकिम तुम्हारे साथ कैसा सुलूक करते हैं
और नज़राना मिल लेते हैं शेर और सूअर की तलाश में तो अ
पने मुल्क के ऊजड़ जंगलों में नज़र दौड़ा कर इधर उधर
और से देखा होगा मगर यह कभी न हुआ होगा कि उन
जंगलों में कहीं से पानी लाने की तरकीब करके घास
फूस की जगह जव और गेहूं के सरसब्ज़ खेतों से आ
बादी को बढ़ा कर रैयत के और तअल्लुक़ेदारों के शौक़ को तो बहुत मर
तबे नाचियों और बाज़ारों में बनठन कर निकले होंगे म
गर वैसे कभी रैयत के दुख सुख की खबर लेने को मह
लों के बाहिर कदम भी न रक्खा होगा डोम ढाढी रंडी और भड़
वों को तो हमेशा पैदल बुलवा २ कर २-३ और ४-५ पहर त
क उनका नाच और मुजरा देखा होगा मगर कभी दरबार
आम में बैठ कर रैयत की फ़रयाद तो घड़ी भी न सुनी हो
गी यों तो फ़ालतू आदमियों को लाख २ रुपये तक मुफ़्त
दे डाले होंगे मगर अपने गरीब भाई बेटों नादार रैयत
दर्दी भी हक़दारों और खैरख़ाह नौकरों और बूढ़े खासे
मोहताजों की खबर हज़ार पांच सौ रुपये से भी न ली होगी

पस हमारी रयास्तों के कम आबाद कम पैदावार और अब
तरी की हालतों में होने के उमदा वजुहात हमारे ही नाकि
३४ सतरी के हैं जिनकी इसलाह करना जरूर और मुनासि
ब है और जबतक इन्तजाम के छोटे और बडे कामों की फ़
री २ फ़िकर न की जावेगी और हर रयासत का बंदोबस्त ए
क उमदा नमूने पर न होगा तबतक कोई सूरत नेकना
मी और हाकिमों के खुश होने की न निकलेगी और न
इस मुलाक़ात का पूरा २ फायदा हासिल होगा अब मु
झको तो जो कुछ कहना था वह मैं कह चुका आयंदा जो
आप साहिबों की राय में आवे सो बेखटके फरमावें –
३५ राणाजी के चुप होजाने पर बूंदी के महाराव राजा सा
हिब जो उनकी बातों को पसंद और क़बूल करते जाते थे
फरमाने लगे कि राणाजी ने जो कुछ फरमाया वह ऐसा
है कि अगर हम सब लोग एका करके उस पर अमल क
रने को तैय्यार होजावें और खुद मिहनत करके अपनी २
रयास्तों का इन्तज़ाम करना शुरू करदेवें तो एक बरस
के अंदर २ ही वे सब इल्ज़ाम जो इन्तज़ाम पसंद लोग
राजपूतों के ऊपर लगाया करते हैं दूर होजावें और आ
यंदा के लिये रैय्यत की आसूदगी जमा की तरह और
हर किस्म की बहतरी की उम्मेद नजर आने लगे इन बा
तों से साहिबान अंगरेज जो हमारी रियास्तों को बहतरी
की हालत में देखना चाहते हैं हमसे फ़क़त राज़ी ही नहीं
होंगे बल्कि बहुत सी बातों में हमको मदद भी देंगे

३६ यह सुनकर अलवरके रावराजासाहिब बोल उठे कि साहिब अगर हम इन्तज़ाम करेंगे तो अपने वास्ते और न करेंगे तो अपने वास्ते अंगरेज़ों को हमारा इन्तज़ाम देखकर खुश और अबतरी देखकर नाखुश क्यों होना चाहिये किस लिये कि अहदनामों की रू से उनको यह अख़्तियार नहीं है कि हम से हमारी बद इन्तज़ामी और गफ़लत की इस्लाह करा सकें -

३७ कोटेके महारावजी बोले कि रावराजासाहिब सच फ़रमाते हैं हम से और सरकार से जो अहदनामा हुआ है उसमें साफ़ लिखा है कि सरकार अंगरेज़ी कभी रियासत कोटे के खानगी इन्तज़ामों में दखल न देगी और यकीन है कि ऐसा ही सब रईसों को लिख दिया है और फिर अब ये लोग बद अहदी किया चाहते हैं जो कि अकलमंद हैं और ज़ाहिर में अहदनामे तोड़ने की बदनामी को गवारा करना पसंद नहीं करते इस लिये रईसों को माज़ूल और बेदखल करने की ग़रज़ से यह फ़िकरा देते हैं कि तुम अपनी रियासत का इन्तज़ाम कितने दिनों में कर लोगे या तुम को इस क़दर मोहलत दी जाती है अगर उस में इन्तज़ाम न हुआ तो सरकार को दस्तंदाज़ी करनी पड़ेगी या कभी किसी को अपनी और सरकार की नाराज़ी के ज़ाहिर करने से घबराहट में डालकर इस क़िस्म की दरख़ास्त गुज़रानने पर मजबूर करते हैं कि सरकार हमारी रियासत का इन्तज़ाम करे ताकि कोई यह न कह सके कि सरकार ने अज

खुदमुख़्तारी रयासत के कामोंमें सरकारकी यह काररवाई-
आजकल अकसर होनेलगी है अहदनामोंके ख़िलाफ़ है या
३८ नहीं जोधपुरके महाराजनेफ़रमाया कि हम यह तो नहीं क
ह सक्ते कि सरकार अंगरेज अपने क़ौल और क़रार पर का
यम नहीं मगर यह ख़ूब जानते हैं कि जो बरताव सरकारका
रयासतों के साथ शुरू अमलदारीमें था अब उसमें बहु
तसी उलट फेर होगई है और दिन दिन होती जाती है देखो
हमारे बैकुंठबासी दादा मानसिंहजीने अहदनामे पर दस्त
ख़त होजानेकेबाद अपने इज़ाफ़ेके वक़्तसे बाग़ी ठाकु
रोंको मारडाला था और बाक़ी रहे हुओंको बाद ज़ब्ती जा
गीरके जलावतन करदिया था उस वक़्त के अंगरेजी हाकि
मोंमें से किसीने भी इस अमरकी बाजपुरस नहीं की थी ब
ल्कि जब उन सरदारोंने कई बरस तक ख़राब होनेके बाद
सरकारमें हिफ़ाज़त की दरख़्वास्त पेश की थी तो बहुत दि
नोंतक सरकारने उसको मंज़ूर नहीं किया और जब उन-
की ज़ियादा लाचारी करने और तकलीफ़ देनेसे एक दो
बार उनके मुक़द्दमेमें दोस्ताना तहरीर भेजी तो उसका-
जवाब दादासाहिब मौसूफ़ने यही दिया कि बाग़ी सरदारों
नें माफ़ीके लायक़ तो क़सूर नहीं किये थे मगर सरकार की-
ख़ातिर और सिफ़ारिशसे उनकी परवरिश मंज़ूर कर के
लिखा जाता है कि अगर सरदारान मज़कूर हमसे अपनी त
क़सीरोंकी माफ़ी मांगेंगे तो उनकी दरख़्वास्त पर लिहाज़ कि
या जावेगा आख़िर ऐसा ही हुआ और हमारे बापसे भी इस

क़िस्मके कईमामले हुये अगर कोई बड़ा मुबारिज़ा उन
से कभी नहीं हुआ अब कोई ज़रासी बेइत्तदाली करे
तो नहीं सरकार से किस क़दर ख़फ़गी उसके ऊपर होती है॥

३९ टोंक के नवाब साहिबने कहा साहिबो हम तो यह जा
नते हैं कि जो रईस अंगरेज़ों को अपनी ताबेदारी से रा
ज़ी रक्खेगा उसकी बात बनी रहेगी और जो ज़रा भी सरक
शी करेगा वह ख़राब होगा देखो मेरे बाप को जो बात बा
त में अंगरेज़ों के मुक़ाबिले में बड़ा बड़ा या करते थे किस आ
सानी और हिक़ारत के साथ गद्दी से उतार दिया और ब
नारस में जा बैठाया अगर सच पूछो तो राजपूताना उ
नहीं से आंखों में हलका होगया है और वह फ़िक़रा ज़रा
किसी को याद न होगा जो सरकार ने उनकी मा'ज़ूली के
इश्तिहार में लिखा था कि नव्वाब बावर नहीं करते ब
हादुर यक़ीन करते हैं कि जो तजवीज़ नव्वाब टोंक के लि
ये हुई है वह राजपूताने में इबरत पैदा किये बग़ैर न रहेगी॥

४० जयपुर के महाराजा साहिब ने फ़रमाया कि हमारे बुज़ु
र्गों ने राजकाज के लिये जो क़ायदे बांधे हैं अगर उनका पू
रा पूरा बरताव किया जावे तो हाल की सब शिकायतें दूर
हो सक्ती हैं मगर क्या कीजिये कि उनके असूल और हैं औ
र सरकार अंगरेज़ की अमलदारी के असूल और हैं अगर
हम लोग अपने क़दीमी दस्तूरों के मुआफ़िक भी ख़ुद मह
नत करके बंदोबस्त करें तो भी अंगरेज़ों की नज़रों में कुछ
लियाक़त और एतबार पैदा न कर सकेंगे इससे बहतर यह है

कि अब अहातक लोस के इन्तज़ाम में अंगरेज़ी ढंग बरता
जाता है और जोर रईस ऐसा करने लगे हैं और अबतक इन्त-
ज़ाम उनका सरकार की मनशा के लायक दुरुस्त भी नहीं है
तोभी अंगरेज़ उनकी तारीफ़ ही किया करते हैं जैसे कि ह
मारे मातहत खेतड़ी के राजा ने दो चार मदरसे शफाखा
ने और सड़कों के बनाने और दीवानी फौजदारी अदाल
तें मुकर्रर करने के सिवाय और कोई ऐसी बात नहीं की
थी जो रअय्यत के हक़ में फ़ायदेमंद हो मगर अंगरेजों में
उसकी ऐसी हवा बंध गई थी कि लार्ड लारन्स साहिब
गवरनर जनरल हिन्दुस्तान ने आगरे के दरबार में हमस
बर रईसों के रूबरू उसकी तारीफ़ की थी

४१ बूंदी के महाराव राजा साहिब बोले मतलब तो इन्तजा
म से है और वह चाहे किसी तौर पर हो मगर जबतक हम अ
पनी कदीमी मरजाद और धर्मशास्त्र के असूल पर अ
च्छी तरह से बंदोबस्त और इनसाफ कर सकें तो कुछ ज़
रूर नहीं है कि गैरों की देखादेखी करें और जिस जबान
के लफ़ज़ों और महावरों से वाकिफ़ न हों सिर्फ २-४ ल
फ़ज उसके जैसे यस सर नो वेल वगैरः बोलने लगे
और अपनी कदीमी और उमदा पोशाक के बदले कोट
पतलून पहनकर नई किस्म के मसखरे बन जावें और
फिर कुरसी मेज लगाकर बैठने और छुरी कांटे से खाना खाने
की आदत डालकर अंगरेजों के दांत चिड़ाने लगें अगर दुन
या भर का अच्छापन अंगरेजों के ही पीछे पीछे चलने में है

तबतो एक दिन धर्मको भी छोडना पडेगा जो हमारे न
ज़दीक जान देने से भी ज़ियादा सख़्त काम है ‒

हमारे आचार्य हमारे शास्त्रों में सब कुछ लिख गये हैं
और हमारी किताबों में सब क़िस्म के इन्तज़ामों की
तदबीरें मौजूद हैं अगर हम सब लोग धर्मशास्त्र और रा
जनीतिके बमूजिब रियासत और सियासत के क़ायदे जा
री करें तो कौन मने कर सकता है बल्कि इसमें एक यह भी
फ़ायदा है कि संस्कृत के इल्म की तरक़्क़ी होगी जिसको ब
हुत से अंगरेज भी दिलो जान से चाहते हैं =

४२ पाटणके राजा राणासाहिब बोले कि आपने बहुत ख़ू
ब फ़रमाया मगर मेरी राय में इस क़िस्म का इन्तज़ाम जा
री होना मुश्किल होता है और अगर जारी भी हो गया तो
उसका क़ायम रहना मुश्किल है क्योंकि जब कोई र
ईस बे औलाद मर जावेगा या उसका वारिस नाबालि
ग रह जावेगा तो उस सूरत में सरकार को अपने क़ायदे
के मुआफ़िक़ उसकी रियासत का बंदोबस्त बतौर कोरट आ
फ़ वार्डस के करना पडेगा और यह बंदोबस्त उसी तौ
र पर किया जावेगा जैसा कि अंगरेजों का बंदोबस्त हो
ता है और इस बंदोबस्त से वह बंदोबस्त कि जिसका
ज़िक्र हो रहा है बिलकुल टूट जावेगा फिर इस तरह रफ़
ते रफ़्ते कुछ ज़माने में उसका पता तक भी बाक़ी न रहेगा इ
स सूरत में लाज़िम है कि अब जो बंदोबस्त किया जावे
वह ऐसा हो कि इलाक़े के कोरट होने पर भी उसमें कुछ खल

लन आवे और बहुत मुद्दत तक बना रहे –

सिरोही के रावजी बोले कि ऐसा इन्तज़ाम सोचते हैं कि जिस को बूंदी के महाराव राजा साहिब पसंद नहीं करते हालांकि उन का वली अहद अभी बहुत छोटा है और उनकी उमर पक गई है मेरी राय में तो यह आता है कि कुल राजपूताने में सरकार अंगरेज़ के कायदे और कानून के नमूने पर इन्तज़ाम का काम शुरू किया जावे जिससे सरकार भी खुश होवे और हमारे पीछे भी उसमें कोई बड़ी खराबी न पड़े.

किशनगढ़ के महाराजा बोले कि अगर हम सब जो ग सुस्ती और गफ़लत छोड़ देवें और महनत करने और छोटे छोटे कामों के संभालने की आदत करें तो हमारा इन्तजाम बुरा नहीं है हम उसी के वसीले से सरकार को खुश कर सकते हैं और यह बात अकल के भी बरखिलाफ़ है कि गैर मुल्कों के कायदे कि जिनका हम को अच्छी तरह तजरुबा नहीं है अपनी रयासतों में जारी करें और अपने आजमाये हुये प्रबंधों को तोड़ देवें –

४५ यह सुनकर एक रईस ने कहा कि भाईयो हम अंगरेज़ों की ज़ाहर देखा देखी करेंगे मगर उन्हों ने जो हमारा खिताब अधक बरावर छोड़ा है वह कभी मोक़ूफ़ न करेंगे और हमारी महनतों और लियाकतों को कभी इनसाफ़ की नज़र से न देखेंगे जैसा कि पिछली साल की रपोट में करनैल बुरुक साहिब अजंट गवरनर जनरल राजपूताना

ने बावजूद के कि हिन्दुस्तानी रयासतों का इन्तजाम अगले वक्तों से अच्छा था रईसों की शान में तो फिर भी यही कि करा लिखा कि "रईस चाहे कैसे ही हों मगर मुल्क में दुरुस्ती हालाई और आबादी दिन २ बढ़ती हुई मालूम होती है" इससे पाया गया कि रईस तो कुछ लायक नहीं हैं मगर हमारी होशयारी और खबरदारी से इतनी बातें हुई।

४६ एक दूसरे राजा साहिब बोले कि हमारा इन्तजाम पहिले भी बुरा नहीं था और अब भी बुरा नहीं है अखबार वालों ने नाहक अपने मतलब के वास्ते बदनाम कर रक्खा है वे जितनी खोट हमारे इन्तजामों में निकालते हैं हम उससे भी बहुत जियादा अंगरेजों के कामों में निकाल सकते हैं और अंगरेज जो हमारे कामों में दखल देने लगे हैं वह बेजा है क्यों कि वे जब अव्वल हमको खुद मुख्तार ठैरा चुके हैं तो फिर उनको हमारे बनने और बिगड़ने से क्या काम रहा वे अपनी खैर और फ़ौज खबर चलने से मतलब रक्खें और हमारा बुरा भला हम जानें अंगरेजों के खुशामदी तवारीख़ लिखने वाले हुमायूं बादशाह पर तो यह इलज़ाम लगाते हैं कि उसने ईरानियों से कंधार बे सबब छीन लिया जिसको वह कुछ अरसे पहिले उनको मदद के बदले में दे चुका था और अकबर का वज़ीर अबुल फ़ज़ल हुमायूं को इस इलज़ाम से बचाने के लिये यों लिखता है कि जब ईरानी कंधार में ज़ुल्म करने लगे और हुमायूं को

उनका जुल्म करना रईयत के ऊपर पसंद नहीं आया तो ला
चार होकर कंधार ईरानियों से वापस ले लिया लेकिन ता
ज्जुब है कि जब हुमायूं मदद के बदले में ईरानियों को कंधार दे
चुका था तो फिर उसको उनके जुल्म और इनसाफ़ पर ख
याल करना ज़रूर न था,, ...
हमको अफ़सोस है कि वे खुशगुमरी तवारीख लिख
नेवाले बहादुर अंगरेजों को यह नहीं समझाते कि जब आ
प यह इक़रार कर चुके हैं कि राजपूताने के खानगी माम
लों में दस्त अंदाज़ी नहीं करेंगे तो फिर आपको राजपूत र
ईसों की भलाई बुराई ढूंडना और उनके जुल्म और इनसा
फ पर नुकताचीनी करके उनकी रयासतों में दखल देना
क्या ज़रूर है = ...
५७ यह तक़रीर अकसर रईसों को पसंद आई जिन्हों ने
उसको सुनकर गरदन हिलाई और यह हाल हुआ कि सब
का मता एक होने की जगह हरेक अपनी २ कहानी ले बै
५८ ठा जिसमें ज़यादातर शिकायत अंगरेजों की बेजा दस्त
दाज़ी करने की थी जिनको सुनकर महाराणा साहिब
बहुत तंग हुये और बूंदी के महाराव राजाजी से फ़रमाने
लगे कि अगर हम जानते कि यहां ऐसी बातें होंगी तो-
किसी कानूनी और वाकिफ़कार आदमी को अंगरेजों
की तरफ़ से जवाब देने के लिये लेते आते महाराव राजा-
जी बोले बेशक यह बात हमारे जहन में भी नहीं गुजरी थी
कि इस जलसे में ऐसे झगड़े पेश होंगे बल्कि यह यकीन

था। कि जिन जिन बातों के लिये यह जलसा ऐसी पोशीद-
गी से जमा किया गया है कि रयासतों के वकीलों को भी-
कि जो अंगरेजी कानूनों से खूब वाकिफ़ और अंगरेजों-
की मनशाओं के अच्छे भेदू होते हैं इस अहवाल से इत्तिला
नहीं दी गई है वे अव्वल ही गुफ़्तगू में सब साहिबों की रा
यके एक होजाने से तै होजावेंगी अगर इन मुखतलिफ़ ख
यालों और तरह २ की तकरीरों की पहिले से खबर होती तो
एक दो वकीलों को चुनकर पोशीदा तौर पर इस खास अ
मर में गुफ़्तगू करने के लिये बुलवा लेते और अब इन सा
हिबों को सरकार अंगरेज की तरफ से तसल्ली करना बहु
त ज़रूर होगया कि जब तक इनके दिलों से शक दूर नहीं
गे तब तक आपकी इस मुनसफ़ाने और बेगरज़ कोशि
श का असर उनके दिलों में न होगा और न इतने राजों के
एक खास मजलिस में जमा होने का जो अब तक क
भी नहुये थे कोई ऐसा नतीजा निकलेगा जो आमरा
जस्थाने को फ़ायदा पहुंचा सके .. ..
यह सुनकर महाराणा साहिब ने फरमाया कि फिर अ
ब क्या करना चाहिये और इस मौके पर ऐसा शख़्स कहां
से आवेगा कि जो पंच बनकर हमारे और सरकार के हक़
क़ का लिहाज़ रखके ऐसा फैसला करदे कि हमारे भाई
यों में से जिन २ साहिबों को सरकार अंगरेज़ की कार
रवाई की निसबत बेजाबतगी के शक हो रहे हैं वे उन
के दिलों से जाते रहें और जो नतीजा हमको इस खास

जल्से के करने से मंजूर खातिर है बखूबी हासिल होजावे।
यह सुनकर जयपुर जोधपुर और बूंदी के राजा साहि
बड़ी गौर और फिकर के साथ सोचने लगे कि अब इस अ
म्र का क्या इन्तजाम करें उस वक्त मेरे दोस्त हाड़ा राज
पूतने हाथ जोड़कर अरज की कि अगर जानकी अमान
पाऊं तो कुछ अरज करूं राणाजी और सब राजोंने फरमा
या कि तुमको अरज करने की इजाज़त है मगर कोई बेहू
दा अरज मत करना उसने अरज़ की कि जब मैं इस डेरे
को सजाकर यह देख रहा था कि इसकी सजावट में को
ई बात तो बाकी नहीं रह गई है उस वक्त मैंने सुना कि
डेरे के बाहर चोबदार किसी आदमी से तकरार करता है मैं
जो बाहर निकला तो एक अजनबी आदमी को देखा जो
बड़ी लायकी से चोबदार के साथ बातचीत कर रहा था
और उसके चहरे से लयाकत और कार गुजारी पाई जाती
थी दरयाफ्त करने से मालूम हुआ कि कोई मुसाफिर
आदमी है जो रात के अंधेरे में रस्ता भूलकर इधर चला
आया था उसकी बातों के ढंग से पाया गया कि वह अंग
रेज़ी अमलदारी का रहने वाला है और हिन्दी फारसी के
सिवाय राजपूतों की तवारीख खूब जानता है जैसा कि
उसने मुझसे पूछा कि तुम कौन सरदार हो जब मैंने क
हा कि हाड़ा हूं तो उसने कौम हाड़ों की तवारीख उसी व
क्त बड़ी उमदगी से बयान की और कहा कि मैं इसी तर
ह राजपूतों के हरेक खानदान की तवारीख जानता हूं

और उनके आपसके मुकदमों और मामलों में अच्छी त
रहसे वाक़िफ़ हूं मैंने इस पर भी उसको पकड़ा और इ
स डेरे के पीछे कैद कर के चाहता था कि कोई चौकीदार
मिल जावे तो उसके साथ यहां से चालान करदूं इस अर
से में आप सब साहिब तशरीफ़ ले आये और मैं यहां के
कामोंमें मशगूल होगया वह शख्स डेरे के पीछे खड़ा
है अगर हुक्म हो तो इस जल्से में निसफरी तौर पर गुफ़
तगू करने के लिये उसको हाज़िर करूं वह देखने में सम
झदार कानूनी और तकरीरी मालूम होता है बल्कि उ
सने कैद करने के वक्त मुझ से कहा भी था कि तुम मु
झको अपने राजों के हज़ूर में ले चलोगे तो सरफ़राज़ी
पाओगे :- .. ..

राणाजी ने फरमाया अच्छा तुम उसको लाओ तो स
ही अगर बात करने के लायक़ समझेंगे तो उससे बातें
करेंगे नहीं तो रुख़सत करदेंगे वह राजपूत मेरे पास दौ
ड़ा हुआ आया और कहा लो चलो राणाजी और सब रा
ईस तुमको याद करते हैं मैंनें दूर अंदेशी कर के कहा कि
मुझे चलने में तो उज़र नहीं मैं खुद चाहता था कि कि
सी तरह इस उमदा जलसे में पहुंचूं मगर राजपूत सर
दारों के खुदपसंद यानी आपथापी होने और कायम
मिजाज़ न होने का ख़याल आता है सो तुम एक दफ़े और
जाकर उनसे पकावट कर आओ कि पूरी तसल्ली होजा
वे उसने कहा कि बहुत अच्छा और दरबार में जाकर-

अरज़की कि वह यूं कहताहै कि मैं ने सिवाय इसके और कोई कुसूर नहीं कियाहै कि अजान इधर आगया अब अगर राणाजी का मतलब मुझे बुलवाने से इस जुरम की सज़ा देनेकाहै जबतो रोबरू बुलवाना कुछ जरूर नहीं गैर हाजरी मैंभी हुक्म दे सक्ते हैं और अगर और किसी कामके लिये याद फरमाते हैं तो मेरी तसल्ली करदी जावै कि मेरे साथ इनायत और मेहरबानी से पेश आवेंगे क्यों कि मैं अहलकलम हूं को नसे शरीक हूं यानी कायस्थ हूं और मेरे बापदादे राजों बादशाहों और रईसों के सरकार दरबारमें इज़्ज़त पाते रहे हैं यह बातें सुनकर राणाजी ने फ़रमाया कि तुम खुद जानते हो कि हम उसको कुछ लायक समझकर सलाह करने के लिये बुलाते हैं उसको कुसूर और सज़ा का खौफ़ नाहक है और जो उसने इज़्ज़त और खातिर करनेके लिये अपनी जात पांत और अहल कलम होना जितलाया है सो दुरुस्त है हम मिसल अहल कलम के उसकी ताज़ीम और खातिर करेंगे तुम सब तरह से उसको तसल्ली दे कर ले आओ॰

५० वह दोस्त फिर आया और अब मुझको उसके साथ जाना पड़ा जब मैं उस डेरे के दरवाजे पर पहुंचा तो मुझको तकलीफ़ दी गई कि अपना बूट उतार दो मैंने बहुत कहा कि यह बूट तो अंगरेजों के कीमती फ़र्शों पर भी जासक्ता है और मैं उसके बदले अपनी संबूरी टोपी उतारता हूं

मगर किसीने नमाना लाचार मैं जूता उतारकर अंदरगया
और रईसोंको गद्दी तकया लगाये बड़े ठस्से से बैठा देखा
जिनमें राणाजीकी गादी कुछ ऊंची थी मैंने करीब जाक
र कहा जय रघुनाथजीकी और सबको झुक झुक कर
मुजरा किया हरेकने सलामका जवाब दिया और फर
माया कि आओजी भय्याजी रायजी मुनशीजी हमारा
इरादा तो इस जलसे में किसी गैर को बुलाने का नहीं था
मगर तुम किसमतके जोर से आये और ऐसे आये कि ह
म सबको तुम्हें बुलाने की जरूरत पड़ी मैंने अरज की
कि आप मुझको गैर ख्याल न फरमावैं क्योंकि मैं भी
मैं सब आपसा हिंदोंके राजपूतानेका एक खैरखाह हूं
५२ बूंदी के महाराव राजाजीने फरमाया कि जबतक हम
को यह यकीन न होजायगा कि तुम हमारी रीत रसम
से बखूबी वाकिफ हो और सरकार अंगरेज के कानूनों
को खूब जानते हो तबतक हम अपना भेद तुम्हारे आगे
जाहिर न करेंगे मैंने कहा बहुत बहुतर है आप मेरा इम
तिहान लीजिये अगर उसमें आपके नज़दीक पास हो
जाऊं तो आप अपनी मुराद बयान कीजिये नहीं तो आ
पको अखितयार है तब उन्होंने कहा कि सबसे अव्वल ह
मको हमारे खानदानों की वाकफी दरकार है मैंने कहा
कि अगर हुक्म हो तो राजपूतों के आम हालात के अरज
करने पर किफायत करूं या हरेक रईस के खानदान का
कुछ २ हाल जुदा जुदा अरज करूं उन्होंने फरमाया कि

ऐसा कौन राजपूत है कि जिसको अपने बुजुर्गों का अहवाल प्यारा न हो तुम तो हम सबकी ओर से ही तवारीख अगर जानते हो तो थोड़ी २ बयान करो कि जिससे हर एक राजी हो जावे -

५२ मैंने अवल सूरजबंसी राजाओं की तवारीख जिनसे जयपुर जोधपुर और उदयपुर के राजाओं का सिलसिला मिलता है शुरू करके जहां से कि यह तीनों खानदान अलहदा हुये हैं वहां तीन दफे कायम किये पहिले दफे में उदयपुर वालों के हालात उनके मोरिस आला यानी मूल पुरुष से लेकर अबतक मय कुछ २ अहवाल रियासत डूंगरपुर बांसवाड़ा, देवलिया, परतापगढ़, और शाहपुरे के सिलसिलेवार बयान कर दिये दूसरे दफे में राठोड़ों का हाल जबसे कि वे सूरजबंसियों से जुदा होकर कन्नोज के राजा हुये और वहां से मारवाड़ में आकर समुद्र के किनारे तक फैल गये मय हालात रियासत किशनगढ़ और बीकानेर के मुफस्सल कह दिये तीसरे दफे में कछवाहों की हकीकत उनके मोरिस आला से लेकर महाराजा हाल तक मय अकसर उनकी शाखों और खासकर के राजा अलवर के तफसील वार बयान किये जिनको सुनकर महाराजा साहिब जयपुर ने बयान किया कि ऐसे साफ और रोशन हालात इन खानदानों के तुमको कैसे मालूम हुये अरज की गई कि सरकार अंगरेजी के तुफैल से -

फिर चोहानों की तवारीख़ शुरू की क्योंकि बूंदी और कोटे के राजा जो हाड़ा कहलाते हैं और सिरोही के रावजी जो देवड़े मशहूर हैं चोहानों से निकले हैं जो कि महाराव राजा साहिब ने फरमाइश की थी कि दिल्ली के बादशाह पृथ्वीराज और किले रणथंभोर के मालिक हमीर चोहान के हालात भी बयान किये जावें इस लिये इन दोनों मशहूर और बहादुर राजाओं के खानदान का हाल मय उन खास खास बातों के नीमराणे की रियासत के कायम होने तक बयान किया जो अब रयासत अलवर में शामिल है और वहां का ठाकुर खुद को खास पोता पृथ्वीराज का समझ कर अलवर वालों की चाकरी नहीं करता है इसके बाद हाड़ों की वंसावली अस्थिपाल हाड़ा कोम चोहान से लेकर महाराव राजा साहिब बूंदी तक मय मुखिसर कैफियत रयासत कोटे के जो सम्वत १६८५ में बूंदी से अलहदा हुई थी सुनाई महाराव राजा साहिब बूंदी ने पूछा कि तुमने हमारे चारण सूरजमल से भी कभी मुलाकात की थी मैंने कहा कि मुलाकात तो नहीं की मगर उन की बनाई हुई तवारीख़ वंशभाशकर में अलबत्ता अकसर नुक्ताचीनी की है ‥ ‥ ‥ ‥ ‥ ‥

फिर करोली और जेसलमेर के राजों की तवारीख़ शुरू करने के लिये चन्द्रवंशी राजाओं का दफतर खोला उसमें जहां से जदुवंश की शाख अलहदा हुई है उसका बयान श्रीकृष्णजी के अंतरधान होने और द्वारकां

कोटूब्जानेतक और वहांसेवहफुटकर अहवालजोगाटी
यों और जाड़े और करोलीवालोंके जुदाहोनेतक वाके
हुआहै थोड़ाथोड़ा अरज़ किया और वहांसेजेसलमेरके
भाटियों और करोली के राजाओंका जुदाजुदा अहवाल
आजतक कहसुनाया अगर तीसरी शाख जाडेचा यानी
कच्छ के राजा साहिब भी उस जलसे में होते तो उसका
हालभी कहदेता –

फिर झालावाड़ इलाके गुजरात की तवारीख शुरू
करके रयासत हलवद के हालात बयान किये जिससे
राजराणा जालमसिंघ की पीढीयां मिलती हैं और जा
लमसिंघ की जिंदगी का अजी बगरीब अहवाल और
उनके कानून कायदे और इल्लजामों के जिक्र और होश
यारी खबरदारी खेती बाड़ी और वणजब्योपार की तर
क्की और जमाने लशकरगरदी मरहटामें रयासतकोटे
की हिफ़ाजत और दूसरी रयासतोंकी सलाह मसल
तमें शामिलरहनेके तफसीलवारहालातसे दरबार्वा
लोंको ऐसी हैरतमें डाला कि अगर पाटण के राजराणा
साहिब मेरे बयानोंकी तसदीक न फरमाते तो सबरई
समुझको झूटा घसकी ठहराते और जालमसिंघके बा
दका अहवाल जिसका एक बड़ा हिस्सा कोटेकी रयास
तसे १३०००० का मुलक राजराणा जालमसिंघकी उम्म
दा कारगुजारीयोंमें उनके पोतेको मिलजानेका है मय
उसके असली सबबों और वजूहातके हालके राजराणा

साहिब तक कहा जिसको सुनसुन कर कोटे के महाराव जी दिल में बे मज़े होते थे ॥ .. ..

अब रह गये नवाब साहिब टोंक सो उनके खानदान की तवारीख़ जी कि जिसमें नवाब अमीर खां की बहादुरी और मुल्कगीरी और नवाब वज़ीर मुहम्मद खां की उम्दा हकूमत और नवाब मुहम्मद अली खां की सख़्त कार रवाई रईयत को तकलीफ़ वगैरह देने और सरकार अंगरेज़ी के हाकिमों को खुश न रखने वगैरह की कैफ़ियत लव्वल साहिब बहादुर हाल की मसनद नशीनी और उनकी नरम और खुलायम हुकमरानी तक कह सुनाई इसमें नवाब मुहम्मद अली खां के गद्दी से उतारने और इस मामले में सरकार अंगरेज़ी की मुनसिफ़ाने कार रवाई के हालात ऐसे ही और साफ़ बयान हुये कि सब रईसों ने एक ज़बान होकर फ़रमाया कि हमने इस मुकद्दमें को ऐसी करीन कयास तफ़सील के साथ अब तक कभी नहीं सुनाथा ॥ .. ..

यह तवारीखें जो इस तरह बयान की गईं और जिनका हवाला सिर्फ़ यहां दिया गया मुआफ़िक पुराणी किताबों और कहावतों के थी और जो दुरुस्ती इनकी हाल की तहकीक़ात से हुई है उनका ज़िक्र इस लिये न किया कि कहीं राजपूत रईस जो अपनी कदीमी पाबंदी को बहुत पसंद करते हैं अवल्ल ही यक़ तगी में नाराज़ होकर मुझको महफ़िल से न उठादेवें ॥ .. ..

मुझको गौर करने से मालूम हुआ कि उदयपुर और बूं
दी के रईस तो अपने २ खानदान की तवारीखों से खूब वा
किफ थे और महाराजा जोधपुर और किशनगढ़ उनसे
कम और जयपुर के महाराजा साहिब राजपूतों के खा
नदानों की तवारीख और मुसलमानों और अंगरे
जों की आमतवारीख भी बहुत खूब जानते थे बूंदी और
किशनगढ़ के राजा साहिब तारीख़दानी के अलावे इल्
म इंतज़ाम में ऐसी ताकत रखते थे कि उसमें बहुत सफ़ा
ई के साथ बातें करते थे अलवर के रईस उर्दू और फार
सी में खूब गुफ्तगू कर सकते थे और बीकानेर व शाह
पुर के राजा तालिब इल्मी की हालत में थे और जैसलमे
र के रावल स हब अपने मुल्क की तवारीख और सिंध
और बलूचिस्तान के हालात से अच्छी वाकफ़ी रखते थे
और दो एक रईस बिलकुल अनपढ़ थे वे जिस लोगों के पर अ
पने साथ वालों को वाह वाह करते हुये देखते थे आप भी
वाह वाह कहने लगते थे नहीं तो चुप रहते थे ॥

बूंदी के महाराव राजा साहिब ने फरमाया कि हमको जि
स मसलत जब में सलाह करनी है उसमें बातचीत करने के लि
ये सिर्फ तवारीख का जानना काफ़ी नहीं है बल्कि अंगरे
जी कानून और धर्मशास्त्र की वाकफ़ीयत भी दरकार है
ता कि कोई राय खिलाफ़ उनके न दी जावे मैंने अर्ज़ की कि
मैं परमेश्वर के फ़ज़ल और आप ‥ के इक़बाल से धर्म
शास्त्र और अंगरेजी कानूनों के अलावे असूल शरे मोहम्म

१ मुल्क खुदमुख्तार .... २ मुल्क गैर

मुल्क मकबूज का हाल जिसकी आमदनी सरकार
में आती है आगे बयान किया जावेगा ....

मुल्क महफूज हैदराबाद गालबके और आपसाहि
बों की रयासतों से मुराद है जिनकी हिफ़ाज़त बमूजिब अ
हदनामों के सरकार के जिम्मे है सरकार इन सब रयासतों
से खिरनी और फौज खरच लेती है और उसके अजंट
उस जिम्मेवारी के वाजे कामों की खबर रखने और सरह
दी झगड़ों बखेड़ों का फैसला करने और गैर इलाके के
चोरों और धाड़ेतियों के पकड़ने और पता लगाने के वा
स्ते रहते हैं उनको रयासत के अंदरूनी मामलों और खा
नगी बातों में दखलअंदाजी का अख़्तियार नहीं होता इस
किस्म के कई कई अजंटों पर एक अफसर आला होता है
जिसको रज़ीडंट कहते हैं जैसे राजपूताने की रयासतों का
रजीडंट आबू के पहाड़ पर और सेंट्रल इन्डिया की रयास
तों का रजीडंट इंदोर में और गुजरात की रयासतों र
जीडंट बड़ोदे माही कांटे और राजकोट वगैरा में और हैदरा
बाद का रजीडंट सिकंदराबाद में और बुंदेलखंड का रीवां
में और कशमीर का श्रीनगर में रहता है ॥ ....

मुल्क खुदमुख्तार वह है कि जो न सरकार को खिर
नी देता है और न फौजखरच, जैसे नैपाल का राज और
भोटान की रयासतें अगरचे वहां भी सरकारी रजीडंट-
और अजंट रहते हैं मगर उनमें और ऊपर लिखे हुओं-

रजीउंदों में बड़ा फरक है:-

मुल्क गैर उनके इलाकों से मुराद है कि जो समंदर के किनारों पर फरासीसी पुर्तगेज और डच वालों के कब्जे में हैं उनमें कानून कायदे उन्हीं सल्तनतों के जारी हैं जिनसे वे इलाके मुताल्लिक हैं सरकार को सौदागरी के सिवाय उनमें और किसी किस्म का इख्तियार हासिल नहीं है-

मुल्क मकबूजा हिन्दुस्तान के उस बड़े हिस्से से मुराद है जिसमें सरकार अंगरेज का अमल दखल है और उसके सूबों में बड़े बड़े अंगरेजी हाकिम मिस्ल, नवाब लफटेन्ट गवरनर बंगाल और नवाब लफटेन्ट गवरनर मुमालिक मगरबी और शिमाली और नवाब लफटेन्ट गवरनर पंजाब और नवाब गवरनर बम्बई और नवाब गवरनर मंदरास और चीफ कमिश्नर नागपुर और चीफ कमिश्नर आसाम और चीफ कमिश्नर अवध और चीफ कमिश्नर सिंध सरकार के जारी किये हुये कानूनों के मुवाफिक हुकूमत करते हैं इन सब हाकिमों और कुल रज़ीउन्दों का हाकिम बाला जो गवरनर जनरल कहलाता है मय अपनी कौन्सल के कलकत्ते में रहता है उसको मलिका महाराणी साहिब की तरफ से हिन्दुस्तान के मुल्की और जंगी हुकूमत का पूरा अखतियार है यहां तक कि किसी छोटे से जिले में भी बगैर उसकी मंजूरी के किसी किस्म का नया कानून या कोई नया हुक्म जारी नहीं हो सकता और इतना उरूज अख्तियार होने पर वह भी-

सरकारी कानूनों और हुक्मों का ऐसा पाबंद होता है कि कोई काम कानून के खिलाफ नहीं कर सकता सरकार अंगरेज यहां तक मुनसिफ़ और रहमदिल है कि उसने अपनी रईयत को पूरी आज़ादी दे रक्खी है और अगर कभी कोई काम ख़िलाफ़ दस्तूर सरकार के किसी हिस्से के हाकिम आला चीफ़ कमिशनर से लेकर खुद नवाब गवरनर जनरल तक हो जावे तो रईयत उस पर एतराज कर सकती है आपकी रयासतों का सा दस्तूर नहीं है कि राजा ने जो चाहा सो किया उसमें चाहे किसी का बुरा हो या भला रईयत में से किसी को चूं करने का अखतियार नहीं अगर झूट भी कह दे कि फलाना आदमी राजा के हुक्म को बुरा कहता है तो फ़ौरन उसकी खबर ले डालते हैं

सरकारी हर ज़िले या किसमत में दो दो हाकिम आला रहते हैं जिनको साहिब कलकटर और साहिब कमिशनर कहते हैं कलकटर के ताल्लुक तहसील व खजाना और मुकदमात ज़मींदारी और माल के फैसले का अखतियार है और कमिशनर दीवानी फ़ौजदारी का काम करता है इसी तरह उनके कानून भी जुदे जुदे होते हैं

सरकारी हकूमत का यह मुख़तसिर ज़िक्र करके माल के कानूनों से हिदायतनामा मालगुजारी और दीवानी कानूनों में से एक्ट १४ और फ़ौजदारी कानूनों में से एक्ट २५ सन १८६१ ई॰ और एक्ट ४५ सन १८६० का कुछ

खुलासा अपनी याददास्त के माफिक पढ़कर सुनाया
जिसको सुनकर मजलिसवालोंने एकजबान होकर अं
गरेजोंकी दानाई अकलमंदी होशयारी और खबरदा
रीकी बहुत तारीफ़की जिनमेंसे बाजोंने एकट ४५ या
नी मजमूऐ ताजीरात हिंदमेके ईजाले हेसियत उरफी
यानी हतक इज्जतके दफों और उसकी मुसतसनिया
त यानी साधारणी छूटको दुबारा सुना और उनमें बड़ी
गौरकी जिसका सबब उस वक्त मेरे खयालमें यह आ
या कि आजकल जो अकसर अखबारवाले बदइन्त
जामीकी खबरोंमें राजपूतानेके रईसोंकी बुराई छाप
दिया करतेहैं और बाज़े वक्त यह बुराई सिर्फ़ अदावत
की नज़रसे जो बाज़े अखबारनवीसोंको किसी रईस
से उसका अखबार नः लेने या वापस करदेनेसे होजा
तीहै इसी सबबसे शायद यह लोग इजाले हेसियत उर
फ़ीके दफोपर गौर करते होंगे कि हम उन सूरतोंमें अ
खबारवालोंपर नालिश कर सकतेहैं या नही
५६ चूंकि नवाबसाहिब टोंक उस जलसेमें अहल इसला
म और सुन्नी मुसलमान थे इसलिये मैंने अंगरेजी का
नूनोंका खुलासा बयान करनेके बाद शरै मोहम्मदीके
असूल बयान किये अगर नवाबसाहिब मिसल राजपू
तराजोंके अपने इलम फ़िका यानी धर्मशास्त्रको दिल
लगाकर सुनते तो मैं और भी जियादा उसका बयान कर
ता लेकिन फिर भी राजपूतसरदारोंके खुश होनेसे मुझको

शरे मोहम्मदी के असूल बयान करने का फल मिलगया था जिन्हों ने, तौहीद, ज़कात, और तकसीमे तरका, यानी आस्तिकपने दान पुन्य दायभाग के मसलों को बहुत पसंद किया। और महारावराजा साहिब बूंदी ने मुसलमानों के इल्म तसव्वुफ यानी वेदान्त के मसलों और मनसूर वगैरे सूफ़ियों के अहवाल को दिल लगा कर सुना और पसंद किया -

५७ गरज़ कि अंगरेजी और मजहबी कानूनों के खुलासों को सुनकर राणाजी और महारावराजा साहिब बूंदी ने फ़रमाया कि हम तुम्हारी लियाकत और कामों की वाकफी से खुश होकर भरोसा करते हैं कि हमने जिस काम के लिये तुमको बुलाया है तुम उसमें अच्छी तरह से बातचीत कर सकोगे नवाब साहिब टोंक ने फरमाया बातचीत करना कैसा अगर इनसे किसी काम में मदद मांगी जायगी तो अपने इल्म और अकल की ताकत से उमदा तौरपर दे सकेंगे

५८ मैंने इस सरदारगी और महरबानी का शुकरया अदा करके अरज़ की कि मैं यह तो नहीं कह सकता कि हरएक सलाह और मशवरे मैं उमदा ही राय दूंगा या हर काम में पेश लेजाऊंगा मगर यह जरूर है कि जिस अमर में मुझसे पूछा जायगा मैं अपने मक़दूर और लियाक़त के माफ़िक जो सलाह मुनासिब और फायदामंद लायक ऐसी बड़ी कचेहरी के होगी और जिससे आप साहिबों

को बहुतरी और नामवरी मय फायदे आम रईयत के पैदा
होगी अरज करूंगा

यह सुनकर राणा साहिब ने फरमाया कि मेरी सम
झ में राजपूताने का इन्तजाम दिन २ बिगड़ता जाता है
यहां तक कि बाज़ी बाज़ी रयासतों की अबतरी और
बेबसे बस्ती की शिकायत अंगरेजी सरकार तक प
हुंची और सरकार को उन की हालत पर अफसोस है औ
र अंगरेजी अखबार नवीस राजपूतों को राज काज में
बिलकुल कच्चा ठहराते हैं मैं जानता हूं कि इस गफल
त और बेपरवाही का नतीजा जो आज कल मेरे बहुत
से भाईयों से जहूर में आरहा है एक दिन ऐसा बुरा अ
सर पैदा करेगा कि सरकार को हम में से किसी एक के ऊ
पर भी भरोसा न रहेगा और आखीर पर यह होगा कि सर
कार के हुक्म से अलवर और कोटे का सा इन्तजाम सब र
यासतों में जारी हो जावेगा और कुल रईस मुंह देखते ही
रह जावेंगे इसलिये मैं चाहता हूं कि हम सब मिलकर र
यासतों के इन्तजाम के वास्ते कुछ ऐसे क़ायदे मुकर्रर
कर लेवें कि जिनसे कुल राजपूताने का इन्तजाम एक ही
नमूने पर बहुत जलदी और आसानी के साथ हो जावे-
और उसके ज़रये से अंगरेजी सरकार जो हमारी शिकायतों
को सुनते २ थक गई है हमसे खुश और राज़ी होकर इनाय
त और महरबानी फरमावे इन सब भाईयों को एक जल
से में जमा करने से मेरी सिर्फ यही गरज थी और मैं अपने

रानी सेकरती है या किसी गाफिल और ऐयाश रईसको राजकाजसे बिलकुल बेखबर रहने और सरकारी हुक्मोंकी देसतानानकी हतों और सलाहमशवरोंके कबूलन करनेसे दिक होकर किसी एक शख्स को उसी रयासतके ओहदेदारोंमें से या अजंट को ही इन्तजाम रयासतके लिये मुकर्रर करदेती है तो इसमें क्या बुराई है और जौन ऐसी बात है जो आपकी आज़ादी खुदमुख्तारी या अहदनामेकी शरतोंमें खलल डाले या उससे आपके मुल्क और मालका कुछ नुकसान हो बल्कि जो मुनसिफी करो तो हरसूरतसे फायदा ही है

देखो अलवरमें आगे राजासाहिबके मरने पर जो पांच बरसके करीब अजंटी रही तो वहांका इन्तजाम कैसा दुरुस्त हो गया था और जब यह राजासाहिब बालिग हुये और अजंटी बरखास्त हुई तो १४ या १५ लाख रुपै जो अजंटने खज़ानेमें जमा किये थे वे सब इनको मिले इसी तरह जयपुर, भरतपुर, उदयपुर, और टोंक, वगेरे के रईसोंके होश संभालने तक अजंटी का अख्तियार रहा है फिर कोई कह तो दे कि उससे रईयत या रईसको कुछ नुकसान पहुंचा या कोई बेजा दस्तंदाजी ऐसी हुई कि जिससे बाज़े साहिबोंकी इस बेजा शिकायतकी तसदीक हो सके और यह तजवीज़ भी सरकारने जब जारी की थी कि किसीकी तरफसे उसके होने में इनकार औ नाराजी नहीं पाई बल्कि इसकी बुनयाद सिर्फ रयासतों

कीतरफ से दरख़ास्त गुजरने पर कायम हुई जैसा कि
६४ जयपुर की तवारीख से ज़ाहिर होता है कि जब यह महा
राजा साहिब बच्चे थे और राज के ओहदेदार और भाई
बेटे अपने फ़ायदे के लिये राज को अपने काबू में करने
के वास्ते आपस में झगड़ते थे और माजी साहिब का हु
क्म नहीं मानते थे तो उन्हों ने तंग होकर सरकार में रया
सत की निगरानी की दरख़ास्त गुज़रानी और वह
मौका भी ऐसा ही था कि अगर अजंटी न हो जाती तो व
हां रयासत के अख़्तियारात को हासिल करने के लिये
बड़े २ झगड़े और बखेड़े उठ खड़े होते और यह १००० ब
रस का खानदान बहुत कमज़ोर हो जाता क्योंकि ओहदे
दार अगले राजा को तो जवान होजाने के जुर्म में मार ही
चुके थे अब खुद मुख्तारी की चाट से इन महा राजा
साहिब को भी जवान नहीं होने देते वहां के बंदोबस्त
और काम संभालने में जैसी कुछ मुश्किलें और दिक़
तें अजंटों को आगे आई हैं वे किसी दूसरी रयासत में
कम पेश आई होंगी आखिर अजंटी का इन्तज़ाम का
मयाबी के साथ कायम हुआ और उससे रयासत ज
यपुर को तरह २ के फ़ायदे पहुंचे उन में से एक यह है
कि अहदनामे में अव्वल यह शर्त दर्ज हुई थी कि रया
सत जयपुर सरकार को ८०००००) सालियाना कर दिया
करेगी और जब उसकी आमदनी ४००००००) साल से
बढ़ जावेगी तब ८०००००) के सिवाय बेशी आमदनी बढ़ोती

के १६ हिस्सों में से ५ हिस्से औरभी देने पडेंगे॥

अजंटी के ज़माने में साहबान अजंटों की मेहनत और कोशिश से ऊपर लिखी हुई शर्त की मोकूफ़ी के बाद ४००००० सालियाना मय ४०००००० बाकी के माफ़ होकर सिर्फ ४०००००० हमेशा के लिये रयासत के जिम्मे रह गये अगर वह शर्त मनसूख न होती तो आज महाराजा साहिब बहादुर को ११२५००० सरकार में देने पड़ते क्योंकि अब उनकी रयासत में ५०००००० रुपये बैठते हैं इसी तरह अलावे और बहुत सी तरक्कियों के रयासतों की आमदनी भी उसी वक्त से बढ़ना शुरू हुई है जैसा कि सन १८३८ ई॰ में जब मेजर रास अजंट होकर वहां गये थे तो रयासत की कुल आमदनी २४५०००० के करीब थी और जब सन १८५१ ई॰ में महाराजा साहिब को अख़्तियार दिया गया तो ३२५०००० रुपये तहसील होने लगे थे॥

६५ पस इसी तरह से दूसरी रयासतों के लिये भी सरकारी तौर से इन्तज़ाम के क़ायदे ख़याल किये जा सक्ते हैं और जो कि अकसर साहिबों ने यह फ़रमाया है कि अंगरेज अहदनामों के ख़िलाफ़ कारखाई करचले हैं जिनमें उन्होंने अपनी दीवानी और फ़ौजदारी के इन्तज़ामों को रियासतों में दाख़िल न करने का इकरार कर लिया है इस लिये मैं उन साहिबों को कि जिनकी रयासतों में कई कई बरस तक अजंटी का इन्तज़ाम रहा है यह सवाल करता हूं कि अजंटी के ज़माने में तुम्हारी रयासतों

की आमदनी से एक कौडी भी कभी सरकार के खज़ाने
में दाखिल हुई है या कभी कोई मुकदमा दीवानी फ़ौज
दारी या सीगे माल का सरकार के किसी कानून की
रू से फैसल हुआ है या तुम्हारी रियासतों में नवाब ग
वर्नर जनरल बहादुर ने कभी कोई हुक्म या कानून ल
गा या किसी किस्म का तरद्दुद अपने मक़बूज़ा-
मुल्कों के मुआफ़िक जारी किया है =

६६ इसके जवाब में सबसे पहिले राणाजी ने फ़रमाया
कि नहीं और फिर जयपुर के महाराजा साहिब ने भी इनका
र किया और राव राजा साहिब अलवर चुप हो रहे मगर न
वाब साहिब टोंक ने फ़रमाया कि हमारी रियासत में सर
कार का अजंटी रही लेकिन कोई हुक्म अजंट ने खिलाफ़
हमारी शरे और खानदानी रिवाज के जारी नहीं किया अ
गर सरकार हमारे बाप को गद्दी से उतारने के बाद हमा
री रियासत के इन्तज़ाम के लिये अजंटी मुकर्रर न कर
ती सो हमको बड़ी मुश्किल पड़ती क्योंकि उस वक्त
अकसर हमारे खानदान वाले खुद मुख्तियार हो जा
ने को तईयार हो गये थे =

६७ फिर मैंने कहा कि यह जो अलवर के राजा साहिब
फ़रमाते हैं कि अगर हम इन्तज़ाम करेंगे तो अपने
वास्ते और न करेंगे तो अपने वास्ते अंगरेजों को
उसकी पूछताछ करनी चाहिये कि इनको अहद
नामों की रू से यह अख्तियार नहीं है =

इसका जवाब यह है कि परमेश्वर महाराज ने जो हिंदुस्तान की हकूमत हिंदुस्तानियों से छीनकर अंगरेज़ों को दी है कि वे इनसाफ़ करें और रईयत को लूट मार और ज़ुल्म के सदमों से बचाकर अमन में रक्खें कुछ इस वास्ते नहीं दी है कि तुम्हारी रयासत में तो गरीबों पर तरह तरह का ज़ुल्म हुआ करे और वे अहदनामें की पाबंदी से पूछें भी नहीं वाह आपकी क्या अच्छी समझ है अंगरेज़ी सरकार जो मिसल अगले बादशाहों के आप लोगों से कुछ काम खिदमत नहीं लेती है तो क्या यह इस तह का हक़ भी नहीं रखती कि हाकिम आला होकर देखता ना नसीहत भी न करे या तुम्हारी बेजा कारर वाई और नाइनसाफ़ियों का तुमसे जवाब न पूछे आख़िर उससे भी तो बड़े हाकिम यानी परमेश्वर को जवाब देना है जैसे तुम अपने खुद मुख्तियार जागीरदारों मिसल भीमराओ वगैरः पर हकूमत का हक़ रखते हो वैसे ही यह तुम पर भी रखती है अगर तुम ऐसे काम न करते कि जिससे तुम्हारी बदनामी हुई और रईयत और भाई बेटे तुमसे फिर गये तो सरकार क्यों तुम्हारी रयासत में अजंट को दस्तंदाज़ी का हुक्म देती उसको तुमसे अदावत थी राजा साहिब इस हालत में भी तुमको सरकार का शुक्र करना चाहिये कि तुम्हारी जान बच गई नहीं तो भाई बेटों को खुद तुमने भी और अपने मुंशी मुसलमान मुसाहिबों से भी ऐसा तंग और बे इज़्ज़त करवाया था कि अगर सरकार अंगरेज़ी का डर न होता

तो दूर न था कि उन लोगों में से कोई ग़ैरत दार शख्स अप
नी जान पर खेल कर तुम्हारी खबर लेता अलता मैं इस बा
त के सबूत के लिये बहुत सी मिसालें दे सक्ता हूं ॥

६८ बूंदी के राव राजा साहिब ने फ़रमाया कि वह मजलिस रा
जपूतों की है और बहस भी उन्हीं के आम्म जात में हो रही
है अगर तुम इसमें किसी ग़ैर कौम की तवारीख की मि
साल दोगे या दलील लाओगे तो सुनी न जायगी मैंने
कहा कि आपने बहुत अच्छी बात फ़रमाई मुझे भी प
हिले से इसका खयाल था अब आप दूर न जाइये अप
नी ही तवारीख में देख लीजिये कि जब राव सूरजमल
के बेटे राव सुरताण ने अपने भाई बेटों को तरह २ से स
ताया तो उन्हों ने राव मज़कूर को जलावतन करके सुर
जनजी को चीतोड़ से लाकर गद्दी पर बैठाया या नहीं उन्हों
ने कहा हां सच है और भाई बेटे मिल कर जिस बात के वास
ते ज़िद्द करते हैं वह होकर रहती है नहीं तो बड़ा फ़साद उठ
खड़ा होता है और सरकार की तरफ़ से भी हर रईस को ग
द्दी नशीनी के वक़्त यही ताकीद की जाती है कि तुम अ
पनी रईय्यत फ़ौज और खानदान को खुश रखना जिस
से तुम्हारी रियासत मज़बूत होकर तरक्की को पहुंचे ॥

मैंने कहा कि सिपाह खानदान और रईय्यत ये ती
नों जभी नाराज होते हैं कि रईस उनके साथ बदसलू
की करता है अगर राव राजा साहिब अव्वल अपने भाई
बेटों की नाहक दिलशिकनी नहीं करते तो वे काहे को

बिगड़ कर सरकार में फरयाद करते और क्यों यह नौबत प
हुंचती बड़े लोगों ने कहा है कि आदमी अपने दोस्त औ
र दुश्मन आपही पैदा कर लेता है और फिर आपही उन
की बुराईयें और शिकायतें करने लगता है ॥

६९ और यह जो कोटे के महाराव जी फ़रमाते हैं कि सरका
र ने हमारे अहद नामे में लिख दिया है कि रयासत कोटे के
अन्दरूनी इन्तजामों में कभी दस्तंदाजी नहीं होगी औ
र अब बरख़िलाफ़ इसके रईसों को गद्दी से उतार ने
की नीयत से इन्तजाम रयासत का तक़ाज़ा कर के इस बात
८ पर मजबूर करती है कि वे ख़ुद सरकार में अपने राज का
बंदोबस्त करने को दरख़्वास्त गुज़रानें सो महाराव जी
की इस तक़रीर से पाया जाता है कि वे सरकार की इस
मुदाख़लत को जो उसने एक हिंदुस्तानी अफ़सर
को मुकर्रर करने से रयासत कोटे में की है बरख़िला
फ़ अहद नामों के ख़याल करते हैं पर यह हरगिज़ ख़ि
लाफ़ अहद नामे के नहीं हो सक्ती है और इस का जवा
ब मैं अव्वल दे चुका हूं और यह समझना कि सरकार
का इरादा इस मुदाख़लत से रईसों को बेदख़ल और
मौक़ूफ़ करने का है सरासर बे समझी है क्यों कि अव्वल
तो सरकार ख़ुद मुख़्तार रयासतों में जब तक कि उन
का इन्तजाम दुरुस्त रहे दख़ल देती ही नहीं है बल्कि अब
तरी और बे इन्तजामी पड़ जाने पर भी बहुत दिनों तक
दरगुज़र कर के रईस को समझाती रहती है कि अपनी

रियासत के इन्तज़ाम से गाफ़िल न रहे मगर जब देख
ती है कि कोई उसकी फ़ेमायश नहीं मानता और अ
बतरी रियासत की रफ़्ते रफ़्ते हद को पहुंच गई तब
लाचार मुल्क की मसलिहत और फ़ायदे आम की न
ज़र से उस रियासत की सिर्फ़ निगरानी अपने ज़िम्मे
ले लेती है ताकि अबतरी का बंदोबस्त होकर आयंदा
के लिये दिलचाहा बंदोबस्त हो जाय और यह कभी-
न हुआ कि सरकार ने इस किस्म की निगरानी में अ
पने आईन कानून और रस्म रिवाज को उस मुल्क
के अंदर दाख़िल किया हो और रईसों के बेदख़ल क
रने की शिकायत भी वाजिब नहीं है क्योंकि उसके
सिवाय मोहम्मद अलीख़ां साहिब रईस टोंक के-
आजतक किसी रईस को गद्दी से नहीं उतारा है राव
राजा साहिब अलवर ने खुद ही ज़िदकर के एजंट के
इत्तफ़ाक़ से काम करना मंज़ूर नहीं किया और हा
थ खेंच कर बैठ गये नहीं तो सरकार से ऐसा हुक्म न
हीं है और न कोटे के महारावजी को माज़ूल और बेद
ख़ल किया है अगर ये अपनी मामूली सुस्ती से अल
ग होकर बैठ जावें तो यह बात ही दूसरी है नहीं तो ये उ
स अफ़सर से मिलकर अपने साहिब के काम लेने
का अख़्तियार रखते हैं –

महारावजी ने कहा यह अफ़सर हमारा कहना क्यों
मानेंगे। जो आप को सरका आदमी समझ कर हमसे ख़

हराकरी का दावा रखता है और सरकार को हमारा खयाल
नहीं अगर खयाल होता तो क्यों ऐसा करती मैंने कहा
सरकार को जैसा आप का खयाल है वैसा किसी रईस
का नहीं क्यों कि आपकी रयासत में एक मुद्दत से बदइंत
जामी बढ़ती जाती थी और आउस का बंदोबस्त सरका
र की बार बार फ़ेमायश और नसीहत करने पर भी मुस्तै
द होकर नहीं करते थे आखिर जब यह नोबत हुई कि आ
पकी रयासत की आमदनी घटते घटते सिर्फ़ १८०००००
रुपैये के करीब रह गई और करज़ा १००००००० के करीब होग
या जिसका बंदोबस्त आपसे और आपके ओहदेदारों
से नहो सका तब सरकार ने यह समझकर कि अगर यही
हालत दो चार बरस और रहेगी तो रयासत कोटा बिलकु
ल बरबाद हो जावेगी एक शख्स के इन्तज़ाम के लिये मु
करर कर दिया अब उसके इन्तज़ाम और सरकार की नि
गरानी से जिस क़दर करज़ा अदा होगा उससे आ
पही हलके होंगे और आमदनी में अगर एक पैसा भी बढे
गा तो आपही के खजाने में जमा होगा पस इसमें क्या नु
क़सान हुआ और क्यों कर आपने कहा कि सरकार को हमा
रा खयाल नहीं है अगर खयाल न होता तो क्यों आपकी
रयासत को संभालती और भी बिगड़ने देती दूसरे उस
अफ़सर के मुकर्रर होने से आपके हक़ अख्तियारात राज
गी में कि सरकार जिसकी ज़िम्मेवार अहदनामों की रूसे
है क्या फ़रक पड़ा यह सुनकर महाराव साहिब चुप होगये

मगर मैंने फिर कहा कि आपके दिलमें और भी कोई शक
सरकारकी तरफ़ से रहगया हो कि तो फरमाइये और आप
ने आपको हरगिज़ बेदखल नहीं समझिये कि आप हरगि
ज़ हरगिज़ बेदखल नहीं हैं अगर इसमें कुछ शक हो तो
उनको अंगरेज़ी हाकिमोंके रूबरू भेज दीजिये मैं उन
से इस बारेमें बख़ूबी तुफ़सील करके आपकी तसल्ली
कर दूंगा-

७१ महाराजजीने इसका जवाब तो न दिया मगर यह फ़र
माया कि सरकारने पाटण को जुदा करदेनेमें इस बनु
नम किया नहीं और अब पाटणवालोंको जानशीनी
के लिये गोद लेनेकी इजाज़त बरखिलाफ़ अहदनामे
के देकर हमारी हक़तलफ़ी की है या नहीं मैंने कहा कि
पाटणके अलहदा होनेकी जो शिकायत है वह तो अब
कुछ नतीजा पैदा नहीं कर सकती मगर महाराजा पाटण
को गोद लेनेकी इजाज़त देनेमें आपका गिल्ला अलबत्ता
वाजिब और काबिल गौर करने सरकारके है लेकिन इस
बारेमें आपकी तरफ़ से उज़रदारी उसी वक़्त होनी चाहि
ये थी जब कि पहिले सरकारने महाराजा पाटणको सनद
गोद लेनेकी दी थी यह चाल आपसे बहुत बड़ी रहगई-
और फिर जब महाराजा ने दूसरी दफ़े गोद लेनेके मुकद
मेको छेड़ा तो उस वक़्त भी आपकी तरफ़ से उज़रदारी
तो हुई मगर उसकी माकूल पैरवी न होसकी अगर आ
प इस मुकदमेमें सवाल जवाब करने के लिये किसी

जबरदस्त क़ानून जानने वाले और हाज़िर जवाब वकी
लको मुक़र्रर करते तो यह मुक़द्दमा हल्ल पकड़ कर महारा
जाको इस क़दर जल्दी के साथ कामयाब न होने देता
और शायद कि कामयाबी न होती ॥

७२ यह सुनकर महाराजा साहिब पाटण ने फ़रमाया कि आप
इस मुक़द्दमे में क्या दलील रखते हैं और कौनसी वजूहात
से सरकार के फ़ैसले को गैर वाजिब ठहराते हैं मैंने कहा कि
इसकी बहुत दलीलें हैं मगर अब उनके ज़ाहिर करने का
मौक़ा नहीं रहा फ़रमाया कि जब मैं आया तो उस वक़्त क्यों
नहीं महारावजी की ख़ैरख़्वाही की मैंने कहा कि अव्वल तो
मैं महारावजी से कुछ वास्ता नहीं रखता दूसरे इस मुक़द्द
मे का हाल मुझको उस वक़्त मालूम हुआ कि सरकार
के हुक्म आख़ीर की नक़ल मेरे पास पहुंची अगर पहिले से
कुछ मालूम होता या महारावजी की तरफ़ से कुछ तहरी
क मेरे निस्बत होती तो ज़रूर मैं इसमें उनको काफ़ी स
लाह देता और अब भी अगर होम गवरनमेंट में अपील
किया चाहें तो उसमें गुफ़्तगू की बहुत कुछ गुंजाइश बाक़ी है ॥

महाराजा पाटण ने कहा अच्छा अपनी दलीलों की कु
छ मुख़्तसर तो बयान करो मैंने कहा अव्वल यह है कि यह
रस्मों की रूसे पाटण की विरासत आपके गोदनशीन को
नहीं पहुंच सकती उन्होंने फ़रमाया अफ़सोस है कि तुम रा
जपूतों की तवारीख़ और दस्तूरों से वाक़िफ़ हो कर भी ऐ
सा कहते हो कि गोद लिये हुये लड़के को रियासत नहीं ^

^ पहुंच सकती मैंने कहा कि आप गोद बैठने वाले को नहीं

सुन ली उन्होंने कहा कि हमारे गोद लिये हुये लडके ने क्या कसूर किया है और क्या वर ख़िलाफ़ कानून राजपूतके है मैंने कहा कानून राजपूतके तो खिलाफ नहीं मगर उस अहदनामे के खिलाफ अमल हुआ है जो बर वक्त अलहेदा होने आप की रयासत के हुआ था और जिस में यह शर्त थी कि यह मुल्क राजराणा मदन सिंघ और उनकी औलाद को दियाजाता है जो राजराणा जालम सिंघ की नसल से हों महाराजा पाटन ने कहा कि जालम सिंघ की नसल को कैद महारावजी ने कब लगाई थी मैंने कहा अगर महारावजी ने नहीं लगाई थी तो सरकार अंगरेजी ने तो लगाई थी जैसा कि अहदनामे १० अपरेल सन १८३८ ई० की कलम २ में जो आपके बापके और सरकार अंगरेजी के दरमियान हुआ था साफ लिखा है कि सरकार अंगरेजी कोटे के महाराव राम सिंघ की मंजूरी हासिल करके राजराणा मदन सिंघ और उसके वारिस और जानशीनों को जो राजपूतों की रीत रिवाज के मुवाफिक जालम सिंघ की औलाद से हों रयासत कोटे से एक अलहेदा रयासत जिस के परगनों की तफसील फरद में अलहेदा लिखी है इनायत करती है

हमने यह माना कि राजपूतों के कानून में गोद लिया हुआ बेटा विरासत और हकदारी में मिसल असली बेटे के होता है मगर यहां जालम सिंघ की औलाद

कीक़ैदलगादेना आपके गोदलियेहुये लड़केको र
यासत पाटणकी विरासत सेरोकनेवालाहै महारा
ज़ाने फ़रमाया किजबयह शर्त हमसे सरकारनेकीथी
तो अबसरकारने ही हमको गोदलेनेकी इजाज़तदेक
रहमारे कौविरासत और जानशीनी के हक़ इनायत फ़र
मादिये हैं मैंने कहा सरकारने जो शर्तकीथी तो अज
ब नहीं कि उसवक्तरयासत कोटे से इस बारेमें कुछ
न कुछ गुफ़्तगू हुई होगी क्याहुआ अगर महाराव
जीने अपने अहदनामेमें उसका जिक्र नहीं किया अ
गर उनको यह हक़ पहुंचता है कि जब सरकारने
उसरयासतकी विरासत जो सिर्फ़ जालमसिंघ की
औलाद केही वास्तेथी आपके गोदनशीन को जो जा
लमसिंघकी नसलसे नहीं है इनायत फ़रमाई तो उ
सवक्त महारावजी की मंज़ूरी हासिलकरना ज़रूर
थी क्यों कि जैसे उसनेयह मुल्करयासतकोटे से अ
लहदा करके महारावजी की मंज़ूरी से आपके बाप
को ऊपर लिखेहुये अहदनामेकी कलम २ के मुआफ़िक़
क़ैद लगाकर दियाथा तो ऐसेही उसक़ैदके तोड़नेपर
भी महारावजी की मंज़ूरी लेना चाहिये था क्यों कि अ
गर सरकार उस शर्तकी पाबंदी से हठ करके आपको इजा
ज़त गोद लेनेकी नहीं देती तो आपके बाद आपकी औ
लाद न रहनेकी सूरतमें यह हिस्सा रयासतका महाराव
जीका हक़ होतायानहीं सरकारकोतो उन्होंनेनहीं दि

भाषा दियाती जालिम सिंघकीही औलादको घाशर्त उसकी चाहे सरकारकी तरफ सेहुई चाहे महारावजीकी तरफसे और अवलतो आपकी विरासत जो सरकारने बमूजिब तितम्मे अहदनामे सन १८१७ई. के रयासत कोटेमें क़ायमकी नाजायज है क्योंकि नोकरचाहे कित नीही नमक हलाली करे मगर वह हरगिज ऐसे मुसत क़िल हक़ विरासतका हकदार नहीं होता अगर उसकी यही वजह थी कि राजराणाजालमसिंघने अपने हुस्नइन्तज़ामसे रयासतकोटेको आला दरजेकी तरक्कीयों पर पहुंचाकर हर तरहकी आफतों से उसमरेहजारदी के जमानेमें बचाया था और उसके बदलेमें जालमसिंघने रयासत मज़कूर की कुलमुख्तारी के ओहदे को अपनी नसलमें मोरूसी करा देनेकी दरख्वास्त कीथी तो सरकारको उसमें किफालत (जामनी) देना नहीं चाहिये था महारावजी मुख्तार थे और अगर यह वजह थी कि ज़ालिमसिंघने पिंडारों पर लशकरकशी के जमानेमें सरकारको फोज और रसदवगैरे और अपनी नजरुबेकारी और उमदा सलाह मशवरे से बहेसियत मुख्तारकार होने रयासत कोटेके निहायत बहतर और मुस्तकिल मदद दीथी और सरकारनेभी उससे खुश होकर उन ख़िदमतोंका यह इनाम इनायत फरमाया कि उनको ऊपर लिखेहुये तितम्मे अहदनामे के मुजिब रयासत कोटे की विरासतमें दाखिल करके

आखिर तीसरा हिस्सा उनके पोते को दिलवा दिया तो इस सूरत में भी यह बखशिश बेजा थी क्योंकि यह इनाम सरकार पर वाजिब था न रयासत पर अगर कहिये कि सरकार ने तो उन खिदमतों के इनाम में पिंडारों का फिसाद मिटा देने के बाद ४ परगने देकर यह इरादा किया था कि उनका बखशिश नामा जालिमसिंघ के नाम लिखा जावे मगर उन्होंने मंजूर न करके वे चारों परगने रयासत में शामिल कर दिये तो इसका जवाब यह है कि बस सरकार अपने फ़र्ज़ से अदा हो चुकी थी और जालिमसिंघ अपने फ़र्ज़ से, ओहदे की विरासत की किफ़ालत देना सरकार को कुछ ज़रूर नहीं था जिससे रयासत कोटे में इस कदर (१) खराबियां पैदा हुई और वहां के रईसों को सरकार से हमेशे के लिये शिकायत रह गई :-

७३ इस तकरीर का जवाब महाराजा पाटण ने कुछ न दिया और न उससे कुछ नाराज हुये -

फिर मैंने कहा कि जो साहिब रयासतों के मोजूदा इन्तजाम को पसंद करते हैं उन को चाहिये कि इन्तजाम रयासत कोटे की तारीफ और पैरवी करें जिसकी आमदनी ३००००००/ से कम होते होते सिर्फ १६-१७ लाख के करीब रह गई है और करज १००००००/ के करीब होग

(१) देखो उन लड़ाईयों को जो इसी शर्त के ऊपर महाराज किसोर सिंघ और जालिमसिंघ के आपस में हुई और जिनका हाल तवारीख टाड राजस्तान और सैरुलमुताखरीन(?) शाम में हालात रयासत कोटा के साथ मुफस्सिल दर्ज है -

याहै सिपाह के १७-१८ महीने चढगये हैं और अहलका
र रईयत और गरीबों को लूट खसोट कर अपना काम
चलाते हैं बाकी लोग भूखे भूखे पुकारते फिरते हैं महा
रावजी के ओहदेदारों और सलाहकारों को खिलअत
और शाबाशी देना चाहिये जिन्होंने अपने फ़ायदे
के लिये सच्ची बात को और इन साफ़ को पोशीदा रक्खा
है और जब कभी किसी अमर की हकीक़त महारावजी
ने उनसे दरयाफ्त की उन्होंने बहाना बाज़ी से उनको
समझा दिया। जैसा कि सन १८७२ में करनेल जी, सी, बु
रूक साहब बहादुर रज़ीडंट राजपूताना ने रयासत को
टे की बदइन्तज़ामियों से नाखुश होकर महारावजी को
लिखवाया। कि आपकी रयासत करजदारी और तरह
तरह की अबतरयों से मिस्ल उस टूटी हुई नाव के हो र
ही है जो भंवर के करीब पहुंच गई हो अगर उसके बचा
नेकी कुछ तदबीर नः करैं तो डूब जावे इसी तरह अगर
आप अपनी रयासत के कामों को नः संभारेंगे तो व
ह बिलकुल बिगड़ जावेगी कोटे के ओहदेदारों ने इ
स खरीते का मजमून महारावजी को इस तरह पर
समझा दिया कि अभी करनेल साहिब जो कोटे
में आये थे तो उनकी नाव मल्लाहों की गफलत से
भंवर में पड़ गई थी जौकि अंगरेज लोग बेमुरव्वत होते
हैं और जलदी से खफ़ा हो जाते हैं इस लिये साहिब
बहादुर मौसूफ़ने इतनी जरासी बात का गिल्ला हजूर

को लिक्खा है सो इसका जवाब यह है कि जब कभी
फिर साहिब बहादुर मोसूफ़ कोटे को तशरीफ़ ला
वेंगे तो उनके लिये बहुत उमदा नाव तेज़ दी जावे
गी और मल्लाहों को ताकीद करदेंगे कि उनको ब
डी होशयारी से चंबल उतार देवें यह सुनकर महारावजी
ने फ़रमाया बहुत अच्छा - . . . .

इस बात से तमाम लोग महफ़िल के खूब हंसे मैंने क
हा हंसी की बात नहीं है राजस्ताने में हमेशा ऐसा ही होता
है और रईस लोग जो सरदारी के घमंड से खुद काम कर
ने को ऐब समझते हैं अपने ओहदेदारों के दबाव में रह
ते हैं राजस्थाने के कामदारों को पूरे पूरे अख़्तियार क़दी
म से मिलते आये हैं मगर जब कभी कोई होशयार और
सयाना रईस हुआ तो कामदार ने अपनी हद से जियाद
पांव न फैलाये और खास २ काम बगैर उसकी इजाज़त के
न किये और जो ऐसा न हुआ तो जाहिर है कि वज़ीर बाद
शाह बन जाता है और बादशाह मिसल बादशाह शतरंज
के उसके हाथ में होजाता है कि जिधर चाहा उधर रास्ते
पर लगा दिया यह ज़रूर है कि सब कामदार एक से नहीं
होते बाज़े ईमानदार खैरख़्वाह और लायक भी निकल
आते हैं मगर बहुत थोड़े जैसे पंडित शिवदीन मुसाहिब
राज जयपुर और राज राणा जालिमसिंघ मुख़्तियार
रियासत कोटा महाराजा साहिब पाटण के दादा (१) जिन
की होशयारी और खबरदारी और खुश इन्तज़ामी की तारी

(१) इन दोनों नामी मुसाहबों की काररवाइयों से हमको पूरी वाकफ़ी है

फेतवारीख राजपूतानेमें बहुत कुछ लिखी हुई हैं और साह
बजादे[२] अबेदुल्लारवां साहिब नायब रयासत टोंक, और
कोई कोई अहलकार ऐसेभी होते हैं कि दगा फरेब और
लोभ लालचसे अपने मालिक का घर उजाड़ देते हैं जै
साकि जैसलमेर के पिछले कामदार जालिम सिंघने
कियाथा कि रावल मूलराजके भाई और बेटे भी उसके
जुलम से नहीं बचेथे और खुद रावलको उसने नजर बंद
कर रखाथा = ...

राजपूतानेमें नायबको इसकदर अरिव्तयार मिलजा
नेके कई सबबहैं जिनमेंसे १ यह है कि जिसको किसी र
यासतकी नायबी मिलती है उसको उसके साथही तमा
म छोटे बड़े काम करने का अरिव्तयार मिलजाता है और
उसका हुक्म रईयत सिपाही और रईसके घराने पर चल
ने लगता है जिससे सब लोग उसके ताबेदार होजाते हैं
अगर कोई हुक्म अदूली करेभी तो सजा पावे और जो र
ईस से उसकी बेजाबतणीयोंकी शिकायत करे तो वहां
किसको ध्यान और ऐश आरामसे कहां इतनी फुरस
त कि उन बातोंको सुने और समझे और तहकीकात कर

और उसके वसीलेसे हम कह सक्ते हैं कि आमदनी या उनके इन्तजा
म से जयपुर और कोटे में हुई वैसी कभी नहीं हुई थी चुनांचे जयपु
रकी जमा पंडितजी के वक्त में ३३०००००) से ५००००००) तक बढ गई थी
और कोटेसे जालम सिंघने ५००००००) की तहसील ४५०००००) की कर
दी थी इससे ज्यादा और क्या सबूत उनके अन्तजामीका होगा =
(२) साहबजादे अबदुल्लाखां साहब . . . जपेशतर टोंक में नायब रया
सत थे उनके अहदमें बहुत सी . . . दुरस्ती और तरक्की हुई और रयासत
की आमदनी में भी फीसाल २५००० सालाना . . . इजाफा हुआ (१)

(१) यह साहिब अब फिर टोंक का काम करते हैं -

के तदारुक करें जिससे नायब को कान होजावें और
वह आइंदा दिलचाही हकूमत न करे ऐसे शख्सोंप
र दूसरी खराबी आती है और वे नायब के दुश्मन सम
झे जाकर जान और माल से जाते रहते हैं ॥

दूसरी वजह रईसों की बेइल्मी और ग़फ़लत है कि
रात और दिन बेफ़ायदा कामोंमें लगे रहते हैं और जो आ
जकल होशयार रईस कहलाये जाते हैं वे इतने ही हो
शयार हैं कि बाज़े वक्त अपनी नाज़ुक तबीअत पर द
बाव डालकर पहर छः घड़ी के लिये दरबार में बैठ जाते
हैं और जो हिसाब किताब अहलकार सुनाते हैं सुन ले
ते हैं या किसी मुकद्दमें की मिसल पढ़कर हुक्म अख़ी
र या फ़ैसले के लिये जैसा कुछ पढ़ा दिया जाता है वैसा
ही वे भी फ़रमाने लगते हैं कि इस मुकद्दमे में ऐसा कर
दो और फिर उनके कहने से कलम ज़बान उनका ग
ज़ों पर कुछ लकीरें कर देते हैं जिनको भी मिती या द
स्तख़त कहते हैं अगर किसी रईस ने बहुत ही बहुत द
ख़ल दिया तो यह किया कि ख़ास ख़ास और बड़े बड़े का
म अपनी मंज़ूरी पर रखकर छोटे कामों को अपनी तनदिही
के लायक न समझकर अहलकारों की राय पर छोड़ दि-
या: जिनमें बेज़ाबतगी और अबतरी पड़ते पड़ते बड़े बड़े
कामोंमें भी पड़ गई ॥

आजकल बाज़ी रियासतों में अंगरेज़ी सरकार की दे
खादेखी कौन्सल और पंचायत में भी रियासत की

काररवाई होने लगी है मगर उसमें भी अबतक कि खुद
रईस दिल लगाकर रात दिन उनके हालात और कार
रवाईयों को देखता न रहे तबतक उसको जैसा कि चा
हिये इन्तजाम का फायदा नहीं हो सकता बल्कि कई र
हाकिमों के होने में और भी ज्यादा खराबी है जैसा कि
जयपुर के लोग वहां रायल कौनसल के मुकरर हो
ने के बाद से कहने लगे हैं कि पहिले तो एकही बुरी गार
को देने से काम हो जाता था और अब आठ बुरी गा
डों को देते हैं और जब भी पूरा नहीं पड़ता =

यह सुन कर कई राजाओं ने फरमाया अच्छा सा
हिब हम बुरे हम गाफिल हमारा इन्तजाम बुरा हमा
री काररवाई बुरी जो कुछ तुमने कहा वह सब सही
मगर यह भी तो कहो कि तुम्हारी समझ में हमारी
रयासतों का इन्तजाम कौनसे तरीके से ऐसा हो सकता
है कि जो हमारे और हमारी रईयत के हक में भी फा
यदा मंद हो और सरकार अंगरेजी भी पसंद करे =

७६ मैंने कहा कि रयासतों का इन्तजाम बेशक दुरु
स्त होने के लायक है क्यों कि वह तरह तरह की उलट
ट पुलट हो जाने से बिगड़ गया है उसके कायदे अपने
ढंग पर नहीं रहे उसकी जड़ पोली हो गई है और मुख्तलि
फ मुल्कों के तरीके उसमें मिल गये हैं चुनांचे जब हम मौ
जूदा इन्तजाम को उस इन्तजाम से मिलाते हैं कि जो मु
सलमानों के आने से पहिले था और जिसका जिक्र तवा

रीख में है तो आसमान का तफावत पाते हैं जैसे मुसल
मानों का आना यहां की और सब बातों को नुकसान दे
नेवाला हुआ वैसे ही इन्तजाम के हक में भी खलल डा
लने वाला था चुनांचे तुरकों के जमाने में राजपूतों पर
बड़ी मुसीबत थी उनके शहर और मकान सब छीने ग
ये थे मुद्दतों की मुफलिसी मुसीबत और जंगलों और
पहाड़ों में रहने से उनके इल्म और उनकी लियाकतों
पर पानी फिर गया था यह बेइल्मी और बेतहज़ीबी जो
७७ आजकल राजपूतों में देखी जाती है उसी नामवाफ़िक़
जमाने की निशानी है नहीं तो अगले राजपूत लायक हो
ते थे चंद भाट की किताबों में अकसर उनकी इल्मी लि
याकत का बयान आया है उनमें से एक रावल समरसिं
घ की ही गुफ्तगू इन्तज़ाम और राज काज के बाबत से
सी है कि बड़े बड़े लायक अफसर उसकी तारीफ करते
हैं मगर क्या की जिये कि जब उनको मुसीबतों ने आकर
ऐसा घेरा कि जान बचाने के ही लाले पड़ गये थे तो वे इं
न्तजाम को क्यों कर कायम रख सक्ते थे आखिर को-
वह बिलकुल बिगड़ गया और उसी हालत में उसके अं
७८ दर कुछ कुछ बातें मुसलमानी इन्तजाम और कायदे
की भी दाखिल हो गई फिर जब मुगलों के वक्त में रा
जपूतों की कदर हुई और वे उनके दरबारों में रहने लगे
तो उन्होंने खुशामद से या हकीकत में बहतर समझ
कर अकसर बातों में उनकी देखादेखी अमल किया

खास करके मुल्की और अदालत के कामोंमें तो उन
के कदम पर कदम रक्खा सिपाहियों और सरदारों
के दरजे उनके तरीके पर मुकर्रर किये ओहदेदा
रोंके नाम फारसीमें बदल दिये दफ्तर की लिखाव
ट बादशाही कागजोंके नमूने पर रक्खी चुनांचे यह सब
बातें आज तक हर एक रयासत में कुछ न कुछ पाई जाती
हे मुगलोंके बाद मरहटोंने अपना जाल फैलाया उन
के बरताव और काररवाईने भी राजपूतोंके खानगी का
मोंमें थोड़ा बहुत असर किया फिर अंगरेजों का क़दम
७९ आया और वे उनके कायदों पर अमल करने लगे मगर
अंगरेजों की देखादेखी जितनी फ़ौजी कामोंमें हुई उ
तनी मुल्की कामोंमें नहीं हुई तो खयाल कीजिये कि
चार मुख्तलिफ अमलदारियोंके तरीके राजपूतोंके
८० मुल्की कामोंमें दाखिल हुये और वे बदलते बदलते ऐ
से बिगड़ गये कि अब किसी ढंग पर नहीं हैं ढंग का तो ना
म लोगोंकी जबान पर रह गया नहीं तो सब काररवाई
बेढंगी होती है मगर हम यह कभी नहीं कहेंगे कि यह स
ब खराबी सिर्फ ऊपर लिखी हुई उलट फेर से हुई है क्यों
८१ कि इसके सबब और भी हैं उनमें सबसे बड़ा यह है कि र
ईसोंको इन्तजाम की परवा नहीं वे बचपन ही से ऐशमें पड़
कर आलसी और निकम्मे हो जाते हैं उनकी तालीम उ
नके दरजेके लायक नहीं होती उनको इल्म बहुत कम हो
ता है और जब इल्म नहीं तो होसला कहां फिर अगर रया

सलका बोझ उठावें तो किस की ताकत से उठावें और क्यों
कर उसकी मुश्किलों को आसान करें अगर इल्म हो तो
सब कुछ हो सके इल्म की ताकत हकीकत में ऐसी ही हो
ती है और अकल जो आधी करामात कहलाती है इल्म
की एक चलती हुई कल है पस राजों को जरूर है कि इल्म
पढें और रयासत की हिकमत सीखें और उसमें इमति-
हान दें कि जिससे हर तरह की लियाकत पैदा कर के राज
करने के वास्ते तसल्ली के लायक हो जावें और इलका
मने फिर किसी का धोका न खावें॥

८२ दूसरे इसके बाद इन्तजाम की दुरुस्ती कामदार ओह
देदारों के लायक होने पर है यहां ओहदेदार भी अकसर
वैसे ही बेइल्म और नातजरुबेकार होते हैं और उनको
रईसों की तरफ से इल्म और लयाकत का इमतिहा
न होकर ओहदे दिये जाते हैं बल्कि अकसर तो ऐसा
होता है कि बडे बडे ओहदे नालायक लोगों को सिर्फ
महरबानी से मिल जाते हैं और जब तक उनके ऊपर
महरबानी की नजर रहती है चाहे वे कितने ही काम बिगा
डते रहें मोकूफ नहीं किये जाते बल्कि जैसे वे होते हैं वैसे
ही उनके मातहत कामों में भरती हो जाते हैं जिससे अज
ब गडबड झाला हो जाता है और कोई किसी की नहीं सु
नता जो जी में आता है वही करता है ऐसे ओछे बेलिया
कत और हीमायती ओहदेदारों से जैसे कुछ जुल्म और
सितम रईयत पर होते हैं और रयासत के काम बिगडते हैं

सोजा हिरहै और उनकी मिसालें हर एक रयासतमें मौ
जूदहैं और इस मौके पर उनका ज़िक्र करना शायद कि
सी साहिबको नागवार हो -

अक्सर रयासतों में यह भी दस्तूर है कि अहलकारों
को तनख़ाहमें जागीर दीजाती है और जागीर से वे ओहदे
उनके खानदानमें मोरूसी होजाते हैं और जागीरदारों
की औलादका अनपढ़ रहना और खराब होना एक ज़
रूरी बातहै क्योंकि जब वे देखतेहैं कि बापदादोंकी जा
गीर बहाल और ओहदा बदस्तूर कायमहै न पढ़ते लिखते
हैं और न किसी तरहकी लियाकत और फ़ज़ीलत हासिल
करतेहैं बल्कि आरामतलब होकर दो चार घड़ी दरबारमें
जा बैठतेहैं इस सुस्ती से उनके मातहत या और लोग उ
नके काममें और उनके बोहरे उनकी जागीरमें शरीक
होजातेहैं राजवाले कदीमी खानदानोंकी परवरिश
का ख़याल करके उनका तदारुक नहीं करते पस इ
स तरह होते होते राजका काम भी बिगड़ता रहता है औ
र वे खुद भी बिगड़ते बिगड़ते नादार होजाते हैं इस सू
रतमें अगर हर रयासतमें रईयतको पढ़ानेके लिये मु
स्तैदी के साथ तालीमका सरिश्ता जारी कियाजावे
और राजकी नौकरी लियाकतकी सनद हासिल कर
ने पर मिला करे और मोरूसी ओहदे वालोंको जबत
क कि मदरसे में पढ़कर अच्छा इल्म हासिल न करें काम न
मिले और बड़े बड़े ओहदे लियाकतमें सरकार गुज़ारी

देखकर दिये जावें और सिफारिश और महरबानी को
नालायक और बे हक़दार लोगों से उठा रक्खी जावे तो मु
मकिन है कि बद इन्तज़ामी की सब शिकायतें जाती रहें
और रईस व अहलकारों के लायक होने से सारी कार
रवाई असूल इन्साफ के ऊपर हुआ करे =

तीसरी वजे यह है कि अक्सर रयासतों खासकर के
जागीरदारों की सरकारों में राज का काम महाजनों को
सिर्फ इस ख्याल से दिया जाता है कि यह लोग ज़िया
दा अख्तियार पाने और दौलतमंद होजाने पर राज का
दावा नहीं करते बल्कि राज जब चाहे आसानी से उन
की कमाई को छीन सकता है जैसा कि इस कारवाई के
बाबत क़दीम से यहां यह मसल मशहूर चली आती
है कि "मुतसद्दी रईयत को लूटे राजा मुतसद्दी को लू
टे" इस किसम की कारवाई में रईयत पर सरासर जु
ल्म होता है क्यों कि बनियों का कायदा है कि वे हरत
रह से रुपये समेटते हैं और जब तक अपना मतलब
नहीं देख लेते किसी की बात नहीं सुनते पस उनकी
कारवाई कुल बे कायदा और बे कानून होती है सि
वाय इसके जिस राज में महाजन कामदार होते हैं
वहां अक्सर कंजूसपने और किफ़ायत का बाजार
गरम रहता है और ऐसे काम कम होते हैं कि जिनसे
रयासत की रौनक और नामवरी बढ़े =

४ चौथी वजह यह है कि अक्सर रयासतों मिसल

मारवाड़ वग़ैरामें तहसीलदारी कारकुनी और खजान
चीके ओहदे नीलाम होतेहैं जो बढकर नज़राना देताहै-
उसीको मिलजातेहैं वहां लियाक़त और इन्सानियत नहीं
देखीजाती रुपये को बडी चीज समझते हैं इस किसमके
ओहदेदार अपने इलाक़े में जातेही रईयत को लूटना शु
रू करदेते हैं क्योंकि अव्वलतो उनको यह तलबों से लगी
होती जितने रुपे राजमें दियेगयेहैं वसूल करलें दूसरे उ
नको यह यक़ीन नहीं होता कि देखिये कलभी हम रहते
हैं या नहीं और यह ख्याल उनका सही होताहै किसवा
सते कि बरस छः महीने के बादही रईयत की नालिश
होने या दूसरे शख्स के जियादा नज़राना देने पर वह
काम उनसे छिनाजाताहै और वे फिर अरसेतक हिसा
ब समझाने वग़ैरे की खेंचाखेंचमें फसे रहतेहैं=

पांचवें रिशवतने राजपूताने के इन्तजाम को खराब
कर रक्खाहै रियासतोंमें रिशवत कोई बड़ा जुर्म नहीं
है लाख पचास हज़ार रुपैके दावे यालूट और खून के
मुकद्दमे मेंतो खुद रईस लोगभी रिशवत लेतेहैं छोटे-
ओहदेदारों कीतो गिन्तीही क्याहै वेतो दो दो पैसे लेकर-
गरीबोंका काम बिगाड़डालतेहैं अकसर रयासतों मिस
ल जयपुर वग़ैरे मेंतो यह रिशवत ऐसी आमहो रहीहै-
कि कचहरियोंमें हरेक शख्स मुकद्दमेंवालोंसे अपना
हक़ ठहरालेताहै और हाकिमलोग दोचार ऐसे आद-
मियोंको लगारखतेहैं जो बाला२ मुद्दई और मुद्दायले

से मामलात ठैराया करते हैं दीये बगैर कोई काम नहीं होता और जिसके पास कुछ देने को नहीं होता वही मारा जाता है किस लिये कि जो बढ़ कर चांदी की जूती मारता है उसी का जूती बोलता है ॥

८७ जयपुर वगैरः में ओहदेदारों को रिशवत अकसर श-जन के वक्त दी जाती है जब वक्त लोगों को आने की सदर पर बानगी होती है मुकदमे वाले बयां करते हैं कि रोली या धूप की पुड़ियों में मुहरें रख कर ले जाते हैं जिनको आगे बढ़ कर इस तरह फर्जी के साथ कि यह चीज मैंने आपके पूजन के लिये दूर से मंगवाई है उनको हात में दे देते हैं जानने वाले उसी वक्त ताड़ जाते हैं और आपस में इशारे करते हैं मगर रिशवत देने वाले और लेने वाले का कुछ नहीं कर सकते कहते हैं कि जयपुर में पहिले रिशवत नहीं ली जाती थी बल्कि सिंघी झूथाराम तो रिशवत की सजा में हात कटवा डालता था मगर जब रावलजी का दौर हुआ रिशवत ने बड़ी तरक्की पाई और रायल कौन्सल के मुकर्रर होने से तो वह कमाल को पहुंच गई हरेक शख्स को १० आदमियों की जूठी गर्म करनी पड़ती है तब कहीं उसकी मिसल पढ़ी जाती है पस जहां यह हालत हो वहां सच्चाई कहां जो राज काज का एक बहुत बड़ा असल है ॥

८८ छोटे जो आज आला दरजे की रयासतें ख्याल की जाती हैं जैसे जयपुर उदयपुर और अलवर वगैरः उन के बंदोबस्त की अजब कैफियत है कि वहां दफतर तो फा

फ़ारसी है और हाकिम लोग पूरी सी हिंदी भी पढ़े हुये नहीं
हैं और जो दफ़तर वाले हैं वे अक्सर परदेसी हैं वे न तो अ
च्छी तरह से वहां की बोली को समझते हैं और न मुल्क
की रीत रिवाज को जानते हैं पस ऐसे लोगों से बंदोबस्त
बनता नहीं बल्कि और बिगड़ता है अब खयाल कीजिये
कि वे दफ़तर और ये दफ़तर वाले हाकिम और रईयत के बी
च में एक बड़ी भारी आड़ हो रही हैं क्योंकि रईयत का अस
ली इज़हार हाकिम तक नहीं पहुंचता रईयत अपनी जबा
न में कहती है दफतर वाले दूसरी जबान में लिखते हैं
और जब वह हाकिम को सुनाया जाता है तो उस वक्त न
हाकिम उसको अच्छी तरह समझ सक्ता है और न
इजहार देनेवाले को यह यकीन होता है कि मैंने यही कहा
था बल्कि बाजे वक्त तो यह होने लगता है कि
हाकिम कहता है कि क्या कहा और वह कहता है कि मैंने तो
यह नहीं कहा था दफतर वाले दोनों को ही मूरख ठहराते
हैं और मुकदमे के लौट जाने पर रईयत हाकिम पर नास
मझी का इल्ज़ाम लगाती है और हाकिम रईयत को
नासमझ ठहराता है यह कोई नहीं कहता कि अमले वा
ले यह बखेड़ा डालते हैं अगर ये लोग न हों और रईयत और
हाकिम ही परस्पर बातचीत कर लेवें या उनके इजहार उन
की जबान में लिखे जाया करें तो कुछ भी दिक्कत न हो मगर
वहां तो फ़ारसी उर्दू की धज्जियां उड़ती हैं बदखती और ग
लत नवीसी के जोहर दिखलाये जाते हैं ७ अकतूवर सन् १८९०

९७ कबूतर से आल पढा जाता है और आलू बुखारा उलू
बिचारा पढने में आता है सिदाकत और सदआफ़त एक
तरह फ़िकबादे और फ़ुकबादे एक सूरत से लिखा जा-
ता है अलावे बेचारे ठाकुर कि जिनके बाप और दादे ने भी
फ़ारसी नही पढी और उनके गुरु ने भी ऐसी तहरीर नही
लिखी वे इन बातों को क्या जानें या तो उनको अफ़स
रही करना नही चाहिये या उनका दफ़तर उनकी जबा
न में होना चाहिये कि उनकी कारखाई तो किसी ढंग पर
८९ हो यह कुछ अच्छी बात है कि वे तो बैठे हुये लोगों की सू
रत देख रहे हैं और सरिशतेदार है कि फ़र फ़र पढ रहा है औ
र जहां नहीं पढा जाता है सतर की सतर उडा जाता है मुद्दई
मुद्दायले सुन खडे हुये खैर मना रहे हैं कि कहीं ठाकुर सा
हब की जबान से कोई हुक्म मुकदमे का बिगाडने वाला
न निकल जावे और ठाकुर साहिब का यह हाल है कि गों
हीं सरिशतेदार चुप हुआ और उन्होंने हुक्म दिया कि
जो परम्परा से होती आई है वह करदो फिर तो जो सरि
शतेदार के खयाल में आया वह उसने हुक्म अखीर लि
ख दिया और ठाकुर साहिब ने मोहर करदी =
९० ठाकुर लखधीर सिंघ मुखतार रयासत अलवर मोह
र करने के वक्त सरिशतेदार से कहा करते थे कि हम तो
छीपे हैं तेरी आरसी फ़ारसी में नहीं समझते तू जान ते
९१ रा राम जाने ले यह मोहर मेरी भी छापदे इसी तरह से ठा
कुर समंदर करण नटवाडे वाले जो कोन्सल जयपुर के

मेम्बर हैं कहा करते हैं कि हमलोग रामजीदासजी (१)
के बैल हैं जिधर वे जोत देते हैं जुतजाते हैं जयपुर हीका
जिक्र है कि एक दफे सरिश्तेदार ने थाने दार की रपो
ट हाकिम को इन लफ्जों में सुनाई कि मुद्दा अलेको हर
चंद तलाश किया मगर वह नहीं मिला आपने फरमा
या अच्छा थानेदार को लिखदो कि वह हरचंद को ही प
कड़ के भजदे यह सुन कर अमले वालों ने बड़ी मुश कि
ल से उन को समझाया कि हरचंद किसी आदमी का
नाम नहीं है बल्कि फारसी बोलचाल का एक लफ्ज
है ऐसे ही एक ठाकुर साहब ने चुनाचे का लफ्ज सुनक
र कहा कि काई " अवार चना छै " . . . .
९३ महाराजा साहिब जयपुर को चाहिये कि यातो दफत
रों को हिंदी में बदलें या ऐसे लोगों को हाकिम करें जो
उर्दू फारसी जबान जानते हों और आधा तीतर आधा
बटेर हाने से तो सरासर खराबी है हमारी दानिस्त में तो
हिंदी का दफ्तर हो जाना वह तर है कि जिस से रईयत
भी सरिश्ते की तहरीर को अच्छी तरह से समझ सके म
गर वे पढे हाकिम और ओहदेदारों को फिर भी बदल देना
९४ चाहिये कि कारगुजारी और मामले की समझ बगैर इल्म
के नहीं आती डिग्गी के ठकुर की नकल मशहूर है कि कप
तान जान लडलू साहिब ने उन को जयपुर की मुसाह
बत देन के लिये बुलवाया था जब वे साहिब के पास आ
कर बैठे तो साहिब ने पूछा कि ठाकुर साहिब आपका मि

(१) रामजीदासजी महाराजे जयपुर के मीर मुनशी हैं—

ज़ाज अच्छा है उन्होंने जवाब दिया कि डिग्गी यहांसे १२ को
स है साहिबने फ़रमाया कि हम डिग्गी को नहीं पूछते तुम्हा
रा मिज़ाज पूछते हैं कहा मिजाज तो काकाजी मरजाद सिं
८५ घजी जानें साहिबने दिक होकर उनको उसी वक्त रुख
सत कर दिया — ऐसही साहिब अजंट मारवाड़ ने जोधपु
र के एक हाकिम से पूछा कि तुम्हारे परगने में फसल कै
सी है कहा मेरी जात पोकरणा ब्राह्मण है साहिबने यह स
मझा कि इसने फसल के मायने नहीं समझे मारवाड़ी बो
ली में कहा कि हम जात को नहीं पूछते साख को पूछते हैं क
हा मेरी साख कच्ची है तब साहिबने खेत की तरफ़ इशा
रा करके कहा कि हम इसकी बाबत पूछते हैं कहा यह जमी
न मोज़े मोगड़े की है वाह साहिबने तीन सवाल उर्दू और
मारवाड़ी जबान में किये और तीनों खाली गये =

यह राणा साहिब मोजूद हैं इनसे पूछिये कि इन्होंने क्यों
फ़ारसी दफ़्तर को हिन्दी में बदल डाला महाराणा साहि
बने कहा हां सन १८७२ ई० की बात है कि मैंने अहलकारों
के धोका देने से एक ऐसे कागज पर दस्तखत कर दिये थे कि
जिसमें लिखा तो कुछ था और मुझको सुनाया कुछ था -
जब मैं उस गलती से वाकिफ़ हुआ तो मैंने फ़ोरन फ़ारसी
की तहरीर मोकूफ़ करदी और हमारे बुजुर्गोंने अंगरेजों से
खत किताबत हिन्दी में इसी मतलब से जारी रक्खी है कि
उसमें कोई धोका न होजाय सो आजतक साहिब लोगों
की तरफ़ से हमारे नाम हिन्दी खरीते आते हैं और मैंने तु

नाहै कि अंगरेज़ी सरकारने भी हिन्दी दफ़तर अक्सर मुल्कोंमें कर दिये हैं और यह बड़े फ़ायदेकी बात है कि अदालतोंकी कारखाई रईयत की ज़बान में हुआ करे क्योंकि अदालतें सिर्फ़ रईयत की दादरसी के वास्ते होती हैं॥

मैंने कहा हां सरकारने हालमेंही सूबे विहारमें फ़ारसी की तहरीर मौक़ूफ़ करदी है और हर ज़िलेमें सरकारी दफ़तर उसी ज़िले की ज़बानमेंहैं जैसे बंगालेमें बंगाली बिहारमें कैथी उड़ीसेमें उड़िया गुजरातमें गुजराती दक्षिणमें मरहठी मंदरासमें तिलंगी ज़बानें बोली और लिखी जाती है राजपूतानेमें उर्दू और फ़ारसी का रिवाज इस सबबसे होगया कि शुरू अंगरेज़ी अमलदारीमें यह मुल्क दिल्लीकी रज़ीडंटीके शामिल था मगर अब राजपूतानेके सरकारी दफ़तरोंमें नागरी तहरीर जारी करदेने के वास्ते अक्सर रायें दीजाती हैं अगर करनेल डिक्सन साहब अबतक राजपूतानेके रज़ीडन्ट रहते तो कभीके हिन्दी दफ़तर होगये होते और अब करनेल पेली साहिब भी इसी फ़िकर में हैं अगर आप सब रईस लोग मिलकर इस अमरकी दरख़ास्त करें तो बहुत जल्दी इसका जारी होना हो सक्ता है यह बात सब राजाओंने मंजूर की और मैंने फिर अपना रेज़्यूबाबत इन्तज़ाम मौजूदे राजपूतानेके शुरू किया॥

सातवें बाज़ी रयासतोंमें अंगरेज़ों की देखादेखी क़ानून भी बनाये जाते हैं और उनके ऊपर बहुत कुछ

घमंड भी किया जाता है मगर यह भी वाहियात है क्योंकि पहिले तो ये कानून अंगरेजी कानूनों की इबारत को काट कूट कर बनाये हैं दूसरे हमने यह कभी नहीं सुना कि किसी रयासत में वकील या हाकिम या और किसी ओहदेदार को कानून का इमतिहान लेकर भरती करते हैं या ये लोग कानून के ऊपर चलते हैं और हर काम में उनकी मनशा के माफ़िक पूरी पूरी कारवाई होती है या रईयत को यह अखतियार है कि खिलाफ़ कानून काम करने की सूरत में वह हाकिमों से झगड सके पस यह कानून सिर्फ नाम ही लेलेने के हैं या ताक में धरे रहने के, बनवाने और छपवाने में नाहक वक्त और हजारों रुपया खरच कीया गया है कोटे और जयपुर के कानून मैंने भी देखे हैं और उन रयासतों में उनकी मनशा के मूजिब अमल दरामद होने की भी तहकीकात की है मगर यह ही साबित हुआ है कि यह कानून न रईयत के हक में कुछ फायदे मंद हैं और न वहां उनकी तामील होती है ॥

कानून ऐसा होना चाहिये कि जो राज और रईयत दोनों के हक में फायदामंद होवें और उनके बनाने में रईयत या उसके वकीलों को भी शामिल करना चाहिये और रईयत को आजादी देना चाहिये कि जिससे वह अपने और राज के हक के बाबत आज़ादी से गुफ्तगू कर सके यह क्या कि कई बंगालियों या हिन्दुस्तानियों को नौकर रख लिया और उन्होंने अपने अंगरेजी जान

ने के घमंड में जैसा चाहा वैसा एक मजमूआ अंगरेज़ी कानूनों से कतर बोंत करके बना लिया और उस क़ानून का नाम कानून रयासत रख दिया न उसको रईयत ने समझा और न राज ने जांचा न उसके बाबत देसी बड़े बड़े आदमियों की राय ली गई जारी करने में यह जलदी की कि झटपट उसको छपवा डाला एक एक नक़ल हर सरिश्ते में भेज दी कि उसके बमूजिब अमल करें मगर अमल कौन करता है वह भी एक फ़ज़ूल चीज़ की तरह सरिश्ते में पड़ा रहता है बक़ुतदु आतो कभी किसी मुकदमे में दफ़ा वगैरे क़ायम करने के वास्ते बनाकर देख लिया नहीं तो खैर ॥ .. ..

क़ानून का बयान तो हो चुका अब बंदोबस्त का हाल सुनिये कि तमाम रयासतों में ज़ियादातर खाम तहसील है यानी लाटा कूंता होता है जिसको रईस और रईयत दोनों कदीम से पसंद करते चले आये हैं धर्म शास्त्र में भी अकसर इसी किसम के बंदोबस्त का ज़िक्र है और इसमें शक नहीं कि अगर दयानत और ईमानदारी से तहसील की जावे तो बटाई से बहतर तहसील का और कोई क़ायदा राज और रईयत के हक़ में मुफीद नहीं है लेकिन लोगों ने बेईमानी से इस तरीक़े को ऐसा खराब कर दिया है कि रईयत के वास्ते निहायत दुख देने वाला हो गया है चुनांचे बूंदी के (१) सिवाय तमाम रयासतों में ज़मीदारों से

(१) बूंदी में जमीदारों की बड़ी रआयत की जाती है अवलतो बीघे पीछे उनको दो बिसवे की छूट जमीन में दी जाती है—दूसरे लटाई ...

आधा वल्कि आधे से भी कुछ जियादा हिस्सा लेते हैं ज़मीदार लोग पटवारियों के पेचदर पेच हिसाब किताब और तहसील करनेवालों और इजारदारों की सख़्ती और रकम सिवाय मलबा वगेरः से ऐसे लूटे जाते हैं कि नः उनके तनपर कपड़ा साबित रहता है और नः पेटको अच्छी तरह रोटी मिलती है जब देखो जब मरे मरे पुकारते हैं सिवाय इसके वेठ बेगार और राज का दंड उनपर ऐसा लगा होता है कि जिससे उनको न दिन चैन मिलता है और न रातको और जब राज के ऊपर कोई गेर मामूली खरच आपड़ता है तो वह ज़मीदारों और काश्तकारों से वसूल कर लिया जाता है और इसपर भी ज़मीदार और काश्तकार की विरसियत यानी बापोती जमीन के ऊपर कुछ नहीं है राज को अख़्तियार है चाहे ज़मीदार या काश्तकार को खेती करने दे और चाहे न करने दे जमीदार को विरासत का हक ज़रा नहीं पहुंचता =

१०१ बाज़ी बाज़ी रयासतों में मुखता बंदोबस्त भी हो चला है मगर जो कि अभी किसी जगह वह पार नहीं पड़ा है इस वास्ते उसकी निसबत कोई राय नहीं दी जा सक्ती मगर-

मीके साथ होती है किं तीसरे हिस्से से जियादा नहीं लेते– तीसरे महाराव राजा साहिब का आम हुक्म है कि अगर खेती कमज़ोर देखो तो सरकारी हिस्सा भी कम लो– चो थे सीवाय की रकम में बहुत कम ज़मीदारों से ली जाती हैं– छटे जमीदारों के बरबाद होजाने के खयाल से गांव को ठेके नहीं देते– नतीजा इन सब बातों का यह देखने में आता है कि बूंदी के ज़मीदार बहुत आसूदा है और अपने राज की शुकर गुज़ारी इन लफ़्ज़ों से करते हैं कि हम बहुत चैन में हैं और राव राजाजी साहिब हमारे दरद दुख को फौरन सुन लेते हैं और हमारी आसूदगी पर जयपुर ज़ाहोती, टोंक, और उदयपुर के जमीदारों को अफ़सोस है–

वह फ़र्क़ है कि अगर फ़र्यादी या इस्तगासी मुद्दत बं
दी नक़्ल हो जाय मगर फ़र्क़ यह है कि वह नेकनीयती
के साथ हो तो रईयत बेशक अमल में हो जावेगी और
जो बदनीयती के साथ हुआ तो फिर बेसिवाय तहसील
यानी लड़ाई बढ़ाई वह फ़र्क़ है कि अगर ज़मीदार खेती
करेगा तो राज को भी हासिल देगा नहीं तो ख़ैर उस
की खेती गई राज का हासिल गया और मुद्दत बंदो
बस्त में ऐसा नहीं हो सकता ॥

१०२ अब रईयत के इनसाफ़ का हाल सुनिये कि रईस
लोग तो ख़ुद बख़ुद मुद्दायले को रो बरू बुला कर उन
के मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात करते नहीं हैं अहलकारों को
अख़्तियार होता है कि वे अपने तौर पर उनका फ़ैसला
करदें अहलकारों ने अगर किसी पर ज़ुल्म किया और उ
सको बहुत ही बहुत पुकार हुई तो ख़ुद बदौलत ने भी उस
की मिसल मंगवाकर सुनली फिर जो कुछ उनके मूंह से नि
कला वह गोया तक़दीरी हुक्म है कि उसकी फिर कहीं अ
पील नहीं हो सकती अक्सर लोग भी कह देते हैं कि रईस
के पास जाओ ॥

१०३ जब से अंगरेज़ी अमलदारी हुई है अक्सर रियासतों
में दीवानी फ़ौजदारी की कचेहरियां जो क़ायम हो गई हैं
रइलाक़े जात में पुलिस और थानेदारी का इन्तज़ाम
ज़ारी हो गया है लेकिन कार्रवाईयां कहीं भी ठीक २
नहीं होतीं क्योंकि अहलकारों रईसों का इस तरफ़ कुछ

ध्यान नहीं होता दोयम रिशवत झूटे को सच्चा और सच्चे को
झूटा कर देती है कचेहरियों में इजहार नवीस से लेकर हा
किम तक और मुफसल ताल्लुकों में चपरासी से लेकर थाने
दार तक सब को रिशवत की चाट लगी होती है और सिवा
य इसके रयायत और सिफारिश का भी रयासतों में ब
हुत कुछ रिवाज है कि जिस मुकदमे में एक फरीक अमी
र हो तो फिर अमीर की सुनते हुये गरीब की कोई नहीं सुन
ता है गारतगरी रयासतों में अकसर हुआ करती है और
गारतगरों का या तो इस सबब से कि उनको उसी इला
के में कहीं हिमायत या पनाह मिल जाती है या फौजदा
री वालों की गफ़लत से कि वे वक्त पर गारतगरों का पी
छा नहीं करते हैं या राजभेदी मिलावट रखने से जैसा कि
बाजे लोगों का ख्याल है अकसर पता नहीं लगता औ
र अगर कोई मुजरिम पकड़ा भी जाता है तो उसको रुप
ये लेकर छोड़ देते हैं कैद की सजा नहीं देते कि जिससे दूस
१०५ रे मुजरिमों को खबर होकर इनसिदाद वारदात का सब
ब हो चोरी की वारदातों में अकसर ऐसा होता है कि कोत
वाल और थानेदार लोग किसी न किसी तदबीर से उसी श
ख्स को कि जिसके चोरी होजाती है मुलज़िम करार देकर
राजी नामा लिखवा लेते हैं और चोरों के पकड़ने और चो
री के माल को पैदा करने के वास्ते बहुत कम दौड़ धूप करते
हैं अगर रईस लोग खुद महनत करके मुकदमे वालों की
रगुजारी देखा करें और उनका अपील सुना करें और उज

ले कारखाई होजानेका जवाब पूछा करें तो हरएक अबतरी
पूरी पूरी बंद होजावे और मातहत हाकिम डरकर का-
म किया करें ॥

और यह जो आपने पूछा कि हमारी रयासतों का ऐसा
इन्तजाम जो हमारे और हमारी रईयत के वास्ते फ़ायदे
मंद हो क्योंकर होसकता है सो इसकी कई सूरतें हैं मगर मैं
खूब जानता हूं कि बाज़ी तो आपसे नहो सकेंगी और बा
ज़ी आपकी रईयत से और बाज़ी शायद आप लोग खुद न क
सकोगे उन्होंने कहा वे कौन कौन हैं मैंने कहा इन्तज़ाम दो
तरह का होता है एक शख्सी और एक जमहूरी शख्सी
यह है कि रईस छोटे और बड़े कामों को खुद दखलगा
करकरे और जमहूरी यह है कि रईयत इन्तज़ाम और ह
कूमत के लिये अपनी तरफ़से हाकिम और अफ़सर मुक़
र्रर करदे जैसा कि एमरीका और इंगलिस्थान में हो र
हा है मगर यहां दोनों सूरतों का होना मुश्किल है अग
रचे आप लोग क़दीम से शख्सी हकूमत रखते हैं मग
र बहुत कम उसको पूरी पूरी कर सकते हैं क्योंकि अब
तलो खुद आप साहिबों को कभी खबरदारी और हो
शयारी से काम करते नहीं देखा और दूसरे आपके ओह
देदार जियादा अखतियार पाजाने की वजह से कामों
में आपका हाथ रोक देते हैं

और जिस बात की निसबत मैंने शायद मंजूर न कर
नेका लफ़्ज़ लिखा है वह यह है कि आप सब साहिब मिल

कर एक दरख्वास्त इस मज़मून की सरकार में गुज़राने कि
सरकार बतौर कोरट आफ वारडस के जब तक कि हम
को मंज़ूर हो हमारी रयासतों का बंदोबस्त करे और यह
बात आपके खुदमुख्तारी के ख्यालों में ज़ाहिर में ब
हुत दूर मालूम होती है मगर जो गौर से देखो तो इसमें आ
प का कोई हरज नहीं है थोड़े ही दिनों में आप भी बरद्वा
न, काशी, और विजयानगर के महाराजाओं के मुआफ़िक
दौलतमंद हो जाओगे इस खियाल से कहीं यह मत
समझ लेना कि मिस्ल उनके फौजदारी और कलेक
टरी के अख्तियार आप के हाथ से भी जाते रहेंगे क्योंकि
आप खुदमुख्तार हो और वे नहीं है जैसा कि मैं पहिले
भी कह चुका हूं और सरकारी तौर पर पुलिटिकल इंत
ज़ाम होने में आपके इन अख्तियारों में कभी फ़रक
न आवेगा मैं इसकी मिसालें दे चुका हुं और इस बात
को आप खूब याद रखो कि अगर हिन्दुस्तानी रयासतों
१०७ में कई बरस और भी यही बे इन्तज़ामी रही तो एक न एक
दिन सरकार को इसमें हाथ डालना पड़ेगा किस लिये
कि राजकाज में आजकल आप साहिबों की तंदही न:
करने से इस किस्म की रायें बहुत सी दी जाती हैं कि सर
कार हिन्दुस्तानी रईसों से फ़ौजदारी के अख्तियार लेले =
१०८ उन्होंने कहा कि यह तो कवीरजी कह गये हैं तुम क्या क
होगे तुमसे पूछने का तो मतलब यह है कि कोई ऐसी सू
रत बयान करो कि जो इन सब से अलग हो मैंने कहा वह

यहहै कि अगर आप खुद अपनी रयासतोंके कामोंको पूरा
पूरा नहीं संभाल सकतेहो और तुम्हारे अहलकार भी ऐसे
१०९ ही हैं तो अब मुनासिब यहहै कि देसी या परदेसी शख्सों
मेंसे कई लायक और इल्म वाले आदमियोंको पसंद
११० करके सरकार अंगरेज़ीकी किफालत यानी दरम्यान
गीपर अपनी रयासतोंमें दीवान और मुसाहब मुकर्रर क
रदो और दो तीन बरसतक उनकी कारर वाईयोंको गौर
से देखते रहो अगर इस अरसेमें जैसा कि चाहिये वैसा इ
न्तज़ाम होजाये तो बहतर है नहीं तो उनको मौकूफ़ कर
के दूसरे शख्सोंको जो उनसे भी ज़ियादा अक्लमं
द और समझदार हों अपना काम सौंपो =

१११ रावराजा साहिब बूंदीने पूछा कि अंगरेज़ोंकी किफा
लतमें क्या हिकमत है मैंने अरज़ की कि अंगरेज़ोंकी कि
फालतसे आपका काम अच्छी तरहसे अंजाम पायगा
क्योंकि मुसाहब जब देखेगा कि मुझे रईस और अंग्रेज़
दोनोंको जवाब देना है तो वह बहुत खयाल करके का
म करेगा =

दूसरा फायदा यहहै कि वह आपका नुकसान न क
रसकेगा और गबन करके न भागेगा जैसा कि आपसा
हिबोंको परदेसी शख्सों की निसबत इस किस्मकी
शिकायत रहती है क्योंकि जब सरकारी किफालत या
नी जिम्मेवारी हुई तो वह जैसा आपका कसूरवार हु
आ वैसाही सरकारका हुआ जहां जायगा सरकार उस

को गिरफ़तार करके आपके पास भेजदेगी ॥

तीसरा फायदा यह है कि आप तो शायद उसके सालियाना जमाखरच का हिसाब समझने और सुस्ती और बेपरवाई से काम करने की पूछताछ करने में एक दफे दरगुजर भी कर जावेंगे और अजंट कभी न करेगा जिससे वह जोर में आने न पायगा ॥

चौथे असली गरज इन्तजाम और सरकार के खुश करने से है जब अजंट लोग भी यहां होंगे तो वह हरबस ऐसी कोशिश करेगा कि जिससे आपकी रयासतें भी आबाद और सरसबज होवें और सरकार भी खुश हो ॥

पांचवें इन्तज़ाममें अजंट की शामिल होने से आपकी सरकश रईयत और भाई बेटे भी किसी बातमें सरकशी और बदअहदी की जुरअत न कर सकेंगे हर काम सहूलियत से बआसानी के साथ होता चला जायगा ॥

११२ यह सुनकर राणा साहिब ने पूछा कि अच्छा इन्तज़ाम किस तौर पर होना चाहिये मैंने कहा कि इन्तज़ाम जिस तौर पर चाहो हो सकता है मगर जो कि अब तमाम हिन्दुस्तान में अमलदारी सरकार अंगरेज़ की है और आपको भी उनसे हर सूरत में ताल्लुक है इसलिये बेहतर यह है कि राजपूताने की रयासतों का इन्तज़ाम भी उन्हीं कायदों पर होना चाहिये जो कि अंगरेजों के मुल्क की इन्तजाम के कायदे हैं इसमें भी कई फायदे हैं एक तो आपका इन्तज़ाम सरकार के इन्तज़ाम से गैर न मालूम

होगा क्योंकि यह दस्तूर है कि जो वक्त का बादशाह हो
ता है वह अपने [illegible] की उन बातों को बहुत कम
पसंद करता है जो उसके इन्तजाम और [illegible] तावदे गैर
हों दूसरे जब कभी अजंट [illegible] जो उस [illegible] कुछ [illegible]
[illegible] कहा हुई आपकी दया से [illegible] आकर आपके [illegible]
[illegible] और कारखानों को देखना चाहेंगे तो उनकी
कारवाईयों को मिसल अपने बरताव के देखकर
बहुत जल्दी उनको [illegible] लेंगे और खुश होंगे -
१२६ अभी यह गुफ्तगू खतम न होने पाई थी कि एक रा
जासाहिब ने फरमाया कि अच्छा तुम हमारी रियास
त का इन्तजाम कर सकोगे मैंने कहा हां मगर इस श
र्त से कि जो मैं अभी अरज कर चुका हुं तब एक दूसरे र
ईस ने कहा कि क्यों साहिब कुल राजपूताने का भी ए
क साथ इन्तजाम कर सक्ते हो जो कि यह बात उन्हों ने
ताने से कही थी इस लिये मैं ने भी कह दिया कि हां
कर सकता हुं और अगर मयाद पूछो तो मयाद भी
बता सकता हुं - - - - - - -
१२७ राणाजी ने कहा शाबाश है इस हिम्मत पर मगर य
ह बहुत तअज्जुब किया जाता है कि एक आदमी इतनी बहु
त रियासतों का काम अंजाम दे सके कि जिनकी रीत र
सम और जबान एक दूसरे से अलग ही हो मैंने कहा
कि इन्तजाम के गुर और कायदे सिर्फ दस पांच ही हैं
कि जो कोई उनको ठीक ठीक तौर से काम में लाकर एक

छोटीसी रयासतका पूरा पूरा इन्तजाम करलेतो बडी से बडी सलतनतका बंदोबस्त भी कर सकेगा और जो कोई बडी सल्तनत का मालिक होकर असूल की पाबंदी न करेगा तो उससे एक छोटीसी जागीर भी न: संभल सकेगी राणाजी ने पूछा कि वे असूल यानी गुरबचा है मैंने कहा कि वे इन्तजाम में अरज करने के लायक हैं मगर मैं उनको आपकी खातिर से जलसे में बयान करता हूं - सुनिये =

इन्तजाम और इनसाफ के बडे बडे असूल गिनती के ही हैं जिनकी सारवाओं का शुमार नहीं और वे यह हैं =

१ जहां तक हो सके ऐसी कोशिश करे कि खरच आमदनी से हरगिज़ बढने न पावे =

२ रईयत से रिवतनी इतनी लेवे कि उसकी हकतलफी न होने पावे =

३ इनसाफ के वक्त इस बात को फ़रज समझे कि मुजरिम को किसी की रआयत या सिफारिश या किसी किसम के डर या लालच से न छोडे और बेकसूर को हरगिज़ सजा न दे =

४ किसी हकदार का हक मारा न: जाने देवे =

५ सिपाही की तनखा महीने की महीने चुका देवे कि जिससे वे लडाई के वक्त जान देने को उजर न कर सके और जब वह लडाई हो चुके तो उसकी जां फिशानियों की पूरी कदर करे कि जिससे आयंदा को उसका हौसला और भी बढे =

६ दोस्तको दुशमन से खैरखाह को बदखाह से महनती को आलसी सें ढूंढ निकाले

७ अमीरों और वजीरों को उमेद और डर की हाजत में लगा हुआ रखे कि जिससे वे अपनी हद से बाहर कदम न रख सकें =

८ दुशमन से मुकाबिला पड़े जब उसके वार को तो बचा- जावे और अपनी वार ऐसी जगह करे कि जहां कारगर हो जावे और इसमें दुनियां के बहुत से मामलों की काररवाई का तरीका शामिल है =

९ अपनी रयासत के छोटे और बड़े हालों और अपनी रईयत के कामों से ऐसा वाकिफ रहे कि हर आदमी उसको अपना साथी समझे =

१० फसादियों को फौरन गिरफ़तार करे नहीं तो ज़ियादा- ताकत पाकर जियादा कुव्वत चाहेंगे =

११ जो काम करे वह इनसाफ से और सब लोगों की भलाई से खाली नहीं =

१२ जब तक कि खूब तहकीक न करले किसी मुकदमे में कोई राय न देवे नहीं तो जुल्म हो जाने का अहतमाल है =

११५ मेरा दोस्त राजमल जो दूर खड़ा हुआ यह सब बातें सुन रहा था और जब कभी मेरे आंख उससे लड़ जाती थी तो मुसकुरा कर सिर हिला देता था करीब आकर राणाजी से अरज़ करने लगा कि हज़ूर रात बहुत थोड़ी रह गई राणाजी ने दूसरे राजाओं की तरफ देख कर फरमाया क्यों साहिबो अब क्या करना चाहिये और आपके खयाल में कोई

११६ बातभी आई जिसपर ह्सर कीयाजावे तब एक साहिब बो-
ले कि इनतो अपनी रयासत का इन्तजाम मुवरैंख राजपू
ताना (यह खिताब राजाओंने मुझको दिया था यानी राज
पूताने की तवारीख जानने वाले) को देते हैं बहुत दिनों
११७ से ऐसे शख्स की तलाश थी आज खुदही रस्ते चलते मि
लगया राणाजीने फरमाया हम यह चाहते हैं कि इनको
कुलही राजपूताने का मुन्तज़िम करार दिया जावे और
ये कुछ कुछ अरसे हर एक रयासत में रहकर वहां के का
मों की दुरुस्ती किया करें रावराजा साहिब बूंदी और म
हाराजा साहिब जयपुरने कहा कि यह तजवीज बहुत खू
ब है और जबतक अपनेही कौम मज़हब और मुल्क के आ
दमी मिलसकें ग़ैर मज़हब ग़ैर कौम और ग़ैर मुल्क के लो
गों को अपने कामोंमें दाखिल करना मुनासिब नहीं फिर
मुजसे पूछा कि क्यों तुमभी इस काम के वास्ते तईयार होस
क्ते हो मैंने कहा हां अगर साहिब रज़ीडंट राजपूताने की
किफालत होजावे तो मैं आप साहिबों की ख़िदमत गुज़ारी
को मुस्तैद हूं किशनगढ और पाटन के राजा साहिबने फ़र
माया कि जब तुम हमलोगों को खुदमुख्तार बयान क
रते हो तो फिर सरकार की किफ़ालत की कौन ज़रूरत है मैं
ने कहा इस किफालत से आपकी खुदमुख्तारी में कौ
नसा ख़लल पड़ता है अगर आपको यह शक हो कि यह
सरकार की किफालत इस लिये चाहता है कि हम इसको
मौक़ूफ न कर सकें या कोई कसूर हो जाय तो उसके तदा

इसमें रिआयत करनी चहे तो आप इस ख़याल को अपने
दिल से निकाल डालें क्योंकि जैसे अब आप मुझको नौ
कर रखने के ख़्वास्ता रहे हैं वैसे ही मोहकमे भी जब जी चाहै क
तल करते हैं यहा कसूर का तदारुक सो आप ख़ुद जानते हैं
गे कि अंगरेज़ी सरकार हिन्दुस्तानी रयासतों की बनि
स्बत मुजरिमों की ज़ादातर दुश्मन है बल्कि आप तो ब
ड़ी बड़ी ख़ताओं पर दरगुज़र भी कर सकते हो और वह-
छोटे छोटे कुसूरों पर नहीं करती उन्होंने कहा फिर तुमको
कि फ़ालतू से क्या फ़ायदा मैंने कहा फ़ायदा यह है कि स
रकार अंगरेज़ आज हमारे वतन और वक़्त की बादशाह
है और वक़्त के बादशाह के हुज़ूर में हर एक शख़्स इज़्ज़
त और आबरू पैदा किया चाहता है कि जिससे वह दुनि
या में मशहूर हो जावे पस मैं भी यही चाहता हूं कि आप
साहबों की ख़्वाहिशों को बहतरी और इन्तज़ाम की हाल
त में लाकर ख़ुद भी सरकार की महरबानी हासिल करूं
और आप साहिबों की भी नेकनामी और ख़ुश इन्तज़ा
मी का चर्चा हिन्दुस्तान से लंदन तक पहुंचा दूं आख़िर
१२८ सब राजाओं ने इस पर इत्तिफ़ाक़ किया कि इस बारे में
साहिब रज़ीडंट राजपूताना की सलाह लेवें और उसी
वक़्त हुक्म भेजकर कई मोतबर आदमियों को बुलाया औ
र मेरे साथ करके हक़ीक़त हाल से इत्तिलाह दी और साहब
रज़ीडंट बहादुर के पास रवाने फ़रमाया हमारे सामने होते
ही वह दरबार बरख़ास्त हो गया और राजा लोग किन निक

ने से पहिले पहिले ल्यारों की छांव में अपने अपने दुल्फ़ों को
रवाने होगये मैं उनकी सवारी और रवानगी की धूमधा
११९ मसे चौंक पड़ा और उसी नींद की हालत में करवट बदली
और यह अजीब तमाशा कुछ देर के लिये मेरी आंखों से
गायब होगया: फ़क़त:

१२० ## ख़ातमा

इस किताब के बनाने वाले का मतलब अपने नाम औ
र लियाक़त को मशहूर करने का नहीं है और इसी सबब
से उसने अपना नाम नहीं लिखा वह चाहता है कि जो ख़
राबियां राजपूताने के इन्तज़ाम में पड़ी हुई हैं वे दूर हों और
उनकी जगह हर एक रयासत में दुरुस्ती बहतरी और भला
ई फैले यह किताब राजपूताने के इन्तज़ाम के बाबत है इस
में अकसर पुलिटिकल मामलों के ऊपर बहस की गई
है रईसों के ख़यालात और उनके चाल चलन के हालात
मौके मौके से बयान किये गये हैं वे तवारीख़ और इन्तज़ा
म मुल्क के बाबत में बहुत सी बातों के वास्ते आईना यानी
दरपन हैं इसके बनाने वाले की कोई अपनी ग़रज़ नहीं
है बल्कि तमाम हालात जैसे उसको मालूम थे वैसे नेक
नियती से लिखे हैं इस पर भी जो कोई बात ग़लत लिखी
गई हो उसके बाबत मुनसिफ़ मिज़ाज शख़्सों से इसला
ह और दुरुस्ती की उम्मेद है मगर ऐसे लोगों का ग़लती प
कड़ना और नुकताचीनी करना कि जो रयासतों की नई
और पुरानी अंदरूनी हालत और सरकारी पुलिटिकल

जिस्से नारी से अच्छी तरह वाकिफ नहीं इस किताब के हक़ में कोई असर पैदा नहीं कर सक्ती क्योंकि इसकी तमाम तहरीरें की बुनियाद तवारीखी हालात और पुलिटिकल मामलात के ऊपर रखी गई है - ... ...

नोट

२९ यह किताब सन् १८७४ मुताबिक सम्वत १९३१ में राजपूताने की मोजूदा हालत पर बनाई गई थी जिसमें अब तक कि १८ बरस का अरसा होता है बहुत कुछ बहतरी और दुरुस्ती हो चुकी है और उम्मेद है कि इसी तरह आयंदा भी राजपूताना रफता २ बहुत कुछ तरक्की करेगा और जो बातें कि उस दिन की इस किताब में लिखी हुई हैं वे आखिर को १ दिन पुरानी बातों के नमूने के तौर पर रह जावेंगी और उस वक्त पिछली हालत का मुकाबिला करने के वास्ते बहुत काम आवेंगी - ... ...

تقریظ منظوم

خواب راجستان مصنفہ منشی دیبی پرشاد صاحب بالقابہ اور تاریخ اوس کی ناگری مین چھپنے کی
طبع زاد شاعر شیرین مقال ناظم نازک خیال مولوی سید محمد صاحب اسعد تخلص خلف الرشید
جناب مولانا احمد علی صاحب ساکن شہر ٹونک

منشی فاضل و ذی شعور و تاریخ دان و ادیب
قوم کو اون سے شرف ملک کو اون سے عزت
خوب ہے مذاق نگاری مین جو ہاتھ ہے انہین
بالخصوص خواب کے لکھنے مین کیا طرفہ کمال
کی ہے ہنود کیسان و رعایا کے لیے
رہین بہت اون کی تصانیف و تالیف مفید
ناگری مین چھپی اب فائدہ ہوگا زاید
ہمتا و رقیمی تاریخین ہین اس طرح کی یہ
شعر فہم کہ اسعد شیدائی ہنر کا ہو قبول

دیبی پرشاد جی وہ ہین کہ جن کی تحریر
بخت نے اون کے کیا ملک ہند کو تسخیر
ملک ناول رقمی اون کی ہے گویا جاگیر
راجپوتانہ کے احوال کی کھینچی تصویر
ذکر صاحب سے خردمند نے اچھی تدبیر
مگر اون سب مین یہ تحریر ہے بے مثل و نظیر
پڑھ سکے کم علم ہی ہو جائین گے سب بہرہ پذیر
تاریخ تقریر یہ ہے خواب صداقت تعبیر
سنہ ۱۳۲۳ھ ۔ ۱۹۰۵ء
ہنر و دولت و اقبال رہین دامنگیر

इस किताब के ऊपर जो राय बलरामपुर और तुलसीपुर वगैरा मुल्क अवध के महाराजा श्री सरदिग बिजय सिंघ साहब बहादुर के सी ऐस आई ने लिखकर इनायत फरमाई थी उसका तरजुमा उरदू से हिन्दी में यहां किताब के शुरू में लिखा जाता है और वह यह है.

यह किताब हाल राजस्थान मेरे देखने में आई इस के बनाने वाले को जो वाक़फ़ियत राजपूताने की रियासतों के हालात और रईसों के चाल चलन से है और जो लियाक़त उसने इस किताब का मज़मून पैदा करने में दिखलाई है वह तारीफ़ के लायक़ है कि अपने को लाईबल से बचाकर सपने के परदे में जो अच्छा बुरा हाल था उनको साफ़ तौर पर जतला दिया है और इस से उनकी नेक नियती और साफ़ दिली ज़ाहिर है क्यों कि सच्चा दोस्त और खैरख्वाह वही है कि जो सच्ची बात मुंह पर कह देवे और झूठी वाह वाह करके खराब न करे अगर कोई खराबी उन खराबियों में से कि जिन का सपना इस किताब बनाने वाले को आया है किसी रियासत में किसी वजह से मौजूद हो और उस रियासत के रईस को उसकी खबर न हो तो अब यक़ीन है कि वे खुद ही खबरदार होकर उसको दूर करेंगे.

फिर किताब बनाने वाले के बयानों से साबित होता है कि वे कानून जानने वाले और काम किये हुवे-

नी हैं उन्होंने जो कुछ इस किताब में लिखा है वह अगर खै रख्वाही से लिखा है तो वे अपनी इस्सने कनियती की तारीफ़ के हक़दार हैं और दड़े बड़े रईस खुद उनकी क़दर फ़र्मावेंगे॥

यह किताब इस तौर पर इस वास्ते आई है कि इसके ऊपर राय लिखी जावे सो हमको इसक़दर इत्तिफ़ाक़ राय है कि कुल रईसों को चाहे वे राजपूताने के हों चाहे दूसरे मुल्कों के, जरूर है कि अपनी ज़ात से खास सतौर के कामों की संभालरक्खें और कामदारों के काम देखते रहें कि यह परमेश्वर की तरफ़ से उनके ऊपर फ़र्ज़ है अदालत के वास्ते १ खास वक़्त मुकर्रर करलेवें कि उस वक़्त खुद नेकतर रईयत का इन्साफ़ किया करें और कारंदों की कारगुज़ारी और दयानतदारी का इम्तिहान पहिले ले लिया करें और उनको वे काम दिया करें कि जो उनकी लियाकत के मुआफ़िक हों और फिर उनके हालात को ज़ाहिर और पोशीदा तहक़ीक़ करते रहें जो ऐसा करेंगे और आप अपने कामों को देखते रहेंगे तो तमाम खोट और कसर आपसे आप निकलती जावेगी और अहलकार भी होशयार रहेंगे मालिक की गफ़लत से बाज़े अहलकारों को रईयत के ऊपर जुल्म और ज़ादती करने का मौक़ा मिलजाता है और जब मालिक खुद सुनेगा तो फिर कोई किसी पर जुल्म नहीं कर सकता और न कोई बदइन्तज़ामी और बेबन्दोबस्ती उनकी रयासतों में हो सक्ती है दाना लोगों ने कहा है कि नौकरों को ऐसी हालत में रक्खें कि निडर न होजावें और काम में

गफ़लत न करै और हकबाजी करनेसे मूंह न मोडै:-

दूसरे रिशवत वगैरे को अच्छी तरहसे मौकूफ़ करदेवै-
कि जिन कामो मौकूफ़ करदेना सबके नजदीक जायज़ है
और यह सब काम रयासत के सियासत से दूसरा फ़ायद
तेहैं जो अपने ऊपर सियासत (शासन) न करके गफ़ल
त और आरामतलबी में रईयत और नोकरों के हालसे
खबरदार न रहैगा वह दूसरों पर क्या सियासत करेगा:-

अब रही यह बात कि इनसाफ़ और अदालत के वास्ते
कोनसा तरीका और कानून पसंद किया जावे सो देखना
चाहिये कि इन्तजाम की ३ सूरतें हैं:-

१ कानून के मुताबिक चाहे अं २ रिवाज मुल्क के मुवाफ़िक
गरेजी हो चाहे शास्त्र वगैरा ३ रिवाज कौम के बमूजिब

रिवाज मुल्क और कौम का लिहाज़ अंगरेजी कानूनमे
भी रखा गया है सो अपने मुल्क और अपनी कौम के रिवा
जकी तरफ़ जियादा नज़र रखनी चाहिये और अपनी रई
यत के मुकदमे उसी के ख्यालात के पंच दुतरफ़ा रज़ाम
दीसे लगाकर पंचायत से फैसल करा दिये जाया करें इस
में रईयत भी राज़ी रहैगी और बादशाह बकाभी खुश हो
गा और काम भी साफ़ नज़र आवेगा और जो झगड़े मज़
हबी मसलों के ऊपर हों तो उनके फैसले के वास्ते शरे औ
र शास्त्र काफ़ी हैं अंगरेजी कानून भी उन्हीं की रयायत रख
ते हैं गरज़ जो मुकद्दमा जिस कौम का हो उसका फैसला उ
सी के शास्त्र और रीवाज की रूसे कराया जावै:-

ती से मालका इन्तज़ाम सो इसके वास्ते सरकार अं
गरेज़ी के पुख्ता बंदोबस्त से बहतर और कोई कायदा दि
खाई नहीं देता है सो यह अपनी रयासतों में भी हो सक
ता है और जो लोग कि इस काम को अच्छी तरह से जान
ते हैं वे हर जगह मिल सक्ते हैं मगर रईयत के ऊपर नरमी
की नज़र रहै और रईयत से हासिल लेने की तेदाद भी
शास्त्र में लिखी है और जुर्मों की सज़ा भी दर्ज है फिर रा
जनीति की किताबों में भी कुछ बाकी नहीं छोड़ा है उन
को देखना और देख कर वाकिफ होना ज़रूर है और दि
ल ठिकाने रख कर अपने मिजाज की संभाल रखना औ
र ठीक वक्त पर सब कामों की देख भाल करना मुनासि
ब है बेकसूर की बड़ी सज़ा और अच्छे काम का पूरा इनाम
देना भी लाज़िम है अगर कहीं कुछ शिकायत पैदा हो स
कती है तो इन्हीं बातों के छोड़ने से होती है इस वास्ते अप
ना चौकस रहना ज़रूर है और बस फ़कत :

किताबकी फहरिस्तया सूची

नम्बर	मजमून	सफ़ा
४९	नवाब साहिब टोंकने अंगरेजी रुपियों को नाखुदा मलने की कबाइतों के सहूलमें अपने कापड़े वहीं से उठा रजाने का हुक्म दिया	५६
५०	जयपुर के महाराजा साहिबने इस बात को कि जे अंगरेजी कायदों को पसंद करके खेलड़ी के राजा को खिताब दिया कि जिसकी हुकूमत जागीरी की तारीफ करते हुए जा सम साहिबने तोड़ी	"
५१	बूंदी के राव राजा साहिबने अंगरेजों की राह पर चलने की राय से इलिपञ फनकार के अर्थशास्त्र के असूल पर इन्तजाम का अमल करने की रवाहिश जाहिर की —	५७
५२	पालनपुर के राज साहिब ने रईस के लायक जिम रहने पर सरकारी निगरानी का हवाला देकर उस इन्तजाम के बाकी न रहने के बाबत अहलकारी	५८
५३	सिरोही के रावजी ने राजपूताना साहिब की ताईद करके अंगरेजी कायदों और कानूनों के नमूनों पर इन्तजाम जारी करने की राय दी —	५९
५४	किशनगढ़ के महाराजा साहिबने मौजूदा इन्तजाम को ही अच्छा बताया —	"
५५	एक रईस ने कर्नल ब्रुक साहिब की स्पीच का हवाला देकर यह बयान न किया कि अंगरेज हिंदुस्तानियों की लियाकतों को हरगिज पसंद नहीं करते —	"

नम्बर	मज़मून	सफ़ा	नम्बर	मज़मून	सफ़ा
४६	एक और रईसने कहा	४०		की तरफ़से जवाबदेके	
	कि हमको अनवारदा			रजमो खातर करने के	
	लोंगोंने [illegible]			लिये बूंदी के रावराजा	
	रक्खा है और अंगरेज			से कहा कि अब एक सा	
	हमारे कामोंमें क्यों दख			लिसकी ज़रूरत है–	
	ल देते हैं उनके खुशाम		४९	उस वक्त हाडा राजपू	४३
	दी तवारीख लिखनेवा			तने सपना देखने वा-	
	ले हुमायूं नामह मह र			ले का जिक्र किया और	
	तो बेसबबके धारहे ते			राणाजीने उसको बुल	
	नेका इलजाम लगाते			वाया उसने राजपूतस	
	हैं और अंगरेजोंको न			रदारोंके कायम मिज़ा	
	हीं समझाते कि अहद			ज न होनेका हवाला दे	
	नामोंके खिलाफ रय्या			कर जानेमें ढील की–	
	सोंके मामलोंमें क्यों		५०	वह दुबारा बुलवाया	४५
	दखल देते हैं–			गया और उसको बूट	
४७	यह बात अकसर रईसों	४१		उतारनेकी तकलीफ़ दीगई–	
	को पसंद आई और अन्ज		५१	बूंदीके रावराजा साहि	४६
	जिसमें तरह तरह की			बने सपना देखने वा	
	तकरीरें होने लगीं–			लेको अपनी सलाहमें	
४८	राणाजीने उन लोगों	॥		शामिल करनेसे पहिले	
	को सरकार अंगरेजी			सेउससे अपनी रीतर	

नम्बर	मज़मून	सफ़ा	नम्बर	मज़मून	सफ़ा
	सलऔरअंगरेज़ीका			अमलदारीऔरअसूल	
	नूनकीबाबतकैफियतका			इन्तज़ामऔरकानूनऔ	
	इम्तिहानलिया-			रअंगरेज़ीहाकिमोंकीका	
५२	सपनादेखनेवालेनेअ	४९		नूनीपाबंदीकाकुछब	
	हलनहएकराजाकेखा			यानकियाजिसमेंअक-	
	नदानकीतवारीखब			सररईसोंनेताज़ीरातहि	
	यानकीउनमेंसेनवा			दकीइजारनेहैसियतब	
	बमोहम्मदअलीखांके			ख्शीकेदफोंमेंबहुतगौर	
	शह्रसेतारेजानेकेहा			कीऔरउसकीवजेसप	
	लातकोतफसीलवार			नादेखनेवालेकेख्याल	
	औरकरीनकयासहो			मेंयहआईकिशायदअ	
	नेकेसबबसेसदरई			खबारवालोंपरनालि	
	सोंनेबहुतपसंदकिया-			शकरनेकेलियेगौरक	
५३	रईसोंकीलियाकतऔ	५१		ररहेहैं-	
	रहैसियतकाबयान-		५६	बादइसकेसपनादेख	५७
५४	फिरसपनादेखनेवाले	५२		नेवालेनेशरेमोहम्मदी	
	नेबूंदीकेराजासाहिब			केअसूलबयानकिये	
	कीफरमाइशसेधर्मशा			औरराजासाहिबबूंदी	
	स्त्रमेंइम्तिहानदिया-			नेउसलजानोंके	
५५	फिरसलतनतअंगरेजी	″		लमतमजमूकयानीबेदा	
	केबंदोबस्तऔरउसकी			लकोफरमाइशकरकेसु	
				ना:	